संपादक :
ज्ञानेंद्र प्रसाद जैन

प्रकाशक :
सेवाग्राम साप्ताहिक
१, दरियागंज
दिल्ली-६

प्रथम संस्करण : १९६६
मूल्य : ३ रुपये

मुद्रक :
सेवाग्राम प्रेस
२ दरियागंज
दिल्ली-६

जब देश रक्षा हित कभी
मांगे भारत भू प्राण भी
तब नौजवानों की कतारों का
सिलसिला न टूटेगा कभी

वहादुर सिगनलमैन
गिरवर सिह कौशिक

समर्पण

माँ भारत सदा ऐसे वीर पुत्रों को जन्म देती रही है जिन्हें अपने प्राणोंसे पहले मातृभूमि की स्वतन्त्रता की वाजी जीतने की चिन्ता रही।

पाकिस्तान ने सितम्बर १९६५ में हमारी आजादी को चुनौती दी और भारतीय रणशूरों को ललकारा। लेकिन भारतीय वीर-पुत्रों ने माँ पर आँच न आने दी और वे उसकी आजादी की लौ जलाने के लिये अपने जीवन की लौ बुझा गये। उन्हीं जाने-अनजाने भारत प्रहरियों की श्राद्ध-श्रद्धांजलि का पुनीत पर्व निभाने के उद्देश्य से यह **'जलती मशाल'** जवानों के प्रतीक रूप सिगनलमैन गिरवर सिह को सस्नेह समर्पित है जिन्होंने स्यालकोट क्षेत्र में शत्रु से डटकर लोहा लिया और उसके छक्के छुड़ा दिए और आज भी माँ की आन-वान कायम रखने के लिए सीमा पर मुस्तैदी से डटे है।

संपादकीय

'जलती मशाल' सेवाग्राम प्रकाशन का अनुपम प्रयास है।

पुस्तक में भारतीय सेना के जवानों और जागरूक नाग-रिकों के बहादुर कारनामों और हमले के समय एक सूत्र में बंध कर देश की आन-बान पर मर मिटने की इच्छा की झांकी मिलती है जो पाठक के हृदय पर अमिट छाप बना देगी। पुस्तक को पढ़ते-पढ़ते कहीं आंखों में आंसू छलक आते हैं, कहीं शरीर में जोश की लहर दौड़ जाती है। देश के अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने में 'जलती मशाल' अपना महत्व रखती है। उदीयमान युवक लेखकों का यह प्रयास अभिनंदनीय है।

संपादक

१ दरियागंज, दिल्ली-६
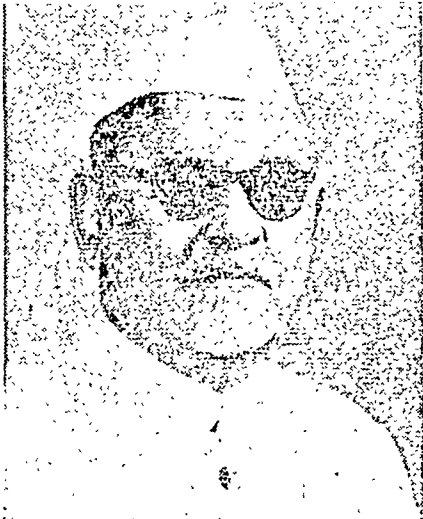
उपराष्ट्रपति, भारत
नई देहली
VICE-PRESIDENT
INDIA
NEW DELHI
मई १६, १९६६

श्री जी० पी० जैन जी,

आपका पत्र दिनांक ३ मई १९६६ का मिला और साथ ही "जलती मशाल" नाम की एक पुस्तक भी, दोनों के लिए धन्यवाद।

जलती मशाल देश के उन वीर सैनिकों की गाथा है जो देश की आजादी, संस्कृति और उसकी आन बान कायम रखने के लिए सीमाओं पर मुस्तैदी से डटे हैं। पाकिस्तानी हमले के समय हमारे फौजी जवानों ने जिस दिलेरी और बहादुरी के कारनामे दिखाए उनकी सजीव झांकी इस पुस्तक में मिलती है। पुस्तक में जिस अनूठे ढंग से शहीदों को श्रद्धांजलि पेश की गई है उससे शहीदों के परिवार वालों को सान्त्वना मिलेगी। शहीद की मौत का दुःख सिर्फ उनके परिवार वालों को नहीं, बल्कि समूचा राष्ट्र उनके गम में भागीदार है। यह प्रेरणा इस पुस्तक से मिलती है।

"सेवा ग्राम" ने ऐसी पुस्तक छापकर राष्ट्र रक्षा की जंजीर में एक नई कड़ी जोड़ी है और देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाया है। इस तरह के प्रकाशनों की देश में निहायत जरूरत है। आज जबकि सीमाओं पर फिर शत्रु सेनाएं घिरी आ रही हैं, यह पुस्तक जवानों को प्रेरणा देगी और नागरिकों में जवानों के प्रति सद्भावना तथा सम्मान की ज्योत जगायेगी। लेखकों और प्रकाशक को मेरी बधाई।

आपका

ज़ाकिर हुसैन

(ज़ाकिर हुसैन)

श्री जी० पी० जैन,
सेवा ग्राम, ग्रामीण साप्ताहिक,
१, दरियागंज, दिल्ली-६

आभार

साहित्य साधना मंदिर का पहला पुष्प 'जलती मशाल' आपके हाथों में है। भारत मां के जिन वीर पुत्रों ने राष्ट्र की गौरव-गरिमा की रक्षा करने के निमित्त स्वतंत्रता की वेदी पर हंसते-हंसते अपने शीश को न्योछावर कर दिया उन ज्ञात और अज्ञात भरत-पुत्रों को साहित्य साधना मंदिर का शत्-शत् प्रणाम। 'जलती मशाल' में भारतीय रणबांकुरों और सीमा प्रहरियों के कौशल का बखान किया गया है जिससे देश ने वीरता के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया है।

जिन शूरवीरों ने वीरगति प्राप्त की या जो देश की आन-बान के लिए मुस्तैदी से लड़े उन सबकी स्तुति के लिए लेखकों ने 'जलती मशाल' लिखी है। पुस्तक के संकलन में जिन व्यक्तियों ने सुझावात्मक या रचनात्मक सहयोग दिया उनके प्रति साहित्य साधना मंदिर कृतज्ञ है, विशेषकर उत्तर प्रदेश के उन जिलाधीशों, सूचना अधिकारियों, जिला सैनिक बोर्ड के सचिवों व नागरिक सुरक्षा परिषद के पदाधिकारियों का जिन्होंने वांछनीय सूचना समय पर भेज कर संस्था का मान रखा और उसका उत्साह बढ़ाया।

साहित्य साधना मंदिर श्री ज्ञानेंद्र प्रसाद जैन, संपादक, 'सेवाग्राम', दिल्ली के प्रति भी कम कृतज्ञ नहीं है जिन्होंने पुस्तक के प्रकाशन और संपादन का गुरुतर भार अपने कंधों पर लिया और लेखकों के प्रथम प्रयास को अपनी संपादकीय कलम से सजाया-संवारा।

पुस्तक पर हम पाठकों के सुझावों का आदर करेंगे और अगले संस्करण में उनका समावेश करने का प्रयत्न करेंगे।

कृष्ण कुमार कौशिक (अध्यक्ष)
मुनीश्वर प्रसाद सक्सेना (मंत्री)
साहित्य साधना मंदिर
१५८२/६, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

अनुक्रम

पाक हमले की पृष्ठभूमि

आग उगलती तोपों की गड़गड़ाहट पर युद्ध-विराम की लगाम

ताशकंद समझौता या शान्ति-यज्ञ ?

भारत-पाक की लड़ाई, ईमान और इन्साफ की हैवानियत के ठेकेदारों के खिलाफ विश्व-युद्ध के रंग में बदलती जा रही थी। पाकिस्तान ने जम्मू-काश्मीर में सशस्त्र सैनिक घुसपैठियों के रूप में इसलिए भेजे कि वे वहाँ अराजकता फैलाएं, लूटपाट करें और मुसलमान जनता को भारत के खिलाफ तैयार करें। राज्य में गड़बड़ हो और यदि पाकिस्तान मुस्लिम जनता का दिल जीत कर काश्मीर को हड़पने का १९४७ जैसा हमला फिर करे तो जनता पाकिस्तान की फौजों का साथ दे और काश्मीर पाकिस्तान के कब्जे में चला जाए।

घुसपैठियों का जम्मू-काश्मीर में प्रवेश

५ अगस्त १९६५ को हाजी पीर दर्रे और हुसैनीवाला से पाक घुसपैठियों की आमद जम्मू-काश्मीर में बढ़ती गई। भारत ने पाकिस्तान सरकार को विरोध-पत्र भेजा लेकिन उसने कहा कि हमारा इनसे कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके बाद भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ को इन घटनाओं की जानकारी दी। संयुक्त राष्ट्र संघ के निरीक्षक दल के नेता जनरल निम्मो ने अपनी रिपोर्ट में लिखा—"ये घुसपैठिये पाकिस्तान के भेजे हुए सशस्त्र सैनिक हैं जो जम्मू-काश्मीर में अवैध रूप से प्रवेश कर राज्य में शान्ति-व्यवस्था भंग करने के उद्देश्य से आए हैं।"

रिपोर्ट दबा दी गई

जनरल निम्मो की रिपोर्ट सुरक्षा परिषद में नहीं रखी गई। इंगलैंड और अमेरिका की हिमायत के कारण और उनके दवाब में आकर सेक्रेटरी-जनरल ऊ थांत असलियत को दुनिया से छिपाने के लिए मजबूर हो गए। हमने सुरक्षा परिषद को फिर लिखा कि पाक की हरकतें योजनाबद्ध हमले की निशानी हैं लिहाजा उसे रोका जाए, वरना भारत अपने को अधिक देर संयम में न रख सकेगा। इसका भी कोई नतीजा न निकला, वल्कि हमें ही शान्ति व संयम से काम लेने की सलाह दी गई।

बांध टूट गया

घुसपैठिये छापामार युद्ध और नागरिक जन-जीवन को तोड़-फोड़ कर देने की पूरी ट्रेनिंग लिए हुए थे। इनमें पाक सेना के सिपाहियों से बड़े अफसर तक शामिल थे और आधुनिक छोटे-वड़े हथियारों से लैस थे। उन्हें सड़कें, पुल, रेल की लाइनें, सरकारी इमारतें नष्ट करने का आदेश मिला था और मुस्लिम जनता को लुभाने के लिए रेडियो, ट्रांजिस्टर, सिगरेट लाइटर व अन्य छोटी-मोटी चीजें बांटने को दी गई थीं। जो लोग इनकी वात न मानें उनके गांव और कस्वों को जला देने की सलाह इन्हें दी गई थी।

घुसपैठिये काश्मीर क्षेत्र में घुसकर बस्ती के बाहर योजना वना रहे थे कि पशु चराते दीन मुहम्मद चरवाहे से इन्होंने कुछ वातों की जानकारी चाही और उसे इनाम का लालच दिया। देशभक्त युवक को शक हुआ और उसने पैदल भागकर सीमान्त सुरक्षा पुलिस चौकी को खबर दी। पुलिस दल घुसपैठियों के मुकाविले पर आ गया, पर संख्या में अधिक और खतरनाक हथियारों से लैस घुसपैठियों को काबू करने के लिए सैनिक सहायता की जरूरत पड़ी। इस तरह भारत सरकार ने घुसपैठियों के सफाये के लिए सेना को आदेश दिया कि वह जो कार्रवाई ठीक समझे करे।

२४ और २६ अगस्त के बीच हमने घुसपैठियों का पूरी तरह सफाया करने और उनका सदा के लिए रास्ता बन्द कर देने की गर्ज से टिथवाल और कारगिल चौकी के रास्ते अन्तर्राष्ट्रीय सीमा में घुसकर तीन मील तक उन्हें खदेड़ा और उनके मुख्य प्रवेश द्वार हाजी पीर दर्रे पर चौकीदारी करने की योजना बनाई। हजारों घुसपैठिये बंदी बना लिए गए और बहुतों को हमारे जवांमर्द बहादुरों ने 'खुदा का प्यारा' बना दिया।

अघोषित युद्ध

१ सितम्बर को पाकिस्तान ने अमेरिका से खैरात में मिले अमेरिकी हथियारों के घमंड पर जम्मू-काश्मीर को पाकिस्तान में मिलाने के बाद दिल्ली तक बढ़ने का ख्वाब देखा। उसने १०० पैटन टैंकों और पूरी पाँच ब्रिग्रेडों के साथ इस इलाके पर धावा बोल दिया। अंतर्राष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन कर वह ११ मील भारत में घुस आया। १५ मील और आने पर वह अखनूर पर कब्जा कर लेता और जम्मू-काश्मीर बीच से कट जाता।

हालांकि हम इतने बड़े हमले का मुकाबिला करने की हालत में नहीं थे, पर आजादी की रक्षा और राष्ट्र का आत्म-सम्मान तो बचाना ही था। सेना के जनरलों ने प्रधान मन्त्री श्री शास्त्री और रक्षा मंत्री श्री चह्वाण से आगे का रास्ता पूछा। देश के बहादुर प्रधान मंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री की शंकर-भृकुटि तन गई और उन्होंने सेना अधिकारियों को आदेश दिया कि भगवान पर भरोसा करते हुए "होने दो तांडव नृत्य, देखा जाएगा।"

५ सितम्बर को अमृतसर के सामने पाकिस्तान ने भारी सेना इकट्ठी कर अमृतसर पर हवाई हमला किया तो सीधे मुकाबिले के सिवाय और चारा नहीं था। ६ सितम्बर को हमले का रुख मोड़ने और अपनी स्थिति सँभालने के लिए हमारे हवाबाजों ने इशारा पाते ही २८ लड़ाकू विमान

लेकर लाहौर के हवाई अड्डे पर जा आग बरसाई। पाकिस्तान का ख्याल था कि भारत हथियारों के आगे झुक कर काश्मीर को पाकिस्तान के हवाले कर देगा, पर इस लड़ाई में पाकिस्तान के मंसूबे हमारे रणवीरों ने किस तरह धूल-मिट्टी में मिला दिए वह आप इस पुस्तक में पढ़ेंगे।

युद्ध-विराम की घोषणा

लड़ाई के नतीजे ने दुनिया के देशों पर यह अमिट छाप लगा दी कि जो शांति से रहना चाहता है, वह शांति कायम भी कर सकता है। लड़ाई के दौरान हमें अपने मित्रों और शत्रुओं का पता चल गया। अमेरिका ने हमें हथियार देने से इंकार कर दिया, इंगलैंड भी मुकर गया। पी० एल० ४८० के मातहत हमारा अमेरिका से अनाज सहायता का जो समझौता था उस पर भी अमेरिका ने शर्त लगा दी कि या तो भारत पाक के साथ युद्ध-विराम करे वरना वह अनाज देना बन्द कर देगा। कितनी उल्टी बात थी कि हमलावर पाकिस्तान था, पर पश्चिमी देशों के राजनीतिज्ञों और अखबारों ने भारत को हमलावर बताया। चीन ने पाक को थपकी दी। इंडोनेशिया, पश्चिम जर्मनी, ईरान, टर्की आदि ने पाकिस्तान को सहायता का वचन दिया, लेकिन दुनिया के ऐसे देश भी थे जो एशिया के उप-महाद्वीप को लड़ाई की आग में झुनसते नहीं देखना चाहते थे, खासकर भारत को, जिससे दुनिया को शान्ति का सन्देश मिलता था। विश्व-युद्ध के डर से वे संयुक्त राष्ट्र संघ के जरिये अपील कर रहे थे कि भारत और पाकिस्तान दोनों देश तुरन्त लड़ाई बंद कर दें। ४ और ६ सितम्बर को राष्ट्र संघ ने दोनों देशों से अपील की कि वे लड़ाई बंद कर दें और अपनी सेनाओं को ५ अगस्त से पहले की स्थिति में लौटा लें। भारत युद्ध-विराम के लिए तैयार था, पर पाकिस्तान राजी न हुआ। इसके बाद सुरक्षा परिषद ने ऊ थांत को युद्ध-विराम के लिए दोनों देशों के नेताओं से बातचीत करने भेजा। पहले वह रावलपिंडी गए जहां पाकिस्तान ने तीन-सूत्रीय सशर्त फार्मूला रखा, लेकिन वह हमें मंजूर

नहीं था और हमने बिना किसी शर्त युद्ध-विराम का प्रस्ताव रखा।

२० सितम्बर को सुरक्षा परिषद की आवश्यक बैठक बुलाई गई जिसमें दोनों देशों से तुरंत युद्ध बंद करने की सिफारिश करने का प्रस्ताव पास हुआ। हमने अपनी सहमति दे दी, पर पाकिस्तान आखीर समय तक जिद पर अड़ा रहा कि शायद अमेरिका और इंगलैंड काश्मीर दिलाने की बात युद्ध-विराम के प्रस्ताव में जुड़वा दें। निराश होकर उसने युद्ध-विराम के समय से सिर्फ एक घंटे पहले यानि २२ सितंबर के दिन के ११ बजे प्रस्ताव पर दस्तखत किए जबकि युद्ध-विराम का समय प्रस्ताव में १२ बजे लिखा गया था। इसमें हमें व्यावहारिक आपत्ति थी कि इतने थोड़े समय में अपने सैनिक अधिकारियों तक आदेश कैसे भेज सकेंगे और फिर पाकिस्तान युद्ध-विराम उल्लंघन का झूठा इल्जाम भारत पर लगाएगा। इसलिए युद्ध-विराम का समय २२ सितंबर को आधी रात के बाद ३½ बजे तय किया गया। युद्ध-विराम का पूरी तरह पालन किया जाए, इसे देखने के लिए राष्ट्र संघ ने प्रेक्षक नियुक्त किए। युद्ध-विराम प्रस्ताव में सिफारिश की गई कि दोनों देश अपनी सेनाओं को ५ अगस्त से पहले वाली हालत में वापिस लौटा लें और आपसी विवादों को निपटाने के लिए शांतिपूर्वक रास्ता खोजें।

ताशकंद समझौता

१३ सितम्बर को रूसी प्रधान मंत्री श्री कोसीजिन ने दोनों देशों से युद्ध-विराम की अपील करते हुए कहा था कि यह अच्छा नहीं कि भारत और पाकिस्तान युद्ध की आग की लपटों में झुलसें। इसलिए दोनों देश लड़ाई बंद करें और यदि चाहें तो अपने झगड़ों को तय करने में रूस की सहायता लें। यदि दोनों देशों के नेता ताशकंद में आकर मिलें और आपसी मामलों को खुले दिल से निपटाना चाहें तो रूस को बड़ी खुशी होगी।

भारत सरकार ने प्रस्ताव का तुरंत स्वागत किया, लेकिन पाकिस्तान ने उसे ठुकरा दिया और वह अपनी हिमायत कराने के लिए

दुनिया भर के दर्वाजे टटोलता फिरा, सुरक्षा परिषद में भारत को गाली-गलौज की, पर हम शांत रहे। जब पाकिस्तान सभी ओर से निराश हो गया तब उसने ताशकंद वार्ता का दामन पकड़ना चाहा कि शायद रूस ही काश्मीर का मामला सुलझवा दे। इस आशा को लेकर पाकिस्तान ने युद्ध-विराम के तीन महीने बाद ताशकंद वार्ता का प्रस्ताव मंजूर कर लिया। रूस का रुख जानने और उस पर चढ़ा भारत का रंग उतारने के लिए पाक विदेश मंत्री श्री जुल्फिकार अली भुट्टो रूस गए। लेकिन उनका पका हुआ पाकी पुलाव रूस के हवाई अड्डे पर ही फिसल गया। उसके बाद हमने भी अपने विदेश मंत्री सरदार स्वर्णसिंह को रूस भेजा।

ताशकंद वार्ता का दौर

३ जनवरी १९६६ को प्रधान मंत्री श्री शास्त्री, विदेश मंत्री, रक्षा-मंत्री व अन्य भारतीय अधिकारी वार्ता के लिए ताशकंद गए। पाकिस्तान की ओर से पाक राष्ट्रपति अयूब खाँ, श्री भुट्टो, वाणिज्य मंत्री और अन्य अधिकारी शामिल हुए। हमारी ओर से पहले से साफ घोषणा कर दी गई कि काश्मीर के सवाल पर कोई बातचीत नहीं होगी।

वार्ता शुरू हुई। पाकिस्तान की ओर से जिद की गई कि काश्मीर का सवाल सबसे पहले लिया जाए, पर हमने इसका विरोध किया। वार्ता कभी सफलता की ओर बढ़ती, कभी वह असफल होती दिखाई देती। यह वार्ता बंद कमरे में शास्त्री जी व अयूब खां के बीच होती रही। कभी-कभी श्री कोसीजिन भी वातावरण को मधुर बनाने और वार्ता को कड़ीबद्ध करने के लिए सहयोग देते रहे।

१० जनवरी की शाम तक कोई हल नहीं निकला। दोनों पक्ष अपनी-अपनी बातों पर अड़े थे, लेकिन श्री कोसीजिन के बीच में पड़ने से वार्ता समझौते के रूप में बदल गई और दोनों देशों के नेताओं ने शांति समझौने के दस्तावेज पर हँसी-खुशी दस्तखत कर दिए। दस्तखत करने के बाद रक्षा मंत्री से श्री शास्त्री जी ने कहा—"जिस तरह

हमने युद्ध की लड़ाई लड़ी, उसी साहस और दृढ़ विश्वास से अब हमें शांति की लड़ाई लड़नी है।" पर देश का दुर्भाग्य था कि युद्ध और शांति का समाधिष्ठाता ताशकंद समझौते को विना भोगे ही उसी रात संसार से उठ गया।

ताशकंद समझौते का प्रारूप

१. दोनों देशों की सेनाएं २५ फरवरी १९६६ तक ५ अगस्त १९६५ वाली जगहों पर वापिस चली जाएँ, यानि हाजीपीर दर्रा, कारगिल और टिथवाल हमारी सेनाएँ खाली कर दें।

२. दोनों देश एक-दूसरे के घरेलू मामलों में दखलंदाजी न करें।

३. दोनों देशों के राजदूत फिर से एक-दूसरे के देश में लौट जाएँ।

४. युद्धबंदियों को लौटा दिया जाए।

५. विस्थापितों की संपत्ति लौटा दी जाए।

६. एक दूसरे के खिलाफ घृणाजनक प्रचार न किया जाए।

७. आर्थिक, व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध मजबूत किए जाएँ।

८. दोनों देश ऐसी समितियाँ नियुक्त करें जो इस तरह की रिपोर्ट दें कि इन मामलों पर क्या कदम उठाए जाएँ।

९. राजनैतिक और सामाजिक संबंध सुधारे जाएँ और आपसी समस्याओं को निपटाने में बल-प्रयोग न किया जाए।

ताशकंद समझौते के अनुसार दोनों देशों ने अपनी सेनाएँ ५ अगस्त वाली जगहों पर लौटा लीं। पर जैसे ही फौजों के लौटने की कार्रवाई पूरी हुई कि पाकिस्तान फिर चीन की आवाज में बोलने लगा और काश्मीर हड़पने के लिए ताशकंद शांति-समझौते का बुर्का उतार फेंकने को उतावला हो रहा है।

●
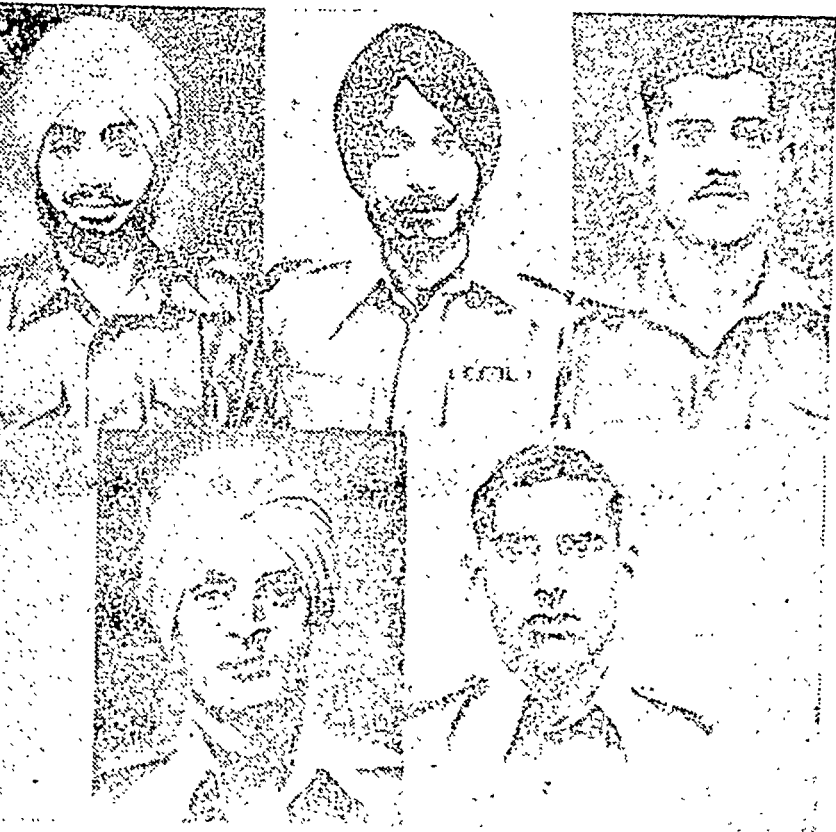
मां भारत के वीर सपूत

ां भारत के वीर सपूत जिन्होंने थल मोर्चे पर दुश्मन के पैटन
ैंक धू-धू कर जला डाले

वहादुर हवावाज
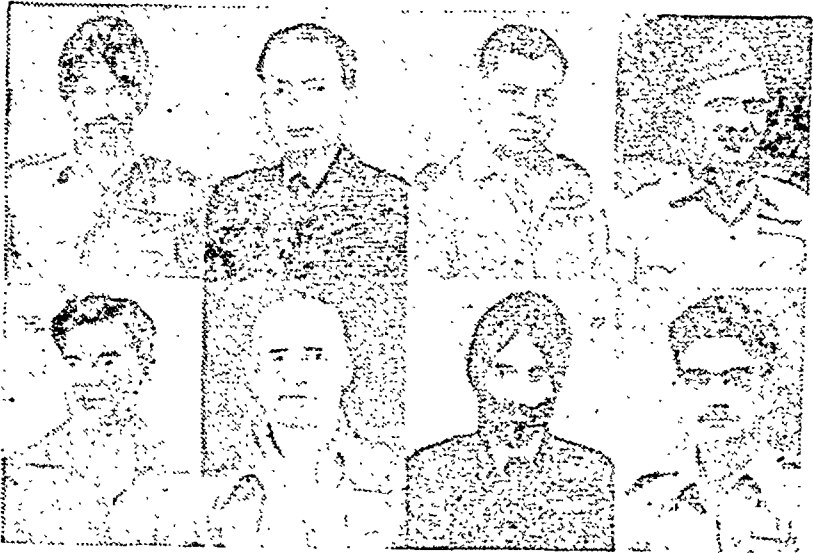
जिन्होंने पाक हमले के समय शत्रु के मंसूबों को कुचल दिया जिनके नैटों व हंटरों के सामने पाकिस्तानी सेवरजैट पानी मांग गए

समूचा देश जवानों के साथ
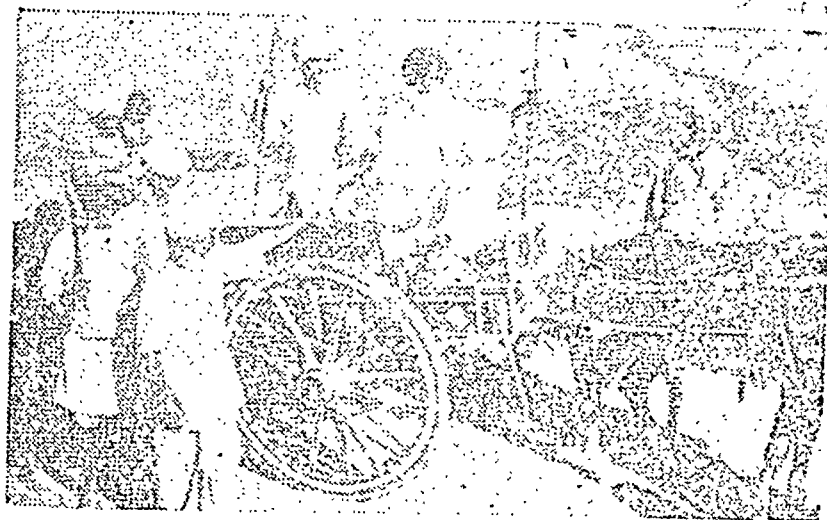
पंजाब के नागरिक जवानों के लिए मोर्चों पर गर्म खाना और दूध-दही ले जाते हुए
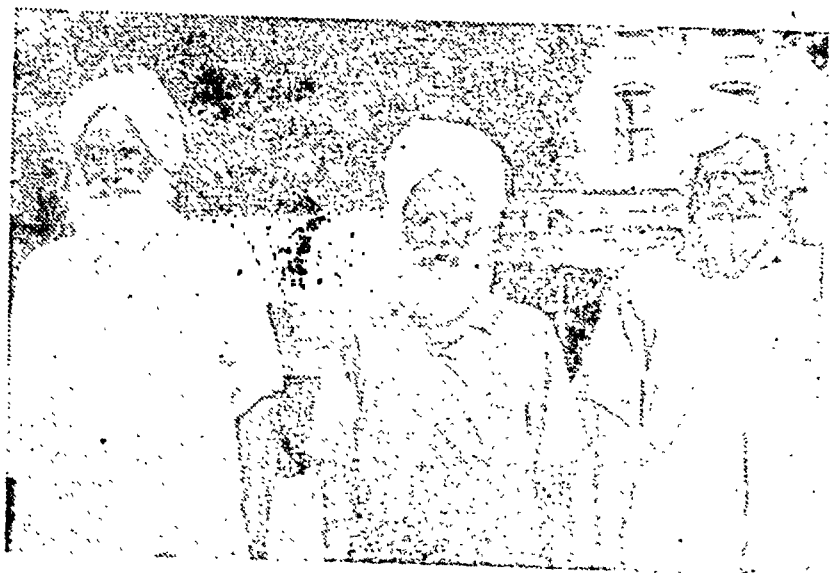
एकता की अलख जगाते सीमांत प्रदेशीय ये सरपंच गांव-गांव गए

नागरिकों पर पाकिस्तान की बर्बर गोलाबारी इंसानियत की राहों से कोसों दूर थी

अमृतसर में दस-दस मन के बम बरसा कर बच्चों व बूढ़ों को भी मौत की गोद में सुला दिया

क्या पशु-पक्षी भी पाकिस्तान से वैर रखते थे जो उसने उन्हें भी नहीं छोड़ा ?

बड़ी बी
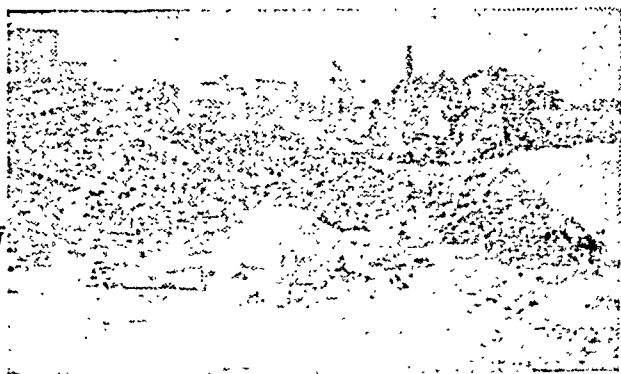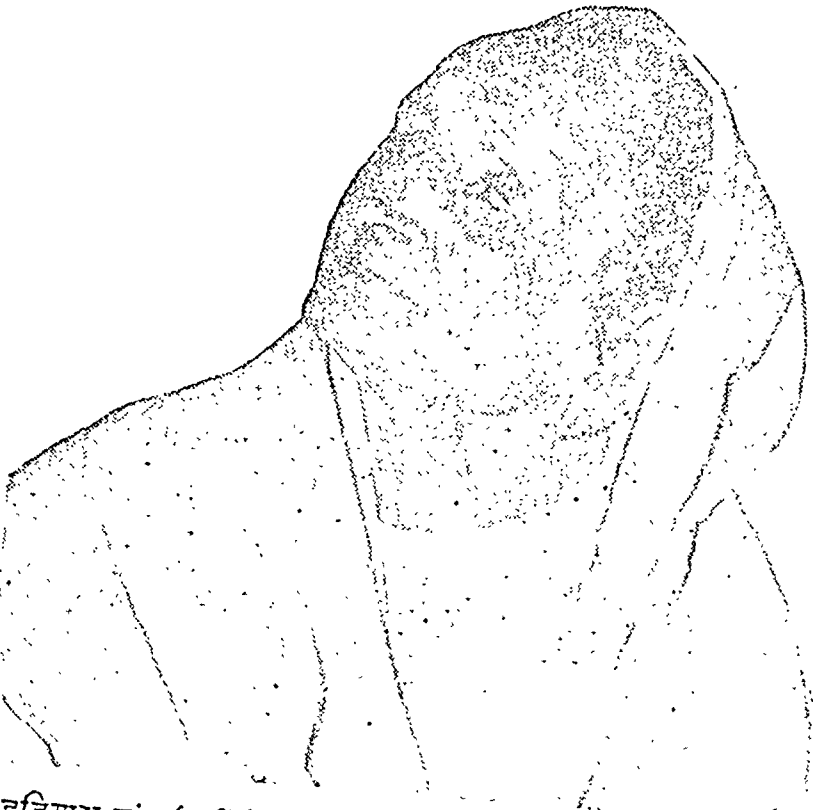
हुडियारा गांव (वर्की के पास) ८० साल की रहीम बी जिसे पाकी गांव में अकेला छोड़ गए थे और जिसकी हमारे जवानों ने रक्षा की

बर्की ० मील
लाहौर १५ मील
जहां हमारे बहादुर जवानों
ने लाहौर जीतने का मोर्चा
बांधा

पाक फौजों से छीने बर्की क्षेत्र में 'जलती मशाल' और 'सेवाग्राम' के संपादक श्री ज्ञानेंद्र प्रसाद जैन और उनकी बहन श्रीमती शैल जैन बर्की की अकेली इंसानी जिंदगी बड़ी बी के साथ
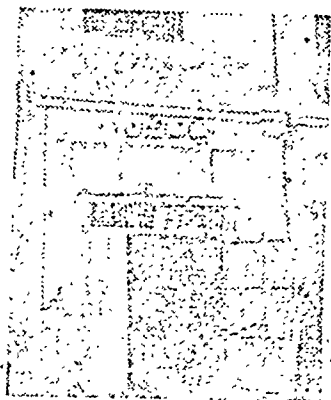
बर्की क्षेत्र की एक उजाड़ मस्जिद

भारतीय रणचण्डी का अवतार

क्वार्टर मास्टर अब्दुल हमीद

वह हिंदू था न मुसलमान था
गीता का कृष्ण था मोहम्मदे कुरान था
इन्साफ पसंद जोश का दरियाये तूफान था
शैतान बेईमान को वतने ईमान था

●

संसार में ऐसे परमवीर बार-बार जन्म नहीं लेते जो इतिहास की कड़ियों को अपने महानता-भरे लक्ष्य से जोड़ते हैं। जीवन उनके लिये गीता में दोहराया गया कर्मक्षेत्र, और मृत्यु विश्रामस्थल होता है। वे जीते हैं तो आत्म-सम्मान के लिये और मरते हैं तो कौम और वतन की खातिर। आजादी की विजयदेवी उनका वरण करती है। भारत माँ को ऐसे योद्धापुत्रों को जन्म देने पर क्यों न गर्व होगा। जननी जन्मभूमि भारत ने अपनी मर्यादाओं की तेग को निभाने इस वीर सपूत को १ जुलाई १९३३ को धामपुर गाँव, तहसील सैदपुर, जिला गाज़ीपुर (उत्तर प्रदेश) में जन्म दिया। कौन जानता था कि एक निर्धन दर्जी परिवार में अभावों से जूझने वाला यह बालक आगे बढ़ कर आजादी की रक्षा में वीरता की जलती मशाल लेकर सब से आगे चलेगा।

१९५३ में जब हमीद सेना में भर्ती होने के लिये एक दिन भाग कर बनारस चला गया तो बूढ़े पिता उस्मान ने उसे वहाँ जा पकड़ा और उसे वापिस ले आया कि "हमारा काम तो सुई-धागे से है, तू फौज में

जाकर कहां के किले ढाएगा ?" परन्तु विधाता जिनसे महान कार्य कराता है उनके मार्ग में कौन रोड़ा अटका सकता है। अगर वह वीर बालक सुई-धागे में ही उलझा रहता तो भारतीय आजादी के शौर्यभरे इतिहास का एक पन्ना खाली ही रह जाता।
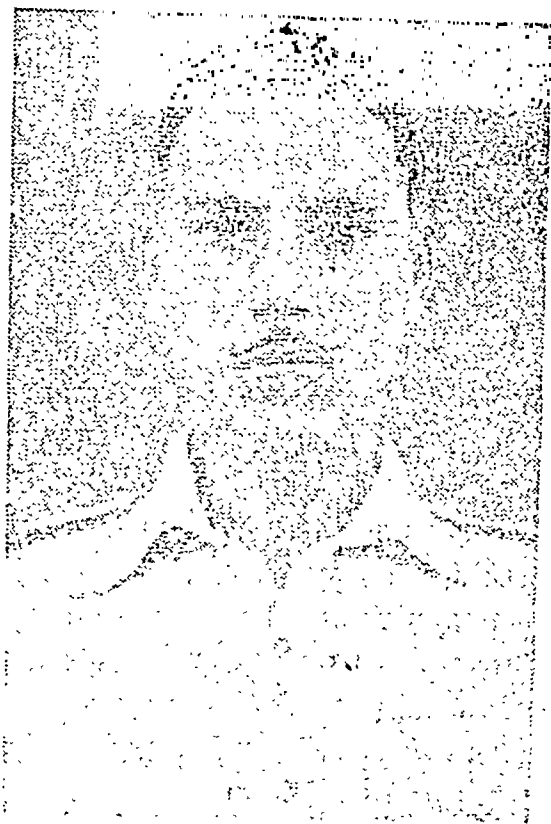
यह परम वीर २७ दिसम्बर १९५४ को सेना में भर्ती हुआ। उस समय इसकी उम्र केवल २१ वर्ष की थी। शिक्षा के नाम पर इसने सिर्फ चौथी कक्षा पास की थी। हां, सेना में रहकर उसने शिक्षा की द्वितीय

श्रेणी का प्रमाण अवश्य प्राप्त कर लिया था। परन्तु शिक्षा की कमी भी इस महान सेनानी के मार्ग में बाधा उत्पन्न न कर सकी।

मंजिल पर बढ़ते कदम

१३ फरवरी १९५६ तक नसीराबाद (राजस्थान) के ग्रेनेडियर्स रेजीमेंटल ट्रेनिंग सेंटर में और १९५७ से १९६० तक जम्मू-काश्मीर के मोर्चे पर रहा। चीनी आक्रमण के समय उसे नेफा के मोर्चे पर थागला की पहाड़ी पर भेजा गया। चीनियों ने इसे घेरा लेकिन भला यह बहादुर उनके काबू में कैसे आ सकता था? जब तक गोलियां रहीं दुश्मनों को भूनता रहा। जब सिर्फ एक बची तब हथियारों को बारूद से उड़ा कर नष्ट कर दिया जिससे वे दुश्मन के हाथ न पड़ सकें और १५ दिन भूखे रह कर वह भूटान पहुँचा और वहां से तेजपुर में अपने साथियों से जा मिला।

प्रलय का शिवशंकर

आओ, इस बहादुर सेनानी की शौर्य-गाथा को देखें जिसके कारण भारत माँ अपने इस वीर सपूत के बल-पौरुष और रणकौशल को देख गर्व से झूम उठी। वह न हिन्दू था, न मुसलमान, न सिख, न ईसाई, वरन भारत का भरत पुत्र था, जिसकी रगों में भारतीयता की भावना हिलोरें मारती थी। भारत मां के इस सपूत ने दुनिया को दिखा दिया कि भारत अखण्ड है और सब देशवासी एक हैं। भारत का दुश्मन सबका दुश्मन है और माँ भारत के ४५ करोड़ लालों का रक्त एक साथ मिल कर बहता है जिसे देखकर अंग्रेजों की कूटनीति भी शर्मा उठी।

पाकिस्तान ने माँ भारत की मर्यादा पर हाथ डालना चाहा, पर उसे क्या पता था कि भारत माँ के प्रहरी उसकी मर्यादा की रक्षा के लिये जागरूक हैं। इन्हीं प्रहरियों में क्वार्टर मास्टर हवलदार अब्दुल हमीद हाथ में आजादी की मशाल लिये मोर्चे पर पहरा दे रहे थे।

कसूर······पाकिस्तान की जबर्दस्त मोर्चाबन्दी। १० सितम्बर को प्रातः पाकिस्तान ने इस क्षेत्र में पैटन टैंकों की पूरी एक रेजीमेंट के साथ हमला किया और तोपों से भारी गोलाबारी शुरू कर दी। ६ बजते-बजते दुश्मन के टैंकों ने हमारी सेना की अग्रिम कम्पनी को घेर लिया। अब्दुल हमीद उस समय एक रिकायललैस तोपखाना टुकड़ी की कमान संभाल रहे थे। उन्होंने स्थिति को भांप लिया। एक जीप पर उनकी तोप लगी हुई थी और उसी से दुश्मन पर गोलाबारी कर रहे थे। इसी हालत में दुश्मन की गोलाबारी की पर्वाह न करते हुए वह बाहर निकल आये। जैसे ही दुश्मन का पहला टैंक उनके पास आया उन्होंने उसे रिकायललैस तोप से उड़ा दिया। दुश्मन के टैंक से लपटें निकलने लगीं।

इतने में दुश्मन के अन्य टैंक और नजदीक आ चुके थे और इस बहादुर की जीप के चारों ओर मशीनगनों से हमला कर दिया पर मजाल कि यह तनिक भी घबड़ाता बल्कि आगे ही बढ़ता गया। एक ओर अकेला भारत माँ का यह सपूत और दूसरी ओर अमेरिका से खैरात में मिले विश्व-विख्यात चार अमरीकी पैटन टैंक। वह आगे बढ़ा, टैंक गरजे पर पलक मारते ही दुश्मन ने देखा कि इस रणबाँकुरे ने एक के बाद एक आग उगलते तीन पैटन टैंकों को सदा के लिये ठण्डा कर दिया। चौथे टैंक की बारी थी कि शत्रु के गोलों की अनगिनत बौछार से भारत के इस भरत पुत्र ने सदा के लिये समाधि ले ली।

राष्ट्रीय तीर्थस्थली

यह है भारतीय वीरों की पूजा-स्थली धामपुर गाँव जहाँ आज हर दीवार से "अब्दुल हमीद जिन्दाबाद" की ध्वनि निकल रही है। गाज़ीपुर निहाल हो उठा है। देश ने इस बहादुर को वीरों के इतिहास में परमवीर पद से सम्मानित किया। उनकी बीबी श्रीमती रसूलन

आज हम सबके लिये आराध्या हो गई हैं जिन्हें अपने बहादुर पति पर गर्व है। बहादुर के चार बेटे नैगुल, अलीहुसैन, तलत मुहम्मद और मुहम्मद जमीर आज उस वीर की अमानत के रूप में सारे राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं। आओ चलें गाज़ीपुर की वीर भूमि पर और इन शिशुओं को अपना प्यार दें।

आखिरी छुट्टी काटकर जब यह परमवीर मोर्चे पर वापिस गया था तब उसकी तमन्ना थी कि अपने कच्चे मकान की जगह पक्का बनाऊँ, पर उसकी साध अभी अधूरी ही है। क्या हम उसकी अन्तिम साध...।

और जनक खलीफ़ा मुहम्मद उस्मान की पगधूलि को अपने माथे पर चढ़ाएँ। ऐ वीर! हमारे पास सिवाय भावनाओं के और है ही क्या। आप शब्द-रूपी इन भावनाओं से जहाँ कहीं भी हों हमारी श्रद्धांजलि स्वीकार करें।

मर कर भी अमर है अब्दुल हमीद
माता की रक्षा में हो गया शहीद
श्रद्धा से करते हम उसको प्रणाम
जपते सभी उसका दिन रात नाम

●

फिल्लौरा की जंग का गरजता शेर

ले० कर्नल ए० बी० तारापोर

मां मुझे दो अब विदाई मौत की घंटी बजी है
है विवशता कुछ और करता सामने डोली सजी है

वीरता वीर से सुशोभित है या वीर वीरता से सम्मानित है। दोनों एक दूसरे के पूरक है। जिस प्रकार अग्नि विना उष्णता के महत्वहीन है, उसी प्रकार वीरता वीर का एकमात्र धर्म है और उसी के प्रदर्शन की प्रवल इच्छा उसे रहती है जिससे वह सम्मानित होता है। वीरता स्वयं सुशोभित होती है उस वीर से। ले० कर्नल ए० बी० तारापोर इसके महान उदाहरण हैं। उन्होंने शत्रु की छाती को छलनी कर दिया और राष्ट्र के सम्मान को ऊँचा उठाने का अथक परिश्रम कर प्राणों की आहुति देना एकमात्र अपना कर्त्तव्य समझा।

फिल्लौरा का अग्रदूत

ले० कर्नल तारापोर को आर्मर्ड कोर की रेजीमेंट का नेतृत्व सौंपा गया। फिल्लौरा पर अधिकार करने का आदेश मिला। ११ सितम्बर १९६५ को उन्होंने आगे वढ़ना शुरू किया। जव उनकी रेजीमेंट फिल्लौरा और चाविंडा के वीच टैंकों के रूप में दीवार खड़ी करने का प्रयास कर रही थी कि शत्रु ने वजीरवाली की ओर से भारी टैंकों का सहायता से भयानक आक्रमण वोल दिया।

मौत से टक्कर

ले० कर्नल दुश्मन के इस भारी हमले से विचलित नहीं हुए और मैदान में डटे रहे। बड़ी बहादुरी के साथ उन्होंने फिल्लौरा पर आक्रमण किया। शत्रु की तोपों और टैंकों से निरंतर भारी गोलाबारी हो रही

ले० कर्नल ए० बी० तारापोर
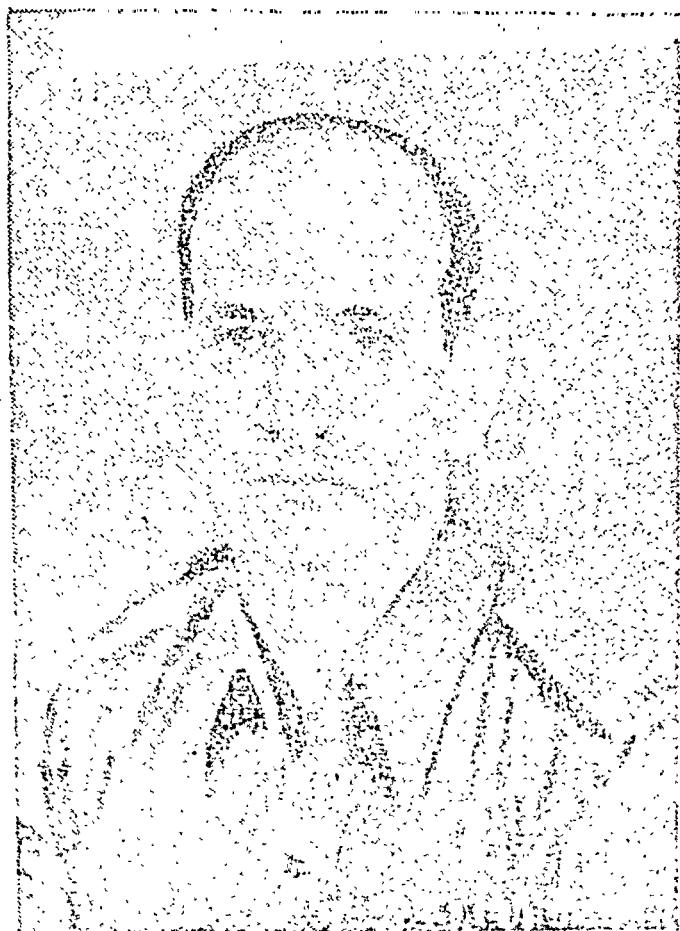
थी, किन्तु ले० कर्नल ने नेतृत्व कायम रखा। उन्होंने घायल होने के बाद भी रणक्षेत्र से हटने से इन्कार कर दिया और आगे बढ़कर जवानों को हौसला बँधाते रहे। घायल स्थिति में ही १४ सितम्बर को वजीरवाली पर हमला किया। तदुपरान्त १६ सितंबर को जसोरन और गुट्टर डोगरांडी पर आक्रमण कर अधिकार करने का श्रेय इनको है।

६० टैंकों का शिकार

उनके स्वयं के टैंकों पर गोले लगते, किंतु वह धैर्य से काम लेते। उनके नेतृत्व में उनकी रेजीमेंट ने शत्रु के लगभग ६० टैंकों को ध्वस्त किया और सैंकड़ों दुश्मनों को जमीन सुँघा दी। हमारी ओर के केवल ६ टैंक काम आए। १६ सितंबर को वह भयंकर रूप से घायल हो गए और उसी में उन्होंने प्राण होम कर दिए। आज भी वीरता उनके सामने झुक कर नमन करती है।

परिवार

ले० कर्नल तारापोर के पिता और दादा हैदराबाद रियासत के चुंगी विभाग में काम करते थे। उनके पिता उर्दू, हिन्दी, फारसी और गुजराती के विद्वान थे। उनके सिद्धान्त बहुत ऊंचे थे और उन्होंने अपने पुत्र को भी ऊँचे जीवन की प्रेरणा दी।

दस्तूर स्कूल, पूना में शिक्षा पाकर ले० कर्नल तारापोर १९३९ में हैदराबाद सेना में भर्ती हुए। पिछले महायुद्ध में उन्होंने मध्य-पूर्व की लड़ाई में भाग लिया। जब हैदराबाद रियासत भारतीय संघ में शामिल हो गयी, तब वह भारतीय सेना में ले लिये गये। तब से वह बख्तरबन्द सेना में रहे। इस बीच वह कुछ समय तक विशेष ट्रेनिंग के लिए ब्रिटेन गये, लाओस के लिए अन्तर्राष्ट्रीय आयोग में वैकल्पिक प्रतिनिधि रहे और अहमदनगर के बख्तरबन्द सेना केन्द्र तथा स्कूल में रहे।

ले० क० तारापोर के परिवार में उनकी पत्नी श्रीमती पेरीन तारा-पोर, १५-वर्षीय लड़का जेवतर (सेंट जार्ज कॉलिज, नैनीताल में पढ़ रहा

है) और १७-वर्षीय पुत्री जरीन है जो सेंट मेरी ट्रेनिंग कॉलिज, पूना में पढ़ती है। १३ मास की उम्र का कुत्ता वस्तर भी परिवार का सदस्य है। वह अपने मालिक के साथ स्यालकोट मोर्चे पर था।

परम वीर

भारत-पाक युद्ध में अपूर्व शौर्य प्रदर्शन दिखाने के लिए भारत सरकार ने राष्ट्र के सर्वोच्च अलंकरण "परमवीर चक्र" से ले० कर्नल ए० बी० तारापोर को अलंकृत किया है। आज वह नहीं हैं किंतु उनकी वीरता और शौर्य हैं जिनके सामने भारत की ४५ करोड़ जनता श्रद्धा से नत-मस्तक है। भारत की गोद में सदैव के लिए सोए वीर ! तुझे हम सभी का प्रणाम !

हम तुम्हें विदा करते सेनानी ! भर आंखों में पानी
भूलेगा नहीं भारत तेरी सदियों तक भी अमर कहानी

वतन और कौम की आन पर डोगराई मोर्चे की जलती मशाल जो देश और कौम के लिए आखिरी दम तक जली और अन्त में वतन की आबरू के लिए ही वतन की खाक में समा गई

मेजर आशाराम त्यागी

तुमने दिया राष्ट्र को जीवन, देश तुम्हें क्या देगा !
अपनी आग तेज रखने को, नाम तुम्हारा लेगा !!

—श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'

भारत माँ जब आततायियों से त्राहि-त्राहि कर उठती है तब युग अँगड़ाई लेता है और भारत माँ के वीर सपूत अपने शौर्य और साहस के कार्य-कलापों से वीरों के इतिहास में नये अध्यायों को जोड़ने के लिए इस धरती पर जन्म लेते हैं। स्वतंत्रता देवी इन वीर पुत्रों की पूजा करती है और माँ भारत इन्हें अमरता का आशीर्वाद देकर पुलकित हो उठती है।
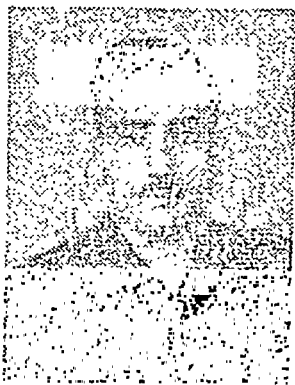
आजादी का दीवाना और डोगराई युद्ध-मोर्चे की विजय का प्रणेता २७-वर्षीय सुन्दर सजीले वदन वाला रणबांकुरा मेजर आशाराम त्यागी आज पूरे भारत का बेटा है।

भारत के इस वीर ने फतेहपुर गाँव में, मोदीनगर से चार मील दूर, जिला मेरठ में १६३८ को जन्म लिया और फतेहपुर गाँव के इस लाड़ले ने अपने गाँव का नाम वास्तव में साकार कर दिखाया। 'मौत उसी की है जिसे अहले वतन रोते हैं।' फतेहपुर आज साकार है। गाँव न रहकर राष्ट्र-प्रेम का तीर्थस्थल बन गया है जहाँ की मिट्टी का हर कण अपने बहादुर की वीरता से गौरव में फूला नहीं समा रहा।

शिक्षा-दीक्षा

मोदी इंटर कालिज, मोदीनगर से भारत के इस सपूत ने इंटर पास की और इसके बाद मेरठ कालिज से एम० ए० की डिग्री लेकर कहीं साहबी ठाठ-बाट की नौकरी कर आराम से जिन्दगी गुजारने के बजाए राष्ट्र-रक्षा की भावना से सेना में भर्ती हो गए। जब कभी इससे पहले वह अपने इस पवित्र संकल्प को अपने पिता को बतलाते तो पिता चौधरी श्री सगुवा सिंह चिंता की मुद्रा में अपने विचार रखते—"बेटा आशा! हमें इस बात का डर नहीं कि तू मोर्चे पर जाकर भारत माँ की गोद में उसकी रक्षा करते हुए सदा के लिए सो जाए, पर इस बात का भय सताता है कि सुना है फौज में जो भर्ती होते हैं वे अंडा-माँस खाने लगते हैं। कहीं तू भी ऐसा करके हमारे पवित्र कुल की मर्यादा पर धब्बा न लगाने लग जाए, क्योंकि हमारे दादा-पड़दादा हवन-यज्ञ करके पवित्र भोजन करते थे।" इस पर आज्ञाकारी पुत्र ने बड़े साधारण शब्दों में पिता को विश्वास दिलाया कि उनका आशा कभी अपने पूर्वजों की आशा के विरुद्ध नहीं जाएगा।

१६५६ में भर्ती होने के दो वर्ष बाद १६६१ में उन्हें कमीशन मिल गया। जब १६६२ में चीन ने भारत माँ की मर्यादा को नष्ट करना चाहा तब इन्होंने लेफ्टिनेंट के रूप में अपनी सेना के साथ सिक्किम मोर्चे पर दुश्मन के दाँत अच्छी तरह खट्टे किए।

अनुपम शौर्य और वीरता दिखलाने के परिणाम-स्वरूप वीरता का

पदक मिला और इन्हें कप्तान पद पर सुशोभित कर दिया गया। जब कभी वह गाँव आते तो सादगी में ऐसे खो जाते कि मानो ये कहीं सर्विस न करते हों और गाँव के सीधे-सादे किसान के बेटे हों। सब खेतों को देखने जाते, जंगलों में घंटों घूमते रहते, खेतों की हरियाली में अपने दिल को हरा-भरा करते।

रणभेरी का आव्हान

५ अगस्त १९६५ को नापाक दुश्मन ने जम्मू-काश्मीर में घुसपैठिये भेज कर माँ के मुकुट पर कब्जा करना चाहा। माँ की रक्षा के प्रहरी सीमाओं पर दुश्मन की कमर तोड़ने जा पहुँचे। इसके बाद तानाशाही के कदमों पर चलने वाला अयूब चंगेज और नादिरशाह के सपनों को दिल में संजोए हमारे आँगन में जंगी कार्रवाई करने के लिए आगे बढ़ने वाला ही था कि रणबाँकुरे और युद्ध-चितेरे हमारे बहादुरों ने अमरीका से खैरात में मिले सैबरजेटों और पैटन टैंकों के उसके गर्व को अपनी फौलादी भुजाओं और बेजोड़ मनोबल के सहारे खाक में मिला दिया।

२७-वर्षीय मेजर त्यागी ऐसे ही वीरों में थे जिन्होंने डोगराई (लाहौर) मोर्चे पर इच्छोगिल नहर के पूर्वी किनारे तिरंगा जा फहराया। जो तिरंगा आज डोगराई मोर्चे पर भारत के वीरों की गाथा का परिचय दे रहा है, वह इसी अमर शहीद की वीरता का परिचय है।

मां का बहादुर लाल अपनी पल्टन को लेकर इच्छोगिल के पूर्वी किनारे को जीतने भेजा गया। नहर के किनारे और डोगराई के चारों ओर पाँच फुट चौड़ी कंकरीट की दीवार बनी थी जिसमें इस्पात के दर्वाजे लगे थे। डोगराई से दो मील दूर दुश्मन ने अपनी सेना की मजबूत सुरक्षा व्यवस्था कर रखी थी।

मेजर ने अपने बहादुर जवानों के साथ सामने और बगल से धावा बोला। हमारी जाट रेजीमेंट के वीर सपूतों ने अपने अफसर मेजर त्यागी से हौसला पाकर शत्रु के पिलबाक्सों और कंकरीट दीवार

में हथगोले दे मारे। देखते-देखते शत्रु की हिफाज़ती मोर्चाबंदी तहस-नहस हो गई। दुश्मन के अनेक अफसरों को इस अभिमन्यु ने अपनी कैद में ले लिया। पैटन टैंकों का मटियामेट करके रख दिया। सीने पर ११ गोलियां खाते हुए भी वह घिसट-घिसट कर जवानों को ललकारते रहे कि दुश्मन को ऐसा सवक सिखा दो कि आइंदा वह भारतीय वीरों से जूझने का हौसला न कर सके। मुंह से 'हर-हर महादेव' का नारा निकल रहा था। शरीर घायल होते हुए भी आगे बढ़ रहा था। जब उनके पार्थिव शरीर ने विल्कुल जवाव दे दिया तो वह धराशायी हो गए। वहादुर को चिकित्सा के लिए उन्हें तुरन्त अमृतसर अस्पताल भेजा गया।

अन्तिम इच्छा

विजयश्री के प्यारे वीर ने अपनी इच्छा अस्पताल के डाक्टरों को वतलाई कि "मेरे शरीर को मेरे पूजनीय माता-पिता के पास भिजवा देना ताकि वे देख लें कि उनके वीर पुत्र ने पीठ पर एक भी गोली नहीं खाई।" घायल होने की सूचना फतेहपुर भेजा गई। पिता अपनी पुत्र-वधू कविता को ले अमृतसर सैनिक अस्पताल पहुँचे। पर उनके पहुँचने के दो घंटे पहले ही कविता का सुहाग उजड़ चुका था, पिता अपने वीर पुत्र को खो चुका था।

जीप में शव उनके गांव लाया गया और २१ गोलियों की गर्जना के साथ अंतिम दाह-संस्कार किया गया।

मेंहदी की लाली हाथों से न छुटी थी

कौन जानता था कि सौभाग्यवती कविता जो काशी विश्वविद्यालय की स्नातिका हैं अपने वीर पति को इतनी जल्दी मां की रक्षा में अर्पित कर देंगी। पिछली २७ जून को ही दोनों प्रणय-बंधन में बंधे थे। ग्राम महलवाला (मेरठ) में अपने सैनिक अधिकारियों और मित्रों के साथ जव भारत का यह नौनिहाल दूल्हा बन कर गया था तब कामदेव भी सुन्दरता में इस बहादुर के सामने शर्मा गए थे।

●

हाजी पीर दर्रे का वीर

मेजर दयाल

सैंकड़ों चित्र हमारे नेत्रों के सामने से गुजरते हैं, पर उसमें एक ऐसा भी होता है जिसे हम भूल नहीं पाते। करोड़ों बातें हमारे कानों में पड़ती हैं पर एक कहावत ऐसी जानदार लगती है जो हम भुला नहीं सकते। असंख्य कहानियाँ हम सुनते हैं, पर एक कहानी ऐसी होती है जो हमारे मानस-पटल पर अंकित हो जाती है। पाकिस्तानी युद्ध में मेजर दयाल की शौर्य-गाथा ऐसी ही है जो भुलाई नहीं जा सकती।
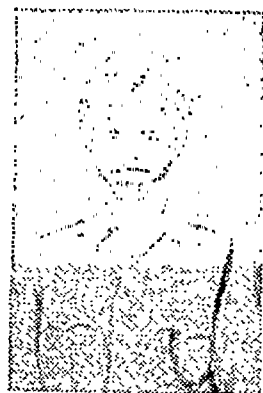
पुराने हथियार नया जोश

भारत ने यह युद्ध अपने परम्परागत शस्त्रों से लड़ा। हमारा युद्ध आत्म-रक्षात्मक था। दुश्मन के आधुनिक शस्त्र हमारे वीरों के शौर्य के आगे टिक न सके। दुश्मन पूर्ण तैयारी के साथ हमारी पावन भूमि में घुसपैठिये भेज रहा था। उन्हें रोकना, उनके आने के मार्गों को बंद करना अत्यन्त आवश्यक था। उड़ी-पूंछ क्षेत्र में मेजर दयाल को सांक पर कब्जा करने का हुक्म मिला। २५-२६ अगस्त की रात को एक कम्पनी लेकर मेजर दयाल ने साँक पर धावा बोल दिया। दुश्मन की भारी

गोलावारी के कारण धावा असफल रहा। अगली रात मेजर दयाल ने फिर धावा किया और इस वार दुश्मन के छक्के छुड़ा कर कब्जा कर लिया। वह रुके नहीं और दुश्मन का पीछा करते रहे और ऐसी युद्ध-रचना की कि एक के वाद एक चौकी उनके हाथ आने लगी। २६ अगस्त को उनका अधिकार लेड वाली गली पर हो गया। अब स्थिति ऐसी थी कि हाजी पीर दर्रे पर आगे और पीछे से हमला किया जा था। दुश्मन के काफी मात्रा में वहां सैनिक थे।

फिर हमला

पीछे की ओर से हमला किया गया। दुश्मन घिर गया। दर्रा छोटा है और उसमें से थोड़े-थोड़े लोग एक साथ निकल सकते हैं। दुश्मन को जान बचानी मुश्किल हो गई। मेजर दयाल की कम्पनी आग वरसा रही थी। हमला इतना भयंकर और नियोजित था कि दुश्मन हैरत में पड़ गया। २८ अगस्त को हाजी पीर दर्रा हमारे कब्जे में आ गया। इस हमले में एक पाकिस्तानी अफसर और ११ सैनिक कैदी वने।

एक चौकी और

२९ अगस्त को मेजर दयाल एक और चौकी की ओर बढ़े। उनकी एक पल्टन दुश्मन की गोलावारी में फंस गई। २ इंच और ३ इंच 'मॉर्टर' और मझोली मशीनगनें लेकर पाकिस्तान की नियमित सेना अंधाधुंध गोली वरसा रही थी। मेजर दयाल एक दूसरी पल्टन लेकर विजली की तरह उस पर टूट पड़े। हमला इतना भयंकर था कि दुश्मन हक्का-वक्का रह गया और चौकी हमारे हाथ आ गई। दुश्मन के काफी सनिक मारे गये।

पाकिस्तानियों के लिए हौवा

मेजर दयाल का नाम दुश्मन के लिए हौवा वन गया। जिस ओर

वह बढ़ जाते दुश्मन दम तोड़ कर भागता। उनके सिर के लिये पाकिस्तान ने ५० हजार रु० का इनाम घोषित किया। उनके असाधारण साहस, नेतृत्व, वीरता और युद्ध-कौशल के कारण ८,५०० फुट ऊँचा हाजी पीर दर्रे का मोर्चा हमारे हाथ आया। भारत सरकार ने उन्हें 'महावीर चक्र' से विभूषित किया। गले में पाकिस्तानी हथगोलों की माला डाले प्रसन्न-वदन मेजर दयाल का चेहरा सैनिकों में जोश पैदा करता था और दुश्मनों में भय और आतंक। "मेजर दयाल जिंदाबाद" का नारा कानों में पड़ते हीं दुश्मन मोर्चा छोड़ भाग पड़ता। "या अल्लाह मदद", 'हाय अल्लाह! आ गई कमायत" कहते-कहते दुश्मन फना हो जाता या भाग पड़ता था। भारत को अपने दयाल पर नाज़ है। हाँ, ले० कर्नल दयाल (मेजर पद से पदोन्नति होने पर) आगे भी माँ भारत का नाम रौशन करेंगे।

मंजिल अभी बाकी थी उसकी....

सैकिंड लेफ्टिनेंट जबरसिंह

पाक दुश्मन लाहौर बचाने के लिए बेचैन हो उठा। उसने कई ब्रिगेड डोगराई मोर्चे पर लगा दिए ताकि लाहौर हर सूरत में बच जाए। पिलबाक्सों और इच्छोगिल नहर के भरोसे वह बेफिक्र था कि भारतीय फौजें किसी भी सूरत में इस व्यूह को तोड़ कर आगे नहीं बढ़ सकेंगी। पर जब हमारे रणवीरों ने उन मोर्चों को जीत कर दुश्मन की पीठ जा सेंकी तब पाकी हुक्कामों और फौजी कमाण्डरों को जान के लाले पड़ गए। मस्जिदों में लाहौर बचाने के लिए मुल्ला-मौलवियों ने नमाज की बांग दी जिससे खुदा के कान के पर्दे फटने लगे। लाहौर शहर जब दुश्मन से खाली होने लगा तब पाकी हुक्कामों व अहलकारों ने पाबन्दी लगा दी कि जो शहर छोड़ेगा उसे गोली मार दी जाएगी।

दुश्मन शायद समझता था कि भारतीय सैनिक घास-फूस काटने के अलावा लड़ाई का धंधा भूल गए हैं, लेकिन बर्की और डोगराई मोर्चों पर इन्हीं बहादुर जवानों ने उसकी जिस तरह बोलती बंद की वह उसे

कई पुश्तों तक याद रहेगी। हर जवान के अन्दर यही भावना थी कि दुश्मन का सिर कुचलकर लाहौर पर तिरंगा फहरा दिया जाए। हमारे शूरवीरों ने न जान की पर्वाह की, न अपने परिवार के सदस्यों की दुख-सुख की चिंता उन्हें व्यापी। चिंता थी तो सिर्फ यह कि कल तक जो इसी मिट्टी में पल कर बड़े हुए थे आज वही दुश्मन बन कर भारत माँ की मिट्टी पलीत करना चाहें तो कैसे जन्म-भूमि का अपमान बर्दाश्त किया जा सकता है।

मां की आवाज

मां के सपूत जबरसिंह को कैसे चैन पड़ता जब मातृभूमि के चीर-हरण को पाकी दुश्मन ने सीमा पार कर हमारी दहलीज के अन्दर घुसना चाहा। दुश्मन ने हमारे वीरों को चुनौती दी। बहादुरों के सीने फूल उठे, भुजाएँ शत्रु का घमण्ड चूर करने के लिए फड़क उठीं। इस यज्ञ में अपने जीवन की आहुति देने युवक जबरसिंह क्यों पीछे रहता ?

३ मई १९६४ को सेना में भर्ती होकर उसने मातृभूमि पर सर्वस्व निछावर करने की शपथ ली। सेना में जूनियर कमीशंड अफसर की हैसियत से भर्ती हुआ और मार्च १९६५ तक जाट रेजीमेंटल सेंटर, बरेली में ही रहा। इसके बाद चीन को ललकारने नेफा गया। वहाँ वह दुश्मन की चुनौतीका सामना करते हुए हिमालयकी रक्षा कर ही रहा था कि सितम्बर में लाहौर जीतने की सामूहिक मुहिम पर उसे रणक्षेत्र में भेजा गया।

८ सितम्बर को शत्रु इच्छोगिल की हिफाजत के लिए भारी कुमुक ले आया। जबरसिंह ने अपनी सैनिक टुकड़ी को ललकारा। जवानों के साथ बहादुर जबरसिंह दुश्मन के पिलबाक्सों में कूद पड़ा। शत्रु दल तोबा कर उठा कि तभी कमांडिंग अफसर ले० कर्नल डी० ई० हाइड बुरी तरह घायल हो गए। जबरसिंह कूद कर उनके पास जा पहुँचा और उनके इशारे पर जवानों का संचालन करता रहा। हमारी सेना इस नन्हे बिरवा पर गर्व से झूम उठी।

दो हफ्ते तक शत्रु का मर्दन करता हुआ वह आगे बढ़ता गया। लेकिन जब युद्ध-विराम होने में सिर्फ २४ घण्टे बाकी थे, सैकिंड लैफ्टिनेंट जबरसिंह ने हमारा साथ छोड़ दिया। २२ सितम्बर की शाम को शत्रु की गोली निशाना पा गई। सिर में दो गोलियां लगीं और मां का यह लाड़ला सपूत मां की गोद में चिर-विश्राम लेने को सो गया।

बुलंदशहर की बुलंदी

बुलंदशहर का लछोई गांव शहीद-भूमि का गौरव पा गया। नेशनल इंटर कालिज, खालौर डरौरा, अमरसिंह जाट कालिज, लखावटी, एन० आर० ई० सी० कालिज, खुर्जा, डी० ए० वी० डिग्री कॉलिज, बुलंदशहर की ईंटें भी अपने इस बहादुर विद्यार्थी की बहादुरी पर गर्व कर उठीं। किसान इंटर कॉलिज, रौंडा (बुलंदशहर) अपने पुराने अध्यापक और बहादुर सेनानायक के कारनामे नहीं भुला पाएगा। पिता चौधरी अमरसिंह को अपने बेटे पर नाज है, क्योंकि उसने जिले की बुलंदी कायम रखी।

जरा आंख में भर लो पानी

राजपूतानी कोख का अमर सपूत

नायक मलखान सिंह

भारत की पावन भूमि तब निहाल उठती है जब इसके भार को हल्का करने के लिए वीर-पुत्र इस धरा पर अपने चरण टेकते हैं। कौम या वतन की आवाज की खातिर ही वे जन्म लेते हैं और इसकी मर्यादाओं को निभाते हुए पार्थिव शरीर का मोह छोड़ शहीदों के इतिहास में नया अध्याय जोड़ जाते हैं।

इन्ही वीर सेनानियों में नायक मलखान सिंह की बहादुरी का सितारा आसमान में सदा चमकता रहेगा जो मातृ-भूमि की रक्षा करते हुए शत्रु के लिए साक्षात यमराज हो गए।

नायक मलखान सिंह की वीरता-भरी कहानी हमें फिर राजपूती आन-बान के जमाने के आल्हा-ऊदल और मलखान की बहादुरी-भरी गाथाओं की याद ताजा किये बिना नहीं रहती।

बर्की बनाम सिंहगढ़ का मोर्चा

लाहौर में हमारा तिरंगा जल्दी से जल्दी फहराये और शत्रु पक्ष की खातिर भी ढंग से हो जाए, यह लालसा हम सभी के मन में जोर मार रही थी। लाहौर तक पहुँचने में हमारे बहादुरों को बर्की का मोर्चा फतेह करना जरूरी था, क्योंकि लाहौर को बचाने के लिए शत्रु ने १४ मील दूर बर्की पर अपनी पूरी ताकत लगा दी थी। इसलिए यह स्थान अभेद्य गढ़ था और पानीपत के मैदान का रूप ले चुका था।

रणभेरी का आह्वान

१५ सितम्बर की शाम की वेला...। घड़ी पांच बजा रही थी। सूर्यदेव विश्राम करने जाना चाहते थे। तभी नायक मलखान सिंह को वर्की के अगले मोर्चे को फतेह करने का हुक्म मिला। राजपूती वंश की परम्पराओं को निभाने की खातिर यह शेर अपने जवानों के साथ मैदान में कूद पड़ा।

आग की लपटों में

सामने शत्रु की तोपें आग के गोले उगल रही थीं और पैटन टैंक मुंह से आग निकालते हुए हमको भस्म करने के लिये जीभें लपलपा रहे थे। दुश्मन की राइफिलों की गोलियों ने राजपूती गौरव को ललकारा, लेकिन जिस सेनानी का वज्र जैसा दिल हो, इस्पाती भुजाएँ हों और फ़ौलादी कदम हों, दिल में राष्ट्र-प्रेम का समुद्र हिलोरें मार रहा हो, उस लोह पुरुष को भला इन आग के गोलों की क्या पर्वाह होती।

रणबांकुरा अपनी टुकड़ी को ले कूद पड़ा आग के दरिया में। शत्रु के एक मोर्चे को ध्वस्त कर दिया। दुश्मन की निगाह जब इन विजय के दीवाने भारतीय प्रहारियों पर पड़ी तो दो खैराती अमरीकी घोड़ों पर चढ़ कर इनसे टक्कर लेने आ गया। अभी इस घमासान युद्ध में यह राजपूत सपूत दुश्मन के लोहे को ठंडा कर ही रहा था कि पीछे से टुकड़ी को वापसी का हुक्म मिला।

जीवन का मोह नहीं

राणा प्रताप के वंशज बहादुर मलखान का चेहरा तमतमा उठा, भुजाएँ फड़क उठीं, क्योंकि इस वंश के युद्ध-चितेरों ने सिर्फ आगे बढ़ना सीखा है, वे पीठ दिखाना नहीं जानते। मातृभूमि की रक्षा में ये अपने प्राण तो त्याग सकते हैं, लेकिन जीवन का झूठा मोह उन्हें नहीं व्यापता।

हुक्म की पर्वाह तो तब कीमत रखती जब यह अपनी नौकरी

बचाने का लोभ हृदय में संवरण कर पाता। बहादुर "हा···हा" व "जय बजरंगबली" का नारा बोलते हुए आग उगलते एक पैटन टैंक पर जा चढ़ा। एक हथगोला टैंक के अंदर दे मारा। बेचारा टैंक ड्राइवर वहीं अल्लाह का प्यारा हो गया। अमरीकी खैराती माल धू-धू करके स्वाहा होने लगा।

लोहे के घोड़े की सवारी

जिन माँ के लालों को कुछ करना होता है वे छोटी-मोटी बाधाओं के सामने सिर नहीं झुकाते। दुश्मन का एक गोला हमारे नायक की एक भुजा को ले बैठा, पर मानो बहादुर को इसका पता ही न था। फौरन दूसरे पैटन घोड़े पर सवारी गाँठ ली और दूसरे बचे हाथ से इसमें भी एक गोला दे मारा। देखते-देखते यह टैंक भी जमीन पर सो गया।

इसी समय भगवान के यहाँ दैत्य और देवों में रण ठन गया और हमारे नायक को वहाँ देवों के दल का नेतृत्व करने का बुलावा आ गया। शत्रु की एक गोली का निशाना नायक के सिर में आ बैठा और वह धराशायी हो गया। सिर टूट गया, पर झुका नहीं।

"खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते हैं," संदेश देते हुए नायक बेहोश हो गया और जब दुनिया नींद सो रही थी रात को साढ़े ग्यारह बजे इस बहादुर की चमकती हुई रूह भगवान के यहाँ चल दी।

वीर सपूत चिर-विश्राम के लिए राजपूती माँ की कोख की आन-बान निभाता भारत माँ की गोद में सो गया।

उड़ी से पाक को खदेड़ने वाले
मेजर रणवीरसिंह

मेरठ जिले की बागपत तहसील के मेजर रणवीरसिंह ने काश्मीर के उड़ी क्षेत्र में अपना जीवन-पुष्प भारत माँ को भेंट चढ़ाया। उन्होंने उड़ी क्षेत्र से पाकिस्तानियों को बाहर निकालने का कार्य जिस दक्षता, वीरता और कार्य-कुशलता व कर्त्तव्य-परायणता से किया, उससे राष्ट्र का मस्तक ऊँचा हुआ है।

इनका विवाह मेरठ कलक्टरी के आफिस सुपरिटेन्डेन्ट श्री एदल सिंह की सुपुत्री सुरेन्द्र कुमारी के साथ १९६२ में हुआ। इस समय उनकी आयु २७ वर्ष की थी।

चीन के युद्ध में

मेजर रणवीरसिंह ने १९६२ में नेफा क्षेत्र में चीनी सेनाओं से मोर्चा लिया। उस समय वह एक बटालियन के कप्तान थे। २० अक्तूबर को उस बटालियन को नीमखाम क्षेत्र से पीछे हटने का आदेश मिला। वह तुरन्त हाथगूला मोर्चे पर पहुँच कर चीनियों से मोर्चा लेने लगे। बड़ा कड़ा सामना किया। दुश्मन ने इनकी बटालियन को घेरने का प्रयास किया, परन्तु इनकी वीरता और सूझ-बूझ ने चीनी आक्रमण को विफल कर दिया। इन्होंने बटालियन को न तो शत्रु के हाथों में पड़ने दिया और न उसे गोली का निशाना बनने दिया।

मेजर बनाये गये

भारत सरकार ने इन्हें मेजर का पद दिया। इस पद पर इन्होंने जो कार्य किया वह भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा।

उनके आफिसर कमांडिग ने अपने पत्र में लिखा जो उनकी धर्म-पत्नी को लिखा गया—

"मेजर रणवीर मेरे पुत्र के समान थे। वह आज्ञाकारी, वीर और कर्त्तव्य-परायण अफसर थे। उनके निधन को मैं ऐसा समझता हूँ कि मैंने अपनी सबसे प्रिय और मूल्यवान वस्तु खो दी है। उनके निधन से सम्पूर्ण राष्ट्र को क्षति पहूँची है।"

वीर पुरुष की वीर पत्नी

उनकी वीर पत्नी सुरेन्द्र कुमारी ने सेना अध्यक्ष जे० एन० चौधरी के संवेदना पत्र का उत्तर देते हुए लिखा—"जो पाकिस्तानी इलाका मेरे वीर पति के नेतृत्व में भारतीय जवानों ने पाकिस्तान से छीना है वह उन्हें वापिस न दिया जाय। मुझे इसी से सन्तोष होगा। मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे पति ने १९६२ में चीनी आक्रमण के समय भी वीरता का परिचय दिया और अब भी वह किसी से पीछे न रहे। मैं अपनी सेवाएं युद्ध के मोर्चे पर काम करने के लिए देने को तैयार हूँ। मुझे विश्वास है कि मेरे ऐसा करने से दिवंगत आत्मा को अपार शान्ति मिलेगी।"

वीर पति की वीर पत्नी तू धन्य है। भारत की नारी क्या नहीं कर सकती।

बहादुर रणवीर के पिता दो वर्ष से अर्द्धांग रोग से ग्रसित थे। अब वह भी उसी रोग में देह छोड़ कर अपने वीर पुत्र से स्वर्ग में जा मिले हैं।

भारत-भूमि धन्य है जो ऐसे वीर पैदा करती है।

●

वतन का चमकता सितारा

अमर शहीद सुखबीर सिंह

उठो जवानों संकट आया रण का बिगुल बजाओ
अपना बाहुबल अजमाकर दुश्मन को दहलाओ

धरती माँ ऐसे वीर सपूतों को जन्म देकर धन्य हो जाती है जो उसे दानवता के भार से हल्का करते हैं, लेकिन ऐसे वीर सपूत संसार में अधिक समय ठहरना पसन्द नहीं करते। उन्हें अपने देश या जाति की रक्षा करने में अपने पार्थिव शरीर का मोह नहीं होता। उनका जीवन देश या जाति की धरोहर होता है जिसे जरूरत पड़ने पर उसी को सौंप देना उनका कर्त्तव्य होता है। अपने जीवन की दीप-शिखा बुझा कर वे अपने देश की ज्योति प्रज्वलित करने में ही गौरव अनुभव करते हैं।
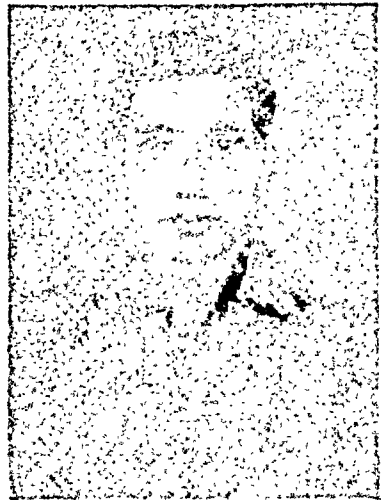
श्रद्धांजलि अर्पित

आओ, देश की आन-बान पर अपने जीवन की आहुति देने वाले रणबांकुरे शहीद सुखबीर सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करें। अतुल्य

शौर्यवान सैकिंड लैफ्टिनेंट सुखवीर सिंह का जन्म दिसम्वर १६३८ में वीरों की पावन जन्मस्थली वुलन्दशहर जिले में गुलावठी-कुचेसर सड़क पर वतन की आवरु के लिए लड़ने वाले वीरों को भेंट करने वाली सैदपुर नगरी है। इस ऐतिहासिक पावन-स्थली में वहादुर जाट लोगों की आवादी है। इस समय लगभग ६०० वीर पुत्र भारत माँ की रक्षा के लिए देश की विभिन्न सीमाओं पर जवानों से उच्च अफसरों तक जागरुक प्रहरियों का वेप धारण किए पहरा दे रहे हैं। इस गाँव में कोई भी ऐसा परिवार अछूता नहीं है जिसने माँ भारत की रक्षा के लिए अपना लाड़ला सहर्ष न भेज रखा हो।

होनहार लड़का

इस राष्ट्रीय तीर्थस्थल के नौनिहाल सुखवीर की वचपन की करामातों से पता चलने लगा था कि यह वालक साधारण वालकों की तरह नहीं रहेगा और अपनी वंश परम्परागत चली आ रही वहादुरी की टेक को निभाने में माँ का दूध न लजाएगा। वचपन से ही यह सिंह उत्साही और होनहार लक्षणों को अपने में संजोए हुए था। रणवांकुरे के जनक कप्तान रघुवीर सिंह भी अपने जमाने के माने हुए युद्ध-विजेताओं में से थे। कप्तान साहव की उम्र इस समय ७३ वर्ष के लपेटे में है। इन्होंने अफ्रीकी युद्ध में अपनी रणकौशलता के परिणामस्वरूप 'सरदार वहादुर' की सम्मानपूर्ण उपाधि पाई थी।

शिक्षा

अमर सुखवीर सिंह ने दयानन्द ऐंग्लो वैदिक इन्टर कालिज से इन्टर की परीक्षा पास की। वलवंत राजपूत कालिज, आगरा से वी० ए० की उपाधि ली और लखनऊ विश्वविद्यालय में एम० ए० कक्षा में दाखिला लिया ही था कि विश्वासघाती चीन ने भारत माँ की मर्यादा पर हाथ डालना चाहा। भला माँ के नौनिहाल अपनी माँ की इज्जत लुटते कैसे देख सकते थे। जव दुश्मन भारत के मुकुट पर हमला करने

आगे बढ़ा तो उसके रक्षक तुरन्त मोह के बंधन त्याग माँ की मर्यादा रक्षार्थ सीमा पर जा पहुँचे। सुखवीर भी फिर क्यों पीछे रहता? उन्होंने कलम की जगह करवाल चुनी और १९६२ में फ़ौज में भर्ती हो गए।

फौजी जीवन

अमर सेनानी सुखवीर सिंह डेक्कन होर्स में सैकिंड लैफ्टिनेंट थे। साथियों में मिलनसार स्वभाव और कर्त्तव्यनिष्ठता के लिए मशहूर थे। जहाँ वह अफसर वर्ग में इज्जत पाए हुए थे, साथ ही अपने आधीन जवानों के लिए बड़े भाई के रूप में प्यारे थे।

रणभूमि का बिगुल बजा जब···

नाचीज पाकिस्तान की ललचाई आँखों ने जब काश्मीर की कलियों की बलात सुगन्ध लेने के लिए हम पर युद्ध थोपा तो हमारे सीमा योद्धाओं के बाजू फड़क उठे। खूंटियों पर टंगी तलवारों को म्यान से निकाल दुश्मन के लहू से संगीनों की प्यास बुझाने हमारे मतवाले जवान जोश में झूम उठे। सभी के दिल में एक बात थी कि दो-दो हाथ करके इसे बता दें कि भारत के शेरों से बेमतलब अटकने का क्या परिणाम होता है।

मोर्चे पर जाने से पहले पिता को संदेश

पूज्य पिता जी!

"मेरी रगों में आपकी बहादुरी और जोश का खून दौड़ रहा है। हृदय में आपके उपदेशों को स्थिर कर अब रणभूमि में कूच कर रहा हूँ। जाने से पहले आपको यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मैं ऐसा कोई काम नहीं करूँगा जिससे हमारे परिवार की पावन परम्परा पर दाग लगे। युद्ध में या तो मैं विजयश्री को वरण करूँगा या चिर-विश्राम दायिनी मृत्यु ही मुझे गोद में सुलायेगी। आप आशीर्वाद दें कि मैं अपने लक्ष्य में सफल होकर लौटूं।"

सुखवीर

८ सितम्बर का दिन

कसूर इलाके का निर्णायक युद्ध······आग की लपटें······तोपों की गर्जन और भयंकर युद्ध का रौद्रव नाद······दोनों पक्ष अपने-अपने मोर्चों पर विजय प्राप्ति के पांसे फेंक रहे थे। रणबाँकुरा शत्रु की विशाल तोपों और सिपाहियों को भूखे शेर की भाँति भारी संख्या में मौत की गोदी में सुला रहा था। ८ सितम्बर से १० सितम्बर तक युद्धभूमि में शत्रु को अपनी सेना की सहायता से पीछे ढकेलता रहा। पैटन टैंकों का विषम जाल भी सिंह की ज्वालामयी नेत्रों से काँप उठा था, पर काल तो अजेय है न।

और तभी······ऐसी मनहूस घड़ी आ पहुँची जब शत्रु का निशाना इन पर आ बैठा और यह हमें छोड़ वतन और कौम की खातिर शहीद हो गए।

●

मध्य प्रदेश का इन्द्र जो हाथ में वज्र लिए दुश्मन का काल था

कुंवर जयेन्द्रसिंह

पाकिस्तानी तानाशाह आजादी के आनन्द को क्या जानें जिन्होंने आजाद होकर भी गुलामी की जंजीर को अभी अपने गले में लटका रखा है। गुलामवंशी पाकिस्तानी हुकुमरान शायद दूसरों को भी गुलाम रखने के मंसूबे दिल में संजोए दिल्ली आने के ख्वाब देखने लगे थे कि तभी उन्होंने जंग की आवाज में आजादी के दीवाने भारतीय शेरों को जगाने का दुस्साहस किया। जिस भारत की जनता ने असीम अत्याचारों के सामने सीना तान कर स्वतन्त्रता प्राप्त की और जिस भारत के स्वयं के बलिदान से ही पाकिस्तान का निर्माण हुआ, उस भारत माँ के वीर नौनिहाल भला अपनी मातृभूमि की अखण्डता पर कैसे आँच आ जाने देते? वे तो वतन की आबरु रखने की खातिर अपने प्राणों को उसके कदमों पर अर्पित करने में गर्व अनुभव करते हैं।

छंब क्षेत्र पर दुश्मन की चढ़ाई

पाकिस्तानी सेना को आगे बढ़ते हुए देख कर छोटी सी भारतीय टुकड़ी के कमाण्डर ने जगह-जगह मोर्चेबंदी का आयोजन किया। उसने अपने आधीन अफसरों से पूछा—"तुममें से कौन किस मोर्चे पर दुश्मन को रौंदने के लिये जाना चाहता है?"

पाकिस्तान की सेना अपार थी, सभी मोर्चों पर दुश्मन की आधुनिक हथियारों से सुसज्जित फौज का भारी जमाव था और वह बराबर

आगे बढ़ती आ रही थी। इधर भारतीय सैनिक और अफसरों को इनी-गिनी संख्या में ही दुश्मन से जूझना था। थोड़ी देर में होड़ा-होड़ी एक को छोड़ सभी मोर्चों की कमान संभल गई। जो मोर्चा बचा था वहाँ दुश्मन की फौज इस तेजी से आगे बढ़ी आ रही थी कि यह मौत का गढ़ बनने जा रहा था। लेकिन फिर भी इस मोर्चे पर दुश्मन की गति आगे बढ़ने से कुछ समय के लिए रोकनी जरूरी थी। कमाण्डर के पास जवानों की कमी तो थी ही···कमाण्डर ने अपने चारों ओर खड़े जवानों और अफसरों पर नजर दौड़ाकर जोशीली आवाज में कहा—"कौन है आप लोगों में वीरांगना माँ का लाल जो १५-२० जवानों को ले इस मोर्चे की कमान सँभाले ?"

मौत का वरण

२१-वर्षीय एक युवक आगे आया, उसने कमाण्डर को सेल्यूट दी। कमाण्डर की आँखें गौरव से चमक उठीं। उसने इस युवक को ऊपर से नीचे तक बड़ी उत्सुकता-भरी नजर से देखा। युवक के ऊँचे ललाट पर बल-पौरुष की चमक कौंध रही थी। गंभीर चेहरे से किसी दृढ़ संकल्प का भास हो रहा था। कमाण्डर ने वीर युवक की पीठ थपथपाई।

भारत का गौरव यह बहादुर युवक सैकिण्ड लैफ्टिनेंट कुँवर जयेन्द्र-सिंह था। जयेन्द्र ने नम्रता से कहा—"यह सौभाग्य मुझे दिया जाए।" कमाण्डर सहम उठा···। नौनिहाल बालक···अभिमन्यु जैसे पराक्रमी इस नन्हे से बिरुवा को कमाण्डर मौत के मुंह में नहीं धकेलना चाहता था···जिसके भविष्य से भारत को बहुत आशाएँ हो सकती थीं पर··· कर्त्तव्य था···देश-रक्षा का सवाल था। कमाण्डर युवक के आग्रह को न टाल सका। "शाबाश ! फौरन मोर्चा संभालो, माँ भारत के आशीर्वाद से तुम विजय पाकर हमसे मिलोगे···जब तक तुममें से एक व्यक्ति के शरीर में भी प्राण रहे दुश्मन का एक सिपाही भी आगे बढ़ने न पाए···जय भारत !"

२१-वर्षीय कुमार जयेन्द्र ने जन्म लेकर अपने साहस से इंदौरी भूमि को वास्तव में इन्द्रभूमि बना दिया। जिसका नाम ही जयइन्द्र

हो, जो अपने बल-पौरुष से इन्द्र पर भी विजय पाने की आकांक्षा लिए हो वह पाकी नाचीज दुश्मन से कैसे डर सकता था।

जिसके जनक खुद फौज में दुश्मनों को ललकार चुके थे, उनका सपूत क्योंकर अपने पिता के पवित्र रक्त को बदनाम करता।

पिता की अभिलाषा

जब जयेन्द्र समर-भूमि में उतर रहे थे तो पिता ने पत्र में अपने होनहार पुत्र को सन्देश भेजा—"...बेटा! योद्धा समर में पीठ नहीं दिखाते। राणा, शिवा द्वारा देश के लिए किए संघर्षों को मत भूल जाना।"

पुत्र ने पिता को आश्वस्त करते हुए रणभूमि से लिखा—

"पिता जी! आप मुझ पर भरोसा करें। आप वीरों की परम्परा कायम रखने के लिए लड़े थे, मुझे मातृभूमि की सेवा में लड़ना होगा।"

माँ को इसी पत्र में लिखा—

"माँ! मैं तेरा दूध न लजाऊँगा।"

रण-कौशल

सैकेण्ड लैफ्टिनेन्ट जयेन्द्र अपनी छोटी-सी टुकड़ी को लेकर एक टेकरी पर जा जमे। वहाँ से पाकिस्तानी फौज टिड्डी दल की तरह तेजी से आगे बढ़ती आ रही थी।

बस निशाना साध कर दुश्मन को जयेन्द्र की टुकड़ी भूनने लगी। घोर युद्ध होने लगा। १४-१५ मिनट तक जयेन्द्र ने अपने जवानों के साथ शत्रु पर भारी आग बरसाई। लेकिन शत्रु की शक्ति और बढ़ती चली गई। बहादुर अफसर के गोलों ने शत्रु की तीन बख्तरबन्द गाड़ियों को ध्वस्त कर डाला। लेकिन अब रण-नीति का सहारा लेना ही ठीक था, क्योंकि इने-गिने बहादुर इस प्रकार दुश्मन का ज्यादा देर तक सामना नहीं कर सकते थे। इसलिए कुंवर जयेन्द्रसिंह अपनी टुकड़ी को लेकर कुछ पीछे हट गया और एक दूसरी टेकरी पर जा जमा। दुश्मन ने समझा भारतीय भाग गए हैं। वह बेखबर हो गया और इत्मिनान से

आगे बढ़ने लगा, पर ज्योंही शत्रु की सेना हमारे वीरों के चंगुल में पहुँची कि बहादुरों को इस बार युवक ने शत्रु पर आग बरसाने का आर्डर दे दिया। जगह की तंगी से कुछ हमारे जवान खेतों की मेंड़ों पर खड़े होकर दुश्मन को भस्म करने लग गए। पर... दुर्भाग्य... अब हमारी यह छोटी सी टुकड़ी शत्रु के तीन ओर से घेरे में आ गई थी। लेकिन क्या मज़ाल किसी भी जवान के चेहरे पर चिन्ता की रेखा आए। उनकी गोलियां तब तक दुश्मन को भूनती रहीं जब तक एक भी सैनिक के शरीर में प्राण बाकी बचे।

बहादुर जयेन्द्र के पेट में आठ गोलियाँ लग चुकी थीं, पर बंदूक के ट्रिगर से हाथ नहीं हटा। प्राण शरीर का साथ छोड़ चुके थे, लेकिन निशाने की पोजीशन ज्यों की त्यों थी।

सारे भारतीय जवान वहीं होम हो गए, पर उन्होंने कमाण्डर की आज्ञा पूरी की।

भारत-गौरव जयेन्द्र शरीर छोड़ चुके थे, पर राइफिल के घोड़े पर उनके हाथ का अँगूठा इतने जोर से जमा हुआ था कि प्राणान्त के बाद भी अँगूठा घोड़े से मुश्किल से हटाया गया।

स्थल-सेना अध्यक्ष भी जयेन्द्र की बहादुरी की गरिमा से फूल उठे। उन्होंने जयेन्द्र के पिता को संदेश भेजा—"ऐसी मृत्यु पर हर देशवासी को गर्व होगा।"

●

मशाल जो जलती रही

कप्तान चन्द्र नारायण सिंह

जब वीरता का इतिहास पुराना होने लगता है तब वीर अपनी मातृभूमि की रक्षा में जुट कर नये युग को अपने कारनामों से रचते हैं।

कप्तान चन्द्र नारायण सिंह भला इस युग की रचना में अपना योग देने क्यों पीछे रहते ?

५ अगस्त को पूंछ जिले में एक गांववासी ने पाकिस्तानी हमलावरों को देखा जो शायद हमला करने की ताक में थे। भाग कर उसने यह सूचना पास की गढ़वाल राइफिल्स की एक सैनिक टुकड़ी को दी जिसकी कमान कप्तान चन्द्र नारायण सिंह सम्भाल रहे थे। कप्तान साहब दुश्मन के इस हमलावर इरादे को मिट्टी में मिलाने निकल पड़े।

इलाका पहाड़ी, ढलान वाला, इधर-उधर खेत, छोटे-मोटे मकान आसपास। साँझ का समय, अंधेरा हो चला था, पास की चीज़ें भी साफ दिखाई नहीं पड़ती थीं।

हमारे बहादुर बड़ी परेशानी में पड़ गए कि ऐसी स्थिति में क्या किया जाए…तभी एक ऊँचे स्थान से इस गश्ती टोली पर मशीनगनों, मॉर्टरों और हथगोलों की बौछार शुरु हो गई।

कप्तान साहब तो मौके की तलाश में थे ही कि किसी प्रकार शत्रु का अता-पता चले तो उसके दांत खट्टे करके उसे छठी का दूध याद
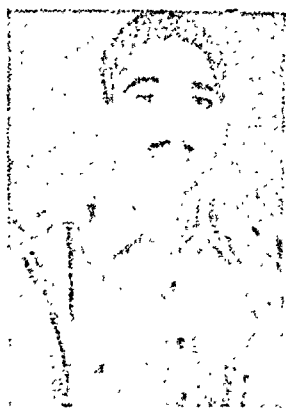
दिला दें। विना किसी घवराहट वह अपनी टुकड़ी को दुश्मन के मोर्चे की वाजू में ले आए और आड़ लेकर अपना मोर्चा साध लिया। शत्रु भी जान गया था कि सामना होने को है। उसने हमलावर कार्रवाई और तेज कर दी। कप्तान साहव फौरन समझ गए कि दुश्मन संख्या में काफी है और मजवूत मोर्चाबंदी किए है।

मौत से टक्कर

थोड़े से जवान'''रात का घना अंधेरा दुश्मन के ठिकाने का भी सही अंदाज नहीं। ऐसी स्थिति में मौत को गले लगाकर ही कप्तान साहव माँ भारत का आशीर्वाद लेकर टुकड़ी सहित दुश्मन को ललकारते हुए आग की ज्वाला में कूद पड़े। दुश्मन भी सावधान हो गया और अधिक तेजी से आग वरसाने लगा। कप्तान साहव ने अपने वहादुरों की पीठ थपथपाई और मोर्चेवंदी का व्यूह रचकर सधे निशानों से गिन गिनकर दुश्मन को भूनने लगे।

भारी गोलावारी से सुलझने के लिए और वचाव के दांव-पेंतरों की स्कीम वनाने के कारण कप्तान साहव को क्षण भर को ५० गज की दूरी पर रुकना पड़ा। पर जो वतन के लिए पैदा हुए और कौम के लिए वड़े हुए उनकी वहादुरी की मशाल को कौन वुझा सकता था। वहादुर कप्तान के एक ओर भारत के वीर सपूतों की वहादुरी की जलती मशाल थी जो दुश्मनों को भस्म कर रही थी और दूसरी ओर शत्रु की खोपड़ी को चकनाचूर करने के लिए स्वदेशी राइफिलें व रिवाल्वरें थीं। उन्होंने अपनी पीठ के जवानों को आगे वढ़ने को ललकारा। दुश्मन छः सिपाहियों से हाथ धोकर भारी मात्रा में गोला-वारुद, तीन हल्की स्वचालित मशीनगनें छोड़ खुद तैयार की कब्रों में जा छिपा। कप्तान साहव उसे क्यों चैन लेने देते और मक्खी-भुनगों की तरह खाइयों से उसे निकाल अच्छे ढंग से खातिर करते हुए कप्तान अपनी जलती मशाल साथियों को सौंपकर वीर-लोक को चले गए।

●

वतन और कौम का सच्चा वफादार सिपाही

मुहम्मद अयूब

"मैंने अल्लाहताला के फजलो-करम से अपने अजीज वतन के लिये अपने फर्ज को ठीक तौर पर निभाया और मेरी अल्लाहताला से दुआ है कि आगे भी मैं अपने खून के आखिरी कतरे तक अपने मुल्क की आजादी को आंच न आने दूंगा," भारत माँ के लाल अयूब ने अपने चाचा भूरे खाँ को यह उद्गार एक पत्र में प्रकट किए। वीरचक्र-विजेता मुहम्मद अयूब ने राजस्थान के झुंझुनू जिले के नुआं ग्राम में जन्म लिया था।
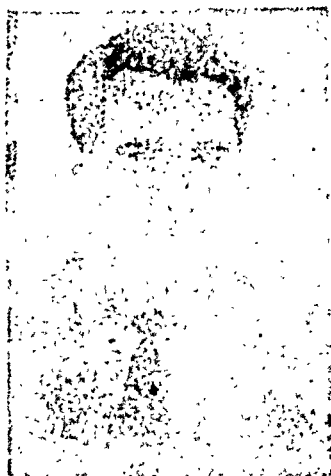
खानदानी बहादुर

यह २५-वर्षीय बहादुर युवक मैट्रिक तक पढ़ा है और फुटबाल का अच्छा खिलाड़ी है। कसरत-कुश्ती का शुरू से ही बहुत शौक रहा है। वीरता इसकी बपौती रही है। पिता इनामअली खाँ फौज में रेजीमेंटल दफेदार मेजर थे। ताऊ स्वर्गीय क्वार्टर मास्टर दफेदार फैज मुहम्मद फौज से पेंशन पाते हैं। दादा आलम अली के तीनों पुत्र द्वितीय विश्व युद्ध में लड़े जिनमें से मुहम्मद यासीन वीरगति को प्राप्त हुए और भारत सरकार ने अयूब के दादा को रिक्रूटिंग बैज प्रदान करके सम्मानित किया था।

मादरे वतन की आबरू का सवाल

बहादुर अयूब इस समय आर्मर्ड कोर की १८वीं कैवेलरी के नायब रिसालदार हैं। इनके युद्ध-कौशल पर इनके रेजीमेंट के अधिकारी हर्षित हो उठे—"आपके पुत्र बड़ी बहादुरी से लड़े और उन्होंने दुश्मन को भारी क्षति पहुँचाई। रेजीमेंट को उनकी सफलताओं पर गर्व है। जम्मू-स्यालकोट के मोर्चे पर अकेले ही अयूब ने शत्रु के चार पैटन टैंकों का चकनाचूर कर दिया।"

जान से प्यारा अपना वतन

अयूब के हृदय में मातृभूमि के लिये कितना प्यार है वह अपने छोटे भाई इकबाल के नाम पत्र में देश पर मर-मिटने की भावना से पता चलता है। "अपने अजीज मुल्क के लिये मेरी जिन्दगी कोई मानी नहीं रखती। मैं अपनी जान को फर्ज पर निछावर कर दूंगा। हमें सबसे ज्यादा अजीज हमारा हिन्दुस्तान है।" अपनी माँ को भेजे पत्र में अयूब ने लिखा—"माँ! तेरा बेटा खैरियत से है। इसने अब तक तेरे दूध की आबरु रखी है और आगे भी उम्मीद करता है कि रखेगा।"

भारत सरकार ने इन्हें वीरचक्र से सम्मानित किया। अयूब पर उनके गाँव नुंआ, जिला झुंझुनू, राजस्थान को ही नहीं, समस्त भारत को गर्व है। अपने गाँव आने पर पाँच हजार नर-नारियों ने गाँव के बाहर इनका जो भव्य स्वागत किया उससे जनता का प्यार जाहिर होता है।

धर्म, जाति इंसान की बनाई हैं। पर आन पर मर-मिटने की भावना, कर्त्तव्य पर डटे रहने की लालसा, कुछ कर गुजरने की दृढ़ इच्छा इंसान की अपनी है। धर्म और जातिभेद से ऊपर उठी हुई आत्माएं कर्त्तव्य को पहचानती हैं, उन्हें कोई बहका नहीं सकता। पथ से भ्रष्ट करने का कोई साहस नहीं कर सकता।

स्यालकोट का अमर बहादुर
मेजर भूपेन्द्र सिंह
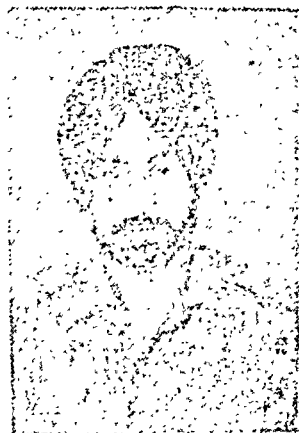
आज कौन नहीं जानता मेजर भूपेन्द्र सिंह को जो वीर-शिरोमणि हैं और भारत के अमर सेनानियों में सदा के लिए अमर हो गए हैं। इतिहास उनकी वीरता का साक्षी है। उनकी शौर्य-गाथा की लोक-कथाएं सुनाई जाती रहेंगी और अनन्त काल तक उनका नाम आदर से लिया जाता रहेगा। देश की अखंडता को बनाए रखने के लिए अपने प्राण होम करने वाले वीर के लिए भारत मां दुखी है, किन्तु इन्होंने कर्त्तव्य-रत अपने प्राण अर्पित किए इसका आत्म-गौरव भी मां को ही है।

शत्रु का काल

स्यालकोट क्षेत्र में मेजर भूपेन्द्र सिंह भेजे गए। वहां कुशल रण-संचालन, निर्भीकता और साहस के साथ आगे बढ़ते हुए वह दुश्मन के दांत खट्टे कर रहे थे। भारतीय बख्तरबन्द दस्ता उनके हाथों में सुरक्षित था। दस्ते के वीर सैनिक ऐसा नेतृत्व पाकर जोश से भर जाते और भरपूर शक्ति के साथ दुश्मन पर धावा बोल देते और देखते-देखते ही दुश्मन भाग खड़ा होता। स्वयं मेजर भूपेन्द्र सिंह ने पाकिस्तान को अमरीका से मिले सात पैटन टैंकों को ध्वस्त किया। मार पर मार दुश्मन को दे रहे थे। उनके शरीर पर घाव लग चुके थे, पर इसकी उन्हें चिन्ता नहीं थी। अन्तिम सांस तक युद्धभूमि में ही रहना चाहते थे, किन्तु जब उनका सारा शरीर लहू-लुहान हो गया तब उन्हें बलात लोगों ने हटाकर सैनिक अस्पताल भेजा गया।

कर्त्तव्य का धनी

जब घायल सैनिकों को देखने प्रधान मंत्री लालबहादुर शास्त्री सैनिक अस्पताल गए तो मेजर भूपेन्द्र सिंह को रोमाञ्च हो आया, सारा शरीर स्फूर्ति से भर उठा, किन्तु अवश बहादुर उठ न सका और चाहते हुए भी पलंग पर उठ कर बैठ भी न सका। नम्र स्वर और रुंधे गले से बोला—"मैंने दुश्मन के सात पैटन टैंक अकेले तोड़े हैं और उस समय मेरी गति बहुत तेज थी, किंतु कितना दुख है कि प्रधान मंत्री मेरे सामने खड़े हैं और मैं चारपाई से उठ कर उनका अभिवादन भी नहीं कर पा रहा हूँ।" असहाय स्थिति में भी कर्त्तव्य को न भूलने वाले भूपेन्द्र तुम धन्य हो ! तुमने स्व० प्रधान मंत्री का हृदय छू लिया था।

सात पैटन टैंकों का कलेऊ

हजारों लोगों की भीड़ में सार्वजनिक भाषण में स्व० प्रधान मंत्री शास्त्री जी ने बड़े गर्व से तुम्हारे नाम का जिक्र करते हुए कहा था— "अकेले भूपेन्द्र सिंह ने दुश्मन के सात पैटन टैंक तोड़े थे। दुश्मन के प्रहार से उनका सारा शरीर छलनी हो गया था। फिर भी वह मोर्चे से तब तक नहीं हटे जब तक उनके प्राण बचाने के लिए उन्हें वहाँ से हटाना अनिवार्य नहीं हो गया। उनको बड़ा दुख होता था यह सोचकर कि जिस समय उन्हें मोर्चे पर होना चाहिए था वह अस्पताल में पड़े हुए थे।" विचारों की लड़ियाँ सुलझाते-सुलझाते सैनिक अस्पताल में ही वह संसार से कूच कर गए।

आज वह नहीं हैं, किंतु उनके विचार और भाव अब भी हौसला बढ़ाने वाले हैं और वीर जवानों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। उनको खोकर किस वीर पुत्र की आँखों में आँसू न छलछला आएंगे। मेजर की अंतिम क्रिया पूर्ण सैनिक सम्मान के साथ सम्पन्न की गई। उनके शव-दाह के समय उनके पूज्य पिता भी मौजूद थे। उन्होंने बड़े स्थिर भाव से कहा था—"भारत की रक्षा में अपने नौजवान पुत्र की आहुति देने पर मुझे गर्व है।"

मेंढर का वीर नायक

दीन मुहम्मद

यदि आप पुंछ जिले के मेंढर क्षेत्र में जाएं तो आपको प्रायः एक ही चर्चा सुनाई देगी और वह होगी दीन मुहम्मद की वीरता के कारनामों की। लोगों की जुबान पर दीन मुहम्मद का एक ही नाम होगा। बुजुर्गों की जुबान एक को ही दुआ देती सुनाई देगी। वहां का रेशा-रेशा उसके ही गुणों का गान करता सुनाई देगा।

सजग प्रहरी

अगस्त का महीना था, ५ तारीख थी। सायंकाल के समय दीन अपने खेत से लौट रहा था। उसने देखा कि कुछ अजनबी लोग हथियारों से लैस चोरी-चोरी आ-जा रहे हैं। उसे शक हुआ। उसने बढ़कर पूछा—"तुम कौन हो?" उन्होंने पास आकर इसे लालच दिया, फुसलाना चाहा, बहकाना चाहा। दीन मुहम्मद को खतरा लगा, वह उल्टे पांव भागा। पास की सैनिक चौकी तक बिना रुके भागा-भागा गया। उन्हें सूचना दी और साथ लाकर वह स्थान बताया। हमलावर दिन छिपने के साथ छिप गए थे और भारतीय सेना पर उन्होंने अचानक गोला-बारी आरम्भ कर दी थी। हमलावर संख्या में ज्यादा थे, परन्तु सेना ने चुनौती स्वीकार की। जम कर लड़ाई हुई। अंत में दुश्मन सिर पर पैर रखकर भागा। दीन मुहम्मद बराबर उसके छिपने के ठिकानों को बताता रहा, सैनिकों को सहायता देता रहा। दुश्मन का बहुत-सा साजो-सामान हमारे हाथ लगा। हथियार, बारूद, कपड़े और अन्य उपकरण हमारे कब्जे में आए।

हिमालय-सा अडिग

दीन मुहम्मद को कोई लालच फुसला न सका। फुसलाता भी कैसे, वह अपनी माँ पर आंच कैसे आने देता ? उसके दूध को कैसे लजाता ? वह कैसे दुश्मन को खुली छूट देता कि वह भारत की पावन भूमि को अपने नापाक कदमों से रौंदे ? उसे धन-दौलत का लालच अपने कर्त्तव्य से न डिगा पाया।

दीन मुहम्मद ! तुम्हारी सूझबूझ, साहस और बुद्धिमानी पर सारे देश को गर्व है। तुम देश पर आंच कैसे आने देते। अपनी जान की पर्वाह किए विना तुम अपने कर्त्तव्य पर अडिग रहे। इस बात की बहुत सम्भावना थी कि दुश्मन तुम्हारा सफाया एक ही गोली में कर देता और तुम एक कदम भी न भाग सकते, पर वाह रे वीर ! तुम धन्य हो।

खाक हमें दो उन कदमों की

बहादुर मोहन चन्द्र जोशी

उन वीर पुरुषों की चिता की राख क्यों न कोई देशभक्त अपने शीश पर चढ़ाना चाहेगा जो हमारी रक्षा और देश की आन-बान व गौरव को स्थिर रखने में अपनी जान की आहुतियां हंसते-हंसते दे जाते हैं।

अमर शहीद मोहन चन्द्र जोशी की बहादुरी-भरी कहानी बड़े समाचारपत्र शायद इसलिए छापना भूल गए कि वह न कर्नल था और न कप्तान। वह तो सिर्फ देश की रक्षा की साध दिल में संजोए सीधा-सादा बहादुर जवान था। मोर्चे पर दुश्मन की गोली न अफसर को देखती है न सिपाही को। वहां तो खेल उसी के हाथ रहता है जो उस गोली का रुख बदल दे।

मां भारत के नौनिहाल जोशी की रगों में अपनी मां की मर्यादा की रक्षा का खून उबाल खा रहा था। जम्मू क्षेत्र में अग्रिम मोर्चे पर हमारी एक सैनिक टुकड़ी के साथ वह रणबांकुरा बढ़-बढ़ कर शत्रु को बुरी तरह खातिर कर रहा था। कभी इस दांव पर तो कभी उस दांव पर आततायियों को उनकी करनी का फल चखा रहा था और अपनी राइफिल के बल पर उन्हें बराबर पीछे धकेलता जा रहा था।

वीरों की परम्परा

भारत के वीरों की शुरू से ही यह परम्परा रही है कि रणक्षेत्र में चाहे उनका शीश काम आए, किन्तु वे पीठ दिखाना नहीं जानते। यह भारत का लाल था तो भारत का ही। इसी पावन मिट्टी में खेल-कूद कर बड़ा

हुआ था। वही क्यों मां के वीरों की प्रतिष्ठा में धब्बा लगाता ? आजादी की रक्षा का दीवाना अब तक अपने शरीर में छ: गोलियां खा चुका था, लेकिन क्या मजाल जो मुंह से उफ निकल जाए। सख्त जख्मी हालत में भी यह स्वतंत्रता का सेनानी दुश्मन के सिपाहियों को अल्लाह का प्यारा बनाता जा रहा था। दिल में यही भावना काम कर रही थी कि शरीर तो बस गया ही समझो, क्यों न उस नीच दुश्मन के अधिक से अधिक आदमियों से निपट कर मां जन्मभूमि का कर्ज चुकाता जाए। घायल अवस्था में भी श्री जोशी शत्रु को ललकारते हुए आगे बढ़ने की सोचकर एक चक्रव्यूह की योजना बना रहे थे। तभी शत्रु की एक गोली उनके सीने को पार कर गई और वह लड़ते-लड़ते भारत की भूमि-रज में सदा को सो गए।

०

चाहे जान भले ही जाए

तिरंगे झंडे का अगुवाई सीताराम सिंह

कानपुर धन्य हो उठा जब उसने सुना कि जिस अपने प्यारे लाल को भारत माता की सीमा-दीवारों की रक्षा के लिए उसने माँ भारत के हाथों सौंपा था उस लाल ने अपनी जननी का दूध नहीं लजाया और वीरों के इतिहास में अपनी वीरता-भरी कहानी का एक नया अध्याय जोड़ दिया।

कारगिल क्षेत्र

दुश्मन का बढ़ा हुआ हौसला···

पर बेचारा हौसला ऐसे शूरवीरों के सामने क्या करता जहाँ भारतीय जमादार सीताराम सिंह जैसे राष्ट्र-सम्मान के प्रतीक तिरंगे की रक्षा में अपने प्राणों की बाजी लगाने का सौदा पहले से ही मन में किए थे।

दुर्गम पहाड़ी इलाका हमारे सेनानियों के लिए एकदम अपरिचित, किन्तु वाह रे बहादुर जमादार की दिलेरी। दुश्मन की छाती पर मुक्का मार कर गुलाम कश्मीर की कारगिल चौकी जिस तरह आजाद करा कर वहाँ अपना तिरंगा झंडा जा फहराया, उसके लिए भारत माँ सदा अपने इस चमकते हुए सितारे जमादार सीताराम सिंह पर युग-युग तक आशीर्वादों की वर्षा करती रहेगी।

तिरंगा शान से भारतीय गणतंत्रात्मक भावनाओं को हवा में बिखेर रहा था कि तभी दुश्मन ने इससे अपनी नाक कटती देख तिरंगे पर

हमला बोल कर उसकी शान नीची करनी चाही, पर काश उसे पता होता कि सीताराम के फौलादी हाथों में उसकी शान सुरक्षित थी।

चारों ओर से गोलियों की बौछारों ने जमादार का शरीर छलनी कर दिया। पर वह तब तक अपनी माँ की मर्यादा को भला कैसे चले जाने देता जब तक यह न देख लेता कि दूसरे बहादुरों ने उसकी सुरक्षा की गारंटी दे दी है। तिरंगे की रक्षा के लिए जब हमारे बहादुरों ने उनकी जगह भर दी तब ही जमादार साहब निश्चिन्त होकर चिर-निद्रा में सोए।

विधवा पत्नी श्रीमती कुसुम और १-वर्षीय नन्हे दिनेश की रक्षा का भार वह ४५ करोड़ भारतीयों को सौंप गए हैं।

काश्मीर हमारा है

घुसपैठियों का महाकाल सिपाही लेखासिंह

१६ अगस्त १९६५...

लेह-श्रीनगर सड़क पर एक सामरिक महत्व का पुल जिसकी हिफाजत के लिए हमारे सेंट्रल रिजर्व पुलिस के १२ जवान तैनात थे। दुश्मन के घुसपैठियों को भी आज और कोई काम न था। उन्हें इस पुल को उड़ाने का काम सौंपा गया था।

सुबह के साढ़े तीन बजे......आसमान पर काले बादल मंडरा रहे थे, कभी-कभी बिजली भी कौंध जाती थी। तभी पाकिस्तानी लुटेरों ने पुल उड़ाने की छिपे रूप से हमलावर कार्रवाई शुरू कर दी। वे २०० से कम नहीं होंगे।

पुल के पास पहरा देने वाले पुलिस सिपाही लेखासिंह ने आहट पाकर अपने साथियों को सावधान करते हुए कहा—"मालूम होता है दुश्मन पुल को नुकसान पहुँचाना चाहता है।" तभी एक गोली सिपाही लेखासिंह के सिर के पास से सनसनाती हुई निकल गई। हमारे सिपाही सतर्क हो गए और उन्होंने मोर्चे सम्भाल लिए।

लेखासिंह ने दुबारा देखा कि १०-१२ गज के फासले पर एक पाक लुटेरा रेंगता हुआ पुल की ओर बढ़ रहा है। बहादुर लेखासिंह ने उस पर गोली दाग दी। निशाना छाती पर बैठा। पर इस पर उसने उछल कर हमारे इस बहादुर पर हथगोला फेंका। सौभाग्यवश दुश्मन गोले की पिन नहीं निकाल सका था जिससे वह दुश्मन को धोखा दे गया। तभी लेखा-

सिंह ने गोलियों से उसकी खोपड़ी कुचल दी।

दोनों ओर से गोलियों की बौछार शुरू हो गई। दो घंटे तक दुश्मन पुल तक पहुँचने की नाकाम कोशिश में लगा रहा। उसने १५० हथगोलों की पुल पर वर्षा की, पर कुल १२ भारतीय पुलिस के इन बहादुरों ने दुश्मन के २०० सिपाहियों को आगे न बढ़ने दिया। अंत में वे पांच लाशें छोड़ भाग गए।

दूसरी बार फिर लुटेरों ने इस पुल को खत्म करना चाहा। लुटेरे स्टेनगनों, मशीनगनों और हथगोलों से हमला कर रहे थे, पर भारतीय शूरवीर राइफिलों से ही दुश्मन को भून रहे थे। हमारे वार को दुश्मन झेल न पाया और उसने पीठ दिखाकर अपनी जान बचाई।

हालांकि सिपाही लेखासिंह की जांघ में एक गोली पार हो गई थी, पर वह भला माँ का दूध कैसे लजा सकता था। घायल अवस्था में भी उसने जो शूरवीरता का परिचय दिया वह गौरव की बात है।

●

हाथ टूट गया लेकिन रुका नहीं

रणबांकुरा गुरुदेव सिंह

अगस्त का महीना था। विश्वासघाती पाकिस्तान अपने घुसपैठिये काश्मीर में भेज रहा था भारत के नन्दन-कानन में आग लगाने, अशान्ति का साम्राज्य स्थापित करने और बर्बर अत्याचारों का इतिहास पुनः प्रारंभ करने के घृणित उद्देश्य से। सशस्त्र पाकिस्तानियों के प्रवेश मार्गों को रोकने के लिए भारत को अन्तर्राष्ट्रीय रेखा पार करनी पड़ी।

अंग-भंग, हिम्मत बदस्तूर

२४ अगस्त को टिथवाल क्षेत्र में जवानों की एक कम्पनी को एक पाकिस्तानी चौकी पर कब्जा करने के लिये भेजा गया। भयंकर युद्ध प्रारंभ हो गया। दुश्मनों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही थी। हमारे जवानों की संख्या थोड़ी थी और उन्हें खतरा बहुत था। इतने में ही लांस हवलदार गुरुदेव सिंह ने अपनी कम्पनी के साथ बाज की तरह दुश्मन की चौकी पर हमला किया। दुश्मन के हथगोलों से उसका बायां हाथ बेकार हो गया। पर मां का वह वीर बेटा रुका नहीं, दायें हाथ से स्टेनगन को पिस्तौल की तरह चलाता रहा। बेकार हाथ से भी यदा-कदा हथगोले फेंकता वह दुश्मन की एक खंदक से दूसरी खंदक में जाकर गोलों की मार से उसे ध्वस्त करता जाता। घण्टों इसी प्रकार बिना रुके इस सेनानी ने दुश्मन के छक्के छुड़ाए।

तिरंगा लहराया

इसके साथियों ने इसे हटाने की भरपूर कोशिश की, पर भला

वलिदानी वीर रुकते हैं, क्या उन्हें कोई उनके अडिग निश्चय से हटा सकता है, क्या मौत भी उन्हें डरा सकती है ? कभी नहीं। जव तक हमारे जवानों का उस चौकी पर कब्जा न हो गया, गुरुदेव सिंह भयंकर और अचूक गोलावारी करता रहा। आखिर दुश्मन भागा और प्यारा तिरंगा उस चौकी पर फहराने लगा। उसकी इस अदम्य वीरता के लिये भारत सरकार ने उसे वीर चक्र से विभूषित किया है। पाकिस्तान के पास अच्छे शस्त्र थे, वड़ी ताकत थी, पर जिस देश में ऐसे वीर हों, ऐसे त्यागी हों, ऐसे वलिदानी हों, वह देश पुराने हथियारों के साथ भी अजेय ही होता है। साहस, धैर्य और दृढ़ता युद्ध में कुछ मानी रखती हैं। कर्त्तव्य-निष्ठा का कुछ महत्व है। हमारे वीरों में यह कूट-कूट कर भरा है। वे मां का दूध नहीं लजाते। खुद मिट जाते हैं, देश को नहीं मिटाते। हमारा देश धन्य है और धन्य हैं यहां के वलिदानी वीर।

पाकिस्तानी घुसपैठियों का काल

ले० कर्नल संघा

स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त १९६५ से लगभग दस दिन पूर्व दुश्मन ने अपने मंसूबे पूरे करने और काश्मीर का प्रवृति के सुरम्य वातावरण से पूर्ण इलाका हड़पने के लिए घुसपैठ प्रारम्भ कर दी। युद्ध-विराम रेखा के मुहानों की रक्षा के लिए १९४९ में जम्मू-काश्मीर में भारतीय सेना के एक शिविर 'देवा कैम्प' के पास एक 'इन्फैंट्री ब्रिगेड ग्रुप' तैनात किया गया था और तब से वह उसकी रक्षा में तैनात था। पाकिस्तान ने अचानक आक्रमण कर शेरों को चुनौती दी। अचानक आक्रमण से इंन्फैंट्री ग्रुप के कमांडर अपने कई जवानों के साथ खेत रहे। पाकिस्तान अपनी जीत पर खुश था। भारत शान्तिप्रिय देश अवश्य है, लेकिन चुनौती मंजूर करना भी वह बखूबी जानता है। पाक आक्रमण से शंकर का तीसरा नेत्र खुल चुका था, यह पाकिस्तान को शायद पता नहीं था।
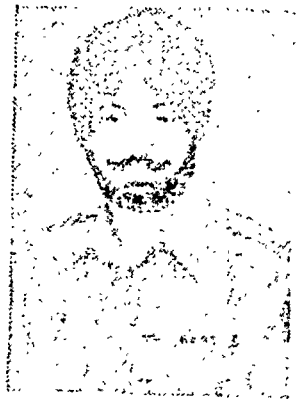
भारतीय शेरों की दहाड़

पाकिस्तान अपने टैंकों का बल आजमाना चाहता था कि भारत के शेर कर्नल संधा ने उसे ललकारा। वह अपने कमांडर की मृत्यु पर दुखी थे किन्तु विचलित नहीं हुए। दुश्मन की धुंआंधार गोली-बारी में भी उनका धैर्य और साहस ज्यों का त्यों था और न ही इस बात से वह घबराए कि अनवरत मार से रक्षा पंक्तियाँ छिन्न-भिन्न हो चुकी हैं। साहसी और निर्भीक ले० कर्नल संघा ने अपनी बटालियन को बचाते हुए मोर्चा संभाल लिया। खैरात में मिले शस्त्र और माँगे हुए हथियार धरे के धरे रह गए संघा के सधे हुए मोर्चे के आगे। मंडि-याला क्रासिंग तक दुश्मन की पहुँच न हो सकी और कपटपूर्ण नापाक इरादों से स्थान छीनने के मंसूबे धूल में मिल गए। अपनी भरपूर शक्ति लगाकर और सहसा आक्रमण कर पाकिस्तान ने जो हिस्से ले लिए थे उनमें से भी तीन चौकियाँ खाली करने के लिए कर्नल संघा ने उसे मजबूर कर दिया और दुश्मन को वहाँ से हटना पड़ा। यह स्थान टैंक युद्ध के लिए बहुत उपयुक्त था और यहाँ पर जो दुश्मन की अपार क्षति हुई इसका श्रेय ले० कर्नल संघा को है। इन्होंने स्थिति को बदल दिया और दुश्मन को खूब छकाया। उनकी मार खाकर जो अभी भी जिन्दा हैं वे काँप-काँप जाते होंगे।

मुँह की खाई

१ सितम्बर को दुश्मन ने फिर जोर बांधा और टैंकों को सजा और दलबल के साथ आगे बढ़ने का प्रयास किया और मंडि-याला क्रासिंग पर धावा बोल दिया। ले० कर्नल संघा अपनी बटालियन के साथ अभी इसी क्षेत्र में जमे हुए थे। शत्रु ने लाख कोशिश की कि इस बटालियन को ध्वस्त कर दे, किन्तु संघा के कुशल नेतृत्व और

भारतीय सूरमाओं की वीरता के आगे उसकी एक न चली और उसे मुँह की खानी पड़ी। अभी भी ले० कर्नल संघा उसी सतर्कता के साथ क्षेत्र की रखवाली कर रहे है। उनके इस साहस और कुशल नेतृत्व के लिए उन्हें 'वीर चक्र' से भारत सरकार ने सम्मानित किया है। भारत माँ की कोख ऐसे लालों से भरी पड़ी है जो अपने युद्ध-कौशल, रणचातुरी, दृढ़ता व अदम्य साहस से असम्भव को सम्भव बनाने का दम रखते हैं, पुच्छल तारों की तरह कार्य-क्षेत्र में उतरते हैं और अपने अपूर्व तेज से सबको चकाचौंध कर माँ की गोद में सो जाते हैं या नये अवसर की ताक में रहते हैं।

●

खानदानी नवाब, पर भारत मां की कदमों की खाक

बहादुर मेजर शेख

रावण कुल में सभी जन राक्षसी वृत्ति के नहीं थे। भगवान राम के जरिये आततताइयों का सफाया करने और रावणीय कुकृत्यों का नाश करने के लिए स्वयं रावण के भाई विभीषण को मर्यादा पुरुषोत्तम राम के पुनीत कार्य में सम्मिलित होने में गर्व हुआ। जिस युवराज अंगद के दुःश्चरित्र पिता वाली का राम ने वध किया था, उसी युवराज ने अपने पिता के अंतरंग मित्र रावण के वध करने में राम की ओर से अपने शौर्य का पूर्ण परिचय दिया।

हमारी पवित्र भूमि सबकी आश्रयदाता रही है। वह किसी से भेद-भाव किए बिना सब पर माता की ममता रखती है। हिंदू-मुसलमान या अन्य सम्प्रदायों का भेदभाव हम अपने मन में रखें, लेकिन माँ भारत अपने सभी सपूतों पर एक सा भाव रखती है। तब इसके सपूत भी क्यों न एक भाव होकर माँ पर आने वाले हर संकट का मुकाबिला करेंगे।

जहाँ मजहबी पक्षपात नहीं, धर्म के नाम पर कोई छोटा-बड़ा नहीं, जहाँ मंदिरों में शंख-घड़ियाल की गूंज सुनाई देती है, वहीं मस्जिदों में नमाज की अजां या गिर्जाघरों में प्रार्थना की घंटियाँ गूंजती हैं। भला ऐसी जन्मभूमि पर पलकर कौन भारत माँ का सपूत उसकी आबरू पर आंच आते देख आगे नहीं बढ़ेगा?

पाकी तानाशाहों ने अगस्त से सितम्बर के निर्णायक युद्ध में यह खूब जान लिया कि भारत में जन्म लेने वाला चाहे हिंदू हो या मुसलमान पहले

भारतीय है, बाद में कुछ और। जहाँ हमारे रणबांकुरे हिंदू जवानों ने इस युद्ध में नापाक दुश्मन को ढंग से कुचला वहाँ परमवीर अब्दुल हमीद और बहादुर अयूब व अपनी शौर्य-गाथा हमारे लिए बहादुर स्मृति के रूप में देने वाले मेजर रजा शेख ने भी शत्रु को बता दिया कि भारत के ४५ करोड़ अमनपसंद लोगों की आबरू से खिलवाड़ करना अपनी जिंदगी पर तोहमत बुलानी है।

भारत माँ के ३४-वर्षीय सपूत मेजर शेख इसी परम्परा का परिचय देते हुए ६ सितम्बर को स्यालकोट मोर्चे पर अपने जीवन का उपसंहार कर गए।

जन्मस्थली

सौराष्ट्र में माँगरोला की छोटी सी शेखापन आफताइयों के कुल में इस नन्हें से बिरुवा ने ६ मार्च १९३१ को जन्म लिया। यह मातृभूमि का सेनानी जिस मौन भीष्म प्रतिज्ञा को अपने मन में साधे था वह साध उसके रणकौशल द्वारा दुश्मन की पीठ सेंकते समय पूरी हो गई। मांगरोला के तत्कालीन मुस्लिम शासक परिवार में उसने जन्म लिया था। इसलिए १९४७ में जब देश का बंटवारा हुआ तब पाक हुकूमत ने लाख कोशिश की कि शेख खानदान का यह चिराग पाकिस्तान में जल कर अपने वंश-परम्परागत गुण से किसी बड़े पद को निभाकर हुकूमत का साथ दे, लेकिन १६ वर्ष के इस किशोर ने यह जिद न छोड़ी कि मैं भारत की मिट्टी में ही पैदा हुआ हूँ, यहीं रहूँगा, यही पढ़ूँगा और अहले वतन की खिदमत करते हुए अपनी उम्र का बाकी वक्त गुजार कर यहीं की मिट्टी में मिल जाऊँगा।

यहाँ की मिट्टी को पाक और न्यामत मानने वाले मेजर शेख ने पाकिस्तान के सब ओहदे और सुख-सुविधाओं को इसलिए ठोकर मार दी क्योंकि ये सब चीजें पाकिस्तान को विदेश से मिली थीं जिनसे बू आती थी। उन्होंने कहा—"मैं तो भारत की धरती पर पैदा हुआ हूँ

ओर यहीं सो जाना चाहता हूँ।"

शिक्षा और सैनिक रूप में

१९५४ में युवा मेजर शेख ने वम्बई से अर्थशास्त्र में एम० ए० की उपाधि ली और जून के महीने में भारतीय सेना में कमीशन प्राप्त कर माँ की सेवा का हृदय में व्रत लिए, बाजुओं में फौलादी ताकत संजोए और मन में माँ धरती जैसी गम्भीरता धारण किए भर्ती हो गए। उनके मन में यह भीष्म मौन प्रतिज्ञा का संकल्प था कि किसी तरह मातृभूमि के सम्मान की रक्षा में मेरा यह नश्वर शरीर काम आ सके।

कौन नहीं जानता कि पाकिस्तान आज भी जिन प्रदेशों पर अपना दावा करता है उसी प्रदेश के शासक कुल के पढ़े-लिखे होनहार और भारतीय सेना के अधिकारी के नाते इस प्रतिष्ठित युवक को अपने यहाँ बुलाने के लिए पाकिस्तान ने कितने प्रलोभन दिये गए होंगे, लेकिन जिस माँ के सपूत की आखिरी तमन्ना अपने वतन की आवरू की खातिर सरफरोशी की हो, भला उसे कौन सा तूफान या प्रलोभन अपने निश्चित मार्ग से डिगा सकता था।

रणभेरी का आह्वान

जिस क्षण की यह वहादुर वर्षों से प्रतीक्षा कर रहा था आखिर मन की साधना पूरी करने वाला वह आ ही गया। सेना में अपनी लगन और होशियारी के कारण इस माँ के वहादुर सपूत को सर्वोच्च सेनापति का ए० डी० सी० का पद मिला, पर इतने से उसे भला क्या सन्तोष होता।

उस दिन...जब इस रणबाँकुरे को अपने मादरेवतन के नापाक दुश्मन पाकिस्तान की कमर सेंकने के लिए कपूरथला में अपनी फौज की आर्मर्ड कोर के वख्तरवन्द गाड़ियों के दस्ते की कमान संभालने का काम सौंपा गया तब इसने अपनी जिन्दगी का सबसे ज्यादा खुशी का दिन महसूस किया। रणभेरी का बिगुल बजते ही दुश्मन से खुलकर दो-दो हाथ

करने के लिए मेजर शेख रण के मैदान में जा उतरे।

स्यालकोट का जंगी मैदान

८ सितम्बर...जब युद्ध अपने भरे यौवन से गुजर रहा था तब हमारी सेना की १६वीं केवलरी रेजीमेंट स्यालकोट मोर्चे पर शत्रु की एक पूरी बख्तरबन्द ब्रिगेड को खदेड़ रही थी। बहादुर जवान उसे पीटते हुए गागडोर तक बढ़ चुके थे। तभी हमारी इस रेजीमेंट के स्क्वाड्रन का मुकाबिला शत्रु के एक आर्मर्ड रेजीमेंट से हो गया और साथ में दुश्मन की स्थल सेना की एक इन्फेंटरी रेजीमेंट भी लगी थी। शत्रु की ओर भी अनेक ढंग से यहाँ पूरी तैयारी थी। तोपें छिपी हुई थीं, सिपाही खंदकों में छिपकर मोर्चाबन्दी किए थे, शत्रु की इसी व्यूह रचना को तोड़ने का काम हमारे बुलन्द हौसले वाले मेजर शेख को सौंपा गया। इम्तहान की अजीबोगरीब घड़ी थी। कहीं शिकस्त हो गई तो कौम-फरोशी का इल्जाम लग सकता था, वतन के गद्दारों में नाम आ सकता था। कौम से मुसलमान जो थे हमारे मेजर, पर जिसकी साधना ही भारत माँ की सेवा में अपने प्राणों को उत्सर्ग करने की रही हो वह कैसे अपने ऊपर कोई इल्जाम आने देते।

शत्रु की स्थिति देखते हुए वह पूरब से बढ़े। करीब ३०० गज आगे बढ़ने पर उन्हें दुश्मन की एक बख्तरबन्द डिवीजन का सामना पड़ गया। यह दुर्ग शत्रु ने अपनी दृष्टि से अभेद्य बनाया था। रिकायललैस तोपें खंदकों में हमारी फौजों के मुकाबिले को तैयार थीं। मेजर साहब ने फौरन अपने स्क्वाड्रन को मोर्चा संभालने का हुक्म दिया और खुद पहली टुकड़ी के साथ जाकर युद्ध-चातुर्य से दुश्मन का सफाया करने लगे। मौत और जिन्दगी के बीच वह रणबांकुरा किलकारी मार कर काल के समान दुश्मन पर टूट पड़ा। देखते-देखते दुश्मन की सारी व्यूह रचना को आग की लपटों ने घेर लिया। घमासान निर्णायक युद्ध चल रहा था। दो टैंकों को वह अपने हाथ से साफ कर

चुके थे। पर वीरों को जीवन भगवान थोड़ा ही देता है। -दुश्मन की तोप के एक गोले का निशाना ठीक बैठ गया और मेजर घायल हो गए।

कायर पुरुष जिन्दगी की अधिक पर्वाह करते हैं, लेकिन जो वतन का दीवाना घर से सर से कफन बाँध कर निकला हो उसे क्यों जिन्दगी से मोह होने लगा। घायल अवस्था में वह तब ही अस्पताल गये जब उनकी कमान दूसरे बहादुर ने संभाल ली।

९ सितम्बर का मनहूस दिन इतिहास के काले अक्षरों में लिखा जाएगा जब उसने हमारे इस जगमगाते दीपक को सदा के लिए अपने में समेट लिया।

अम्मा ! पप्पा आ गए

नवयौवना बहादुर शेख की पत्नी आयशा बेगम अपने पति की मौन प्रतिज्ञा से पहले ही परिचित थीं, इसीलिए वह अपनी ससुराल के गाँव से अपने पति की कुशलता जानने के लिए अपनी ११-वर्षीया पुत्री महरु और ३-वर्षीय पुत्री फातिमा को लेकर दिल्ली आ गई थीं। जब वे अपने पिता के बारे में ज्यादा पूछताछ करतीं तो बेगम कह देतीं—"शिकार को गए हैं।" १४ दिसम्बर को छोटी बेटी अपने पप्पा से मिलने को जमीन-आसमां सिर पर उठाए थी कि बाहर दर्वाजे पर किसी ने थपकी दी। नन्हीं मुन्नी बोल उठी—"अम्मा ! पप्पा आ गए।" पर काश शहीद मेजर अपनी नन्हीं सी कली की बात को सच कर देते। पापा नहीं, जनरल चौधरी की पत्नी दर्वाजे पर खड़ी किवाड़ खुलवाने को थपकी दे रही थीं कि वह आयशा बेगम को बता सकें कि किस प्रकार मेजर साहब ने दुश्मन को ढकेलते हुए सदा के लिए अपने को माँ भारत की मिट्टी में विलीन कर दिया था।

●

नाम-गाँव बताओ हम पूजा करेंगे उसकी

'मेजर सिंह'

कभी मिलिटरी ट्रेनिंग नहीं ली, किसी रिसाले में नहीं रहा, किन्तु वह शेर मां की रक्षा करने में जवानों से भी दो कदम आगे रहा।

असली नाम पता नहीं कि उसकी जननी ने इस अपने दीपक का क्या नाम रखा था, पर मोर्चे पर हमारे जवानों ने उसकी बहादुरी और दिलेरी के कारनामों को देखकर उसे "मेजर" के पद से सुशोभित कर डाला और इस शेर को सब 'मेजर सिंह' के नाम से पुकारने लगे। काम था ट्रक ड्राइवरी, पर मंसूबे वाकई मेजर-जनरल के से उसके दिल में छिपे थे। इस शेर की दिल की सबसे बड़ी तमन्ना थी कि शत्रु की लाशों को कुचलता हुआ लाहौर में सबसे पहले उसका ट्रक तिरंगा फहराता हुआ घुसे। यही नहीं, लाहौर में भारत माँ की विजय पताका फहराने के लिए उसने ट्रक के टूल वाक्स में तिरंगों का अच्छा खासा भंडार कर रखा था कि कहीं कोई जवान मांगे तो वह दौड़कर उसे झंडा दे सके।

उस दिन

वर्की का मोर्चा···

हम लगातार आगे बढ़ रहे थे बढ़े ही जा रहे थे। वर्की का मोर्चा आज फतेह होना था।

मोर्चे पर जरूरी सामान पहुँचाने की जिम्मेदारी 'मेजर सिंह' ने

अपने ऊपर ओट ली। फौजी अफसरों ने नक्शा-तस्वीरों से उसे रास्ता पूरी तरह समझा दिया।

फतेह की ख्वाहिश

उसका ट्रक आज अपनी सजावट में शत्रु के मान-मर्दन करने की चुनौती दे रहा था। दिल में लाहौर फतेहयावी के अरमान, इस्पाती हाथों में ट्रक का स्टियरिंग और फौलादी कदमों के वीच इंजिन का वलच। वहादुरों की सप्लाई का जरूरी सामान भर यह शेर अपने ट्रक को मोर्चे की ओर लिये जा रहा था। पाकी जमीन में ट्रक के पहिये अपनी जीत का निशान वनाते वेतादाद चक्कर लगाते आगे दौड़ रहे थे।

खतरों के तूफान

रास्ता खतरों से भरा हुआ था, चारों ओर से वमवारी व गोलावारी की वौछार, पर इस शेर का ट्रक आगे ही दौड़ता जा रहा था। कहीं पेड़ आते, कहीं गहरा गड्ढा, पर मजाल नहीं कि हैंडिल इधर-उधर हो जाए। तोपों के गोलों की धुंआधार ने दिन में अंधेरा कर रखा था, किन्तु ट्रक आगे वढ़ता आगे ही भागा जा रहा था। मंजिल थोड़ी दूर रह गई थी, पर शेर को मौत ने वीच में ही रोक लिया। वर्की स्टेशन के पास शत्रु के एक तोप के गोले ने ट्रक और इस शेर को आजादी की कीमत चुकाने के लिए अपने को मिटाने पर मजवूर कर दिया।

जब पाकिस्तानी सेना अलहड़ स्टेशन तक खदेड़ी गई

फिल्लौरा का महान टैंक युद्ध

जम्मू की भारतीय सीमा से १० मील दूर पश्चिमी पाकिस्तान के स्यालकोट जिले में फिल्लौरा और सब्जपीर के बीच पाकिस्तानी टैंकों का मीलों तक ढेर ही ढेर दिखाई पड़ता है। इसी जगह महान टैंक युद्ध हुआ था जो दुनिया के सैनिक इतिहास में अमर हो गया। सारे विश्व के सेनापतियों ने इसका गहनता से अध्ययन किया है और वे पैटन टैंकों की उपयोगिता पर फिर से सोचने को मजबूर हो गये हैं। भारतीय सेना ने जिस रणचातुरी से इस कार्य को पूर्ण किया वह स्वर्णाक्षरों में इतिहास के पन्नों में अंकित हो गयी है। इस विवेचन से पाठकों को इसकी महत्ता का जहाँ पता चलेगा, भारतीय शौर्य, रणकौशल का गौरव भी उनके मानस पर अमिट छाप छोड़ेगा।

द्वितीय विश्व-युद्ध में उत्तरी अफ्रीका के रणक्षेत्र में मित्र राष्ट्रों तथा जर्मनी की सेनाओं का आमना-सामना हुआ और जनरल रोमेल ने मित्र राष्ट्रों की सेना को भयंकर क्षति पहुँचाई। एक ही दिन में १०० टैंक मित्र राष्ट्रों के नष्ट हुए तथा ३० टैंक रोमेल के। इतनी बड़ी हार से मित्र राष्ट्र एकबारगी थर्रा उठे। परन्तु हमारी खूबी यह रही कि हमने पहले दिन दुश्मन के ६७ टैंक तोड़े और हमारे केवल ६ टैंक टूटे। इसी से हमारे कमांडरों की महानता सिद्ध होती है। टैंक कमांडर ने कहा कि ऐसा लगता था कि पैटन टैंक मिट्टी के बने हैं और

हमारे जवान उन्हें खेल में ही तोड़े डाल रहे हैं। पर जब पैटन टैंक की भंयकरता पर ध्यान जाता, उससे निकलती आग पर निगाह जाती तो लगता जैसे अग्नि-दैत्यों की विशाल वाहिनी हो। १५ दिन लगा-तार युद्ध अपनी समस्त भयानकता के साथ चला जबकि टैंक युद्ध इतने लम्बे नहीं होते।

हमारे कमांडरों को पता चला कि शत्रु ने टैंकों की सेना इस स्थान पर एकत्रित कर रखी है। पैटन टैंक प्रमुख मात्रा में थे, भारी संख्या में और भी टैंक थे। हमने रात्रि के अंधेरे में अपने टैंकों के दस्ते उसी स्थान के निकट भेजे और शत्रु की बिना जानकारी जबर्दस्त मोर्चा बनाया और उपयुक्त अवसर की ताक में रहे। शत्रु को अपने टैंकों पर ऐसा गर्व था कि वह बेखबर रहा। वह समझता था कि काफिरों को चनों की तरह भून दिया जायेगा। पैटनों के आगे काफिरों की रक्षा पंक्ति मिट्टी के घरोंदों के समान टूटती चली जायेगी। उसे स्वप्न में भी ख्याल न था कि उस पर हमला किया जा सकता है। पैटनों पर भला हमले की कोई जुर्रत करेगा वे सोच भी न सकते थे। यही कारण था कि उन्हें हमारी मोर्चेबन्दी की खबर तक न लगी। हमने उपयुक्त अवसर पाकर इतना भंयकर हमला किया कि दुश्मन एक बार तो हक्का-बक्का रह गया। इतनी भारी मार लगाई कि धज्जियाँ उड़ा दीं। फिर क्या था पैटनों ने भयंकर अग्नि उगलनी शुरू कर दी। शत्रु ने बड़ा जबर्दस्त हमला किया। तभी हमारे कमांडर एक दाँव खेल गये। शत्रु समझ न पाया। उसके घमंड ने उसे समझाया कि काफिर भाग रहे हैं। हमारे टैंक उल्टे लौटे जा रहे थे, मानो पैटनों की आग से डर गए हों। दुश्मन ने आव देखा न ताव पैटनों को झोंक दिया आगे। इधर हमारे टैंक योजनानुसार निश्चित स्थानों तक उल्टे भागे और अपनी दूसरी रक्षा पंक्ति में मिल गए। दुश्मन बेतहाशा पीछा कर रहा था। फिर संकेत मिला और हमारे टैंक उल्टी मार मारने लगे।

पाकिस्तानी सेनापति मूर्ख बन चुके थे, उनके टैंक चारों ओर से हमारे टैंकों से घिर गए। उनके इतने टैंक आ गए कि उनके टैंकों से निकले गोले उनके ही टैंकों पर पड़े। शत्रु बुरी तरह फंस गया। जिन काफिरों को पिस्सू की तरह मसलने का इरादा लेकर उनके सेनापति चले थे उनके ही कारनामों के कारण उन्होंने अपने टैंकों की होली देखी। हमारे कमांडरों की कुशलता और जवानों की बहादुरी दोनों को हमारी विजय का श्रेय है, परन्तु कमांडरों की सूझबूझ अद्वितीय रही, इसमें कोई सन्देह नहीं। जो नक्शा हमारे कमांडरों ने अपनी व्यूह-रचना का बनाया था वह इतना पूर्ण और भयंकर था कि चाहे दुश्मन कितना ही शक्तिशाली क्यों न होता ऐसे व्यूह से बच नहीं सकता था। तभी तो पूरे अंचल में शत्रु के २४३ टैंकों को चकनाचूर कर दिया गया।

दूसरों की भीख पर अकड़ने वाले पाकिस्तान को अपनी इस भयंकर हार का अंदाज़ सही तौर पर तब लगता जब पैटन टैंकों तथा अन्य युद्ध-सामग्री पर जो इस इतिहास-प्रसिद्ध युद्ध में प्रयोग की गई अपना पैसा लगा होता। अमरीकी डालरों की होली जली, पाकिस्तान का क्या गया। परन्तु यह सही है कि उसका नशा ऐसा उतार कर रख दिया गया कि यदि आगामी युद्ध हुआ तो वह व्यावहारिक दृष्टिकोण रख और हमारे कमांडरों की कुशलता को समझ कर ही आगे कदम उठाएगा। उसने अपने गढ़ों को ढहते देखा है, उसने अपने घमण्ड को चूर होते देखा है। उसको खून के आंसू बहाने पड़े हैं। उसे अच्छी प्रकार समझ लेना चाहिए कि भारत से टक्कर लेना हँसी-खेल नहीं।

फिल्लौरा के टैंक युद्ध में भीषण हार खाते ही दुश्मन सिर पर पैर रखकर भागा। इस अंचल में यह निर्णायक मुठभेड़ थी। वह फिर जम कर न लड़ सका और स्यालकोट, पसरूर रेल लाइन पर अल्हड़ स्टेशन तक पहुँचने में हमें कुछ कठिनाई न हुई। दुश्मन की तीन डिवीजन सेना नष्ट हो चुकी थी। ७ सितम्बर को हमारी सेना ने जम्मू प्रान्त में

पाँच स्थानों पर स्यालकोट जिले में प्रवेश किया और १५ मील चौड़ा मोर्चा खोला। सबसे उत्तर की टुकड़ी सुचेतगढ़ से स्यालकोट नगर की ओर बढ़ रही थी। बाकी चार स्थानों से फिल्लौरा की ओर लक्ष्य था। चूंकि हमारा लक्ष्य शत्रु की सैनिक शक्ति को तोड़ना था, इसलिए फिल्लौरा पर ज्यादा दवाव डाला गया और स्यालकोट नगर की ओर ज्यादा प्रगति नहीं की गई। फिल्लौरा के पास ही पाकिस्तान ने टैंक और वख्तरवन्द गाड़ियां जमा कर रखी थीं।

●

अहले वतन तुझको सलाम

कर्नल बख्शी

११ सितंबर का दिन...

स्यालकोट का अभेद्य मोर्चा। पैटन टैंकों की दिल दहलाने वाली भीषण गड़गड़ाहट। ऊपर सेबरजेटों की उड़ान।

पर जो वीर सेनानी अपनी जननी जन्म-भूमि की लाज की टेक रखने के लिए इस धरा पर जन्म लेते हैं उन्हें मनुष्य द्वारा निर्मित मौत के बनावटी उपक्रम मंजिल पर आगे बढ़ने से नहीं रोक सकते। साक्षात यमराज भी उनसे टक्कर लेने में कतराता है। लैफ्टिनेंट कर्नल एम. ए. एस. बख्शी अपने भारतीय टैंकों से दुश्मनों के खैराती पैटन टैंकों को जमीन में एक-एक कर सुला रहे थे। अपनी फौज की एक बटालियन की अगली कमान संभालते हुए जवानों को हौसला-बुलंदी का पैगाम देते हुए वह आगे बढ़े जा रहे थे। शत्रु लोहा मानकर पीठ दिखाकर भागने लगा था कि अचानक कर्नल साहब का टैंक शत्रु का गोला खाकर बेकार हो गया।

अकेले दौड़ चले

टैंक-रूपी चेतक ने जब कर्नल साहब का साथ देने में अपनी मजबूरी जाहिर कर दी तब वह इस्पाती घोड़े से कूद पड़े और हाथ में रिवाल्वर लेकर अकेले ही दुश्मन की खोपड़ी तोड़ने आगे दौड़ चले। १०० गज दूर चलने पर वह अकेले एक दूसरे इस्पाती घोड़े पर

सवार हो गए और जैसे ही एक खैराती टट्टू पैटन टैंक अनूठी गर्जना करता हुआ उनकी ओर बढ़ने लगा कि उसमें उन्होंने एक हथगोला दे मारा।

शत्रु की धोखाधड़ी

पर दुश्मन आखिर दुश्मन होता है, वह मरते हुए भी कुछ करके ही दम छोड़ता है। ईख के खेत में छिपी जीप पर शत्रु की एक तोप के गोले से कर्नल का दूसरा चेतक भी काम लायक न रह सका।

इस फौलादी घोड़े का सहारा भी कर्नल साहब ने छोड़ दिया और वह शत्रु के अड्डे में घुसकर उसे 'अल्लाह का प्यारा' बनाने लगे।

पाँच दिन तक वह शत्रु का इसी प्रकार सफाया करते रहे।

............शायद भगवान के यहाँ दैत्यों और देवों का संघर्ष छिड़ गया होगा, इसलिए ईश्वर ने देवों के मोर्चे की फतेहयाबी के लिए हमसे इस बहादुर को छीन लिया।

आज कर्नल नहीं हैं, पर उनकी समाधि पर नित्य विजयश्री पुष्प माला अर्पित करने जाती है।

●

स्क्वाड्रन लीडर ट्रैवर कीलर

लगन थी ऊँचे ग्राकाश में उड़ने की, जैसे चिड़ियाँ उड़ती हैं। किन्तु तव वचपन था। जव मानसिक विकास हुग्रा तव हवावाज वननेकी लगन सार्थक हो उठी ग्रौर देश की रक्षा में सन्नद्ध कर दिया ग्रपने ग्रापको ट्रैवर कीलर ने।

एक वार एक पत्रकार ने उनकी पत्नी पैत्सी से पूछा कि ट्रैवर कीलर घर पर कैसा ग्रनुभव करते हैं तो उन्होंने जवाव दिया—" वह हमेशा ग्राकाश में उड़ने के लिए वेचैन रहते हैं। वह जमीन पर सीधे पाँव ही नहीं रखते, हमेशा उछलते रहते हैं।" इसके ग्रलावा उन्हें संगीत ग्रौर नृत्य से वहुत प्रेम है। जव वह वर्दी में नहीं होते तव कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि वह इतने वड़े उड़ाकू ग्रौर लड़ाकू हैं।

"मुझे ग्रपने पति पर वहुत गर्व है" की भावना से उनका हृदय भर गया था किन्तु कल्पना सिहर उठी ग्रौर कहने लगी—"मेरे लिए यहाँ समय बिताना वहुत मुश्किल हो रहा है जवकि वह वहाँ देश की सेवा में ग्रपना कर्त्तव्य निभा रहे हैं। मैं ईश्वर से रोज यही प्रार्थना करती हूँ कि वह दुश्मन के विमानों को गिरा कर जल्दी ग्रड्डे पर वापिस ग्रा जाएं ग्रौर ग्रपने प्यारे सुन्दर से घर में रहें।"

कितनी महानता है इन शब्दों में—"देश सेवा ही कर्त्तव्य है।" इनमें

भारतीय पत्नी का उच्चादर्श भी है जो युद्ध में ट्रैवर कीलर को प्रोत्साहन देता रहा और आगे भी देता रहेगा।

भारत-पाक युद्ध छिड़ गया और इन हवावाजों को भी मौका मिला अपना रणकौशल दिखाने का। हवाई हमले के लिए वहादुर हवा-वाज आकाश में भेजे गए। दुश्मन का सवसे अधिक जमाव छम्ब क्षेत्र में था और दुश्मन अपनी पूरी शक्ति से यहाँ वढ़ा था। पाकिस्तान ने लगभग चार हजार सैनिक, खैरात में मिले भारी तोपखाने और ६० टैंक झोंक दिए थे। १ सितम्बर को पहली वार भारतीय हवावाजों ने हवाई हमला किया और २ सितम्वर को भारत-पाक विमानों की टक्कर हुई। ३ सितम्वर को वहादुर हवाबाज ट्रैवर कीलर आकाश में उड़ रहे थे। उनकी निगाह पाकिस्तान की सीमा की ओर लगी हुई थी कि कोई यान दिखाई पड़े। तभी कीलर ने देखा कि दुश्मन का एक हवाई जहाज दाहिनी ओर से आगे वढ़कर निकट आ रहा है और उन्होंने यह भी देख लिया कि दुश्मन के यान में दो 'मिसाइल' लगे हुए हैं। मिसाइल की भयंकरता को वह खूव जानते थे। मिसाइलों से किसी विमान का वच निकलना वड़ा मुश्किल है। दुश्मन के यान को और निकट आने से पहले ही कीलर ने अपना कार्य शुरू कर दिया।

अपने हल्के-फुल्के नेट विमान को दुश्मन के पीछे लगा दिया और थ्रॉटल को वढ़ाया। यान की गति वहुत तेज हो गई और वह सूं-सूं करता हुआ दुश्मन के विमान के निकट पहुँच गया। पाक चालक घवड़ा उठा और उसने वच निकलने की वहुत कोशिश की किन्तु हवावाज कीलर उसका पीछा छोड़ने वाले कव थे और कुछ ही क्षण में वह दुश्मन के विल्कुल समीप पहुँच गए और निकट पहुँचते ही धड़ाक से गोला दाग दिया। ट्रैवर के अचूक निशाने से दुश्मन के यान का दाहिना पंख उड़ गया और विमान तिरछा हो गया। उसमें आग लग गई और वह ध्वस्त होकर जमीन पर गिर पड़ा। यह दुश्मन का पहला सैवरजेट था जिसे ध्वस्त करने वाले थे स्क्वाड्रन लीडर ट्रैवर कीलर।

युद्ध-विराम के वाद दिसम्बर में दुश्मन का आस्टर विमान (आब्जरवेशन प्लेन अर्थात् निरीक्षण करने वाला यान) आकाश में देखा गया। ट्रैवर कीलर को उसका पीछा करने का आदेश हुआ। देखते-देखते उस विमान को वहादुर हवावाज ने धराशायी कर दिया और अपनी वहादुरी का एक अन्य उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। इनके भाई डेनजील कीलर भी इन्हीं की तरह वहादुर हवावाज हैं।

एयर मार्शल अर्जन सिंह ने कीलर वन्धुओं के रण-कौशल और वहादुरी की प्रशंसा करते हुए कहा कि इन दोनों भाइयों ने अपने देश में वने नैट विमानों से खैरात में पाए हुए पाकिस्तानी सैवरजेटों को गिराकर भारत की नभ सेना की प्रतिष्ठा सारे संसार में फैला दी है।

ट्रैवर कीलर लखनऊ के रहने वाले हैं। इनके पिता श्री चार्ल्स कीलर लखनऊ में सेण्ट फ्रांसिस हाई स्कूल के हैडमास्टर रहे और अव सेण्ट मेरी स्कूल का संचालन करते हैं। इनके दो पुत्र वायुसेना में हैं और तीसरे पुत्र नैनीताल के एक स्कूल में अध्यापन का कार्य कर रहे हैं।

ट्रैवर कीलर ने सेण्ट फ्रांसिस हाई स्कूल तथा ला मार्टीनियर कालिज में शिक्षा पायी और १९५४ में भारतीय वायुसेना में भरती हो गए। वचपन से ही वह वहुत चुस्त और साहसी रहे हैं। अपने विद्यार्थी जीवन में वाक्सिंग (मुक्केवाजी) के चैम्पियन रहे। फरवरी १९६४ में वह फ्लाइंग अफसर थे। एक दिन अपने नेट विमान को १५,००० फुट ऊँचा उड़ा रहे थे कि उसमें आग लग गई किन्तु वह विचलित नहीं हुए और सधे हुए हाथों से विमान को उतार लाए। इस वहादुरी पर उन्हें वायु-सेना का पदक प्रदान किया गया और तदुपरान्त स्क्वाड्रन लीडर वना दिया गया।

पाक सैवरजेट को मार गिराने पर उन्हें राष्ट्रपति द्वारा 'वीर चक्र' प्रदान किया गया है। उनकी हवाई मार हमेशा दुश्मन को खदेड़ती रहेगी, ऐसा सव देशवासियों को विश्वास है।

●

आकाश-दूत फ्लाइंग लेफ्टिनेंट
बी० एस० पठानिया

हमारे बहादुर हवाबाज पठानिया भारत-पाक युद्ध के दौरान एफ-८६ सैबरजेट को धराशायी कर भारत के सुविख्यात हवाबाजों में गिने जाने लगे हैं।

ले० पठानिया के शब्दों में "वे (पाक हवाबाज) हमेशा हमसे बचने की कोशिश करते थे और जब हम उन्हें ललकारते तो दुम दबा कर अपने घर की ओर भाग जाते थे।" इन शब्दों से उनकी दिलेरी का पता लगता है। उन्हें भारतीय विमानों पर बहुत नाज है और इन्हीं यानों से उन्होंने अमरीका के सैबरजेटों को धूल में मिला दिया।

जिस प्रकार पाक सैनिकों को प्रलोभन दे हमने अपने क्षेत्र में घुसने का मौका दिया और फिर उन्हें दबोच लिया, उसी प्रकार हम उन्हें उकसाते भी थे और मौका देखकर घर दबाते थे। हमारे हवाबाज आकाश में ऊँचे उड़ते चले जाते ताकि पाक राडार उन्हें देख लें और आक्रमण के लिए आएं तो उनका काम तमाम कर दें। यह हमारी युद्ध नीति थी और इसका हमने पूरा लाभ उठाया।

आकाश में लड़ाई

४ सितंबर को अपरान्ह ३ बजे चार पाक हवाई जहाज आकाश में

उड़ते देखे गए। ले. पठानिया को उनका पीछा करने का आदेश हुआ। भारत का यह वीर प्रसन्नता से भर उठा। युद्ध में रणकौशल दिखाने के लिए वह हमेशा आतुर रहते थे। आदेश मिलने की देर थी कि वह तुरंत यान लेकर आकाश में उड़ चले। उन्होंने एक पाक विमान का पीछा किया, शेष तीन का पीछा उनके साथी कर रहे थे। ठीक ३ बजकर १० मिनट पर पठानिया का हवाई जहाज पाक हवाई जहाज से ६०० गज की दूरी पर रह गया। उन्होंने गति स्थिर की और निशाना छोड़ा। निशाना अचूक था और ठिकाने पर जा लगा। धप्प की आवाज हुई और यान से धुंआ निकलने लगा। फिर भी जवांमर्द हवाबाज ने पीछा न छोड़ा और ५०० गज की दूरी से दूसरी गोली दागी और तीव्रतर गति से उसी ओर अपने विमान को बढ़ाए ले चला। ३०० गज की दूरी पर पहुँच कर उन्होंने फिर गोली चलाई। पाक विमान के धुर्रे उड़ गए और इधर-उधर बिखर गए। तब कहीं हवाबाज पठानिया ने सांस ली।

अद्भुत साधना

ऐसा मालूम पड़ता था कि उन्होंने सांस साध कर शरीर के सारे अवयव विमान की गति पर केंद्रित कर दिए थे। तीव्रतर गति के बावजूद भी उनका निशाना अचूक बैठता और अपना काम पूरा करता। अचूक निशाने के बल पर ही अमरीका में बने एफ-८६ सैबरजेटों का काम तमाम हो सका। भारतीय हवाबाजों की दिलेरी के आगे कौन टिक सकता है।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट बी. एस. पठानिया की बहादुरी पर भारत सरकार ने उन्हें 'वीर चक्र' प्रदान किया है।

संभालो तुम वतन को, हम तो कूच करते हैं

लेफ्टिनेंट आहूजा ! शत-शत प्रणाम !!

जिस समय संत फतेहसिंह और मास्टर तारासिंह पंजाबी सूबे की माँग को भड़का कर देश की अखंडता को चुनौती दे रहे थे और पंजाब में दूसरे पाकिस्तान की तरह का साम्प्रदायिक गढ़ निर्माण करने की जिद में आग में जल-मरने की धमकी दे रहे थे, ठीक उसी समय सिख जाति की सदा की वहादुरी की परम्परा को कायम रखने के लिए लेफ्टिनेंट गुरुवख्श आहूजा आजादी की हिफाजत में भारत के वीरों का इतिहास पाकी दुश्मन को ललकार कर अपने लहू की लाल स्याही और राइफिल की संगीनी कलम से लिख रहे थे ।

अग्नि-वाणों की वर्षा

फ्लाइंग लेफ्टिनेंट आहूजा का वमों से भरा विमान जव दुश्मन के सिर पर मंडराता तव वह अल्लाह को याद कर उठता । सरगोधा, कसूर और चकलाला हवाई अड्डों पर वह जिस समय वम वरसाना शुरू करते दिन में अंधेरी रात छाने लगती । वाज की तरह उनका नैट आसमान से नीचे झपट्टा मारता ही दिखलाई देता या फिर निशाने पर अपना तीर वैठाकर आकाश की गहराइयों में गोता खाता हुआ । दुश्मन उनका पीछा करता तो वेचारा मार खाकर वापिस घर लौटता ।

उस दिन...

इन्हें स्यालकोट के हवाई अड्डे को निशाना वनाना था । वमों से लैस चेतक-नैट के इंजन को एड़ लगाई कि भारतीय रणजीत उड़नघोड़े

पर सवार हो गगन में दुश्मन के विमान अड्डे पर मंडराने लगा। वह बार-बार नीचे आता'''धांय'''धांय और गोले बरसाकर फिर गगन में जा चढ़ता। पर दुश्मन चाहे कमजोर क्यों न हो आखिर दुश्मन था।

हमारे इस आकाशवीर के उड़नखटोले पर दुश्मन वार करने लगा। इनका विमान गोली खाकर कमजोर हो चला। ले० आहूजा भी कई जगह अपने शरीर पर दुश्मन की गोली खा चुके थे। शरीर जख्मी हो गया। विमान का इंजन लंबी सांस लेने लगा। दुश्मन अपनी नामवरी दिखाने के लिए हमारे विमान को अपनी सीमा में गिराना चाहता था, पर ऐसा होता तब न। गंभीर घायल अवस्था, विमान बिल्कुल जवाब दे रहा था, फिर भी वह विमान को भारतीय सीमा की ओर जबरन खींचे ला रहे थे।''''''मां भारत की पवित्र भूमि उन्होंने अपनी मृत्यु-आसन्न नजरों से देखी। आंखें सार्थक हो गईं। विमान भारत की भूमि पर लड़खड़ाता आ गिरा और मां भारत का यह सपूत सिंह नीचे आते ही मां की मिट्टी में सदा के लिए सो गया।

डोगराई का बांका शूरवीर

अमर शहीद राजेन्द्र सिंह

"आपका पुत्र सिपाही राजेन्द्र सिंह मातृभूमि की रक्षा करते हुए गत २२ सितम्वर को शहीद हो गया। वह कुशल एवं वहादुर सैनिक था। दुश्मन को खदेड़ने में उसने अतुल साहस और वीरता का परिचय दिया। उसकी मृत्यु से वटालियन को भारी क्षति पहुँची है। भगवान उसकी दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं परिवार को शोक सहन करने की शक्ति दे।"

उपर्युक्त पत्र सेना के प्रधान कार्यालय से जव पिलखुवा के चौधरी वेदराम सिंह जाट के नाम आया तो पिलखुवा के डाकघर के तार वावू श्री जयपाल सिंह चौहान के मुख से अनायास ये शव्द निकल पड़े—"पिलखुवा ने भी पाकिस्तान से हो रहे युद्ध-रूपी यज्ञ में आहुति भेंट करके अपना फर्ज पूरा कर दिया" और उनका मस्तक पिलखुवा के उस रणवांकुरे जाट के चरणों में सादर झुक गया जो
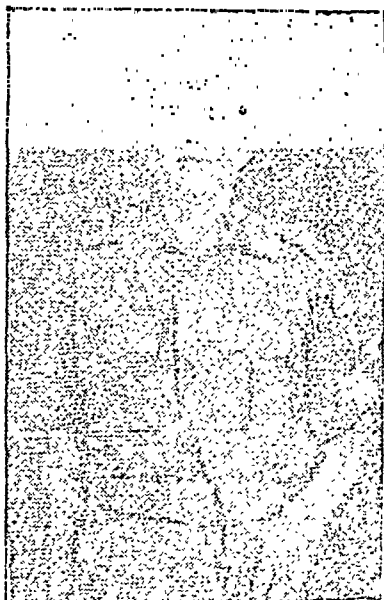
डोगराई के घमासान युद्ध में शहीद हो गया था। किसका मस्तक नहीं झुकेगा ऐसे अपूर्व बलिदान पर। जिस माँ की गोद में पले-खेले, जिस का दूध पिया, उसी माँ की रक्षार्थ यदि हम मर मिटें तो हमारा जीवन धन्य है। सच्ची भारतीय परम्परा यही है। इसी कार्य को माँ के लाल राजेन्द्र सिंह ने अपनी आहुति देकर निभाया।

जाटों की लीक पर

पत्रकार जब सन्तप्त परिवार को सांत्वना देने गए तो श्री वेदराम अपने भतीजे के साथ खेत पर थे। उन्हें सूचना मिल चुकी थी। उनका हृदय द्रवित था।

"चौधरी साहब ! आपके बहादुर पुत्र ने धर्म-युद्ध में प्राण देकर देश की रक्षा के लिये अपना बलिदान देकर आपकी समस्त पीढ़ियों के लिये स्वर्ग का द्वार खोल दिया है।" ये शब्द कानों में पड़ते ही बूढ़े जाट का दाहिना हाथ अपनी सफेद रोबीली मूंछों पर जा पहुँचा और वह ताव देते हुए बोले, "ठीक है मरना सभी को एक न एक दिन है। मेरे राजेन्द्र ने देश की रक्षा में अपनी जान देकर जाटों की लीक को कायम रखा है।" वीर पिता के उद्‌गार यही होते हैं। ऐसे माता-पिता ही बलिदानी पुत्रों को जन्म देते हैं। क्षण भर को वेदराम सिंह के चेहरे पर एक अपूर्व चमक, एक तेज कौंध गया। जब तक राजेन्द्र सिंह जैसे आत्म-बलिदानी वीर तथा कर्त्तव्य-परायण देशभक्त इन पावन-भूमि पर जन्म लेते रहेंगे, भारत कभी गुलाम नहीं बन सकता।

गीदड़ सा दुश्मन

अपनी मृत्यु के ठीक तीन दिन पूर्व अपने वृद्ध पिता को एक पत्र में राजेन्द्र सिंह ने लिखा था—"पूज्य पिता जी ! आपको मालूम होगा कि पाकिस्तान के साथ हमारी घमासान लड़ाई हो रही है। मैं इस समय अमृतसर और लाहौर के बीच पाकिस्तान सीमा के आठ-दस मील भीतर हूँ। यहां पर हमारी और पाकिस्तान की घमासान लड़ाई

हुई, परन्तु हमने दुश्मन को बुरी तरह खदेड़ कर अपने मोर्चे बहुत मजबूत बना लिए हैं। पाकिस्तानी हमारे सामने टिक नहीं पा रहे हैं। वे गीदड़ की तरह भाग रहे हैं। आप चिंता न करना। आपका बेटा सच्चा जाट का छोरा है। वह जाटों की वीर परम्परा को पूरी तरह निभाएगा।"

धन्य है तू भारत मां के बाल सपूत, तूने अपने वचन को पूरा किया। कितना ओज था उसकी वाणी में, कैसा आत्म-विश्वास भरा था उसके मन में। युद्ध के उस भीषण वातावरण में भी युवक राजेंद्र सिंह अपने खेतों को न भूला। पत्र में आगे लिखा था—"आशा है अबकी बार मक्का काफी अच्छी हुई होगी। लिखना कितनी हुई है ?"

भूख-प्यास नहीं

राजेंद्र सिंह का अन्तिम पत्र कितना प्रेरणादायी है। उसके एक-एक शब्द से देशभक्ति टपकती है। वह पिलखुवा के राजपूत इण्टर कालिज में पढ़ा। वहाँ से हाई स्कूल पास किया और चार वर्ष पूर्व जाट रेजीमेंट में भरती हो गया। १९६२ में लद्दाख के मोर्चे पर चीनी हमलावरों से लोहा लिया। लगातार भूखा रहकर अपनी राइफिल से दुश्मनों को भूनता रहा। वहां भी उसने अपने शौर्य का परिचय दिया था।

आज राजेंद्र सिंह हमारे बीच में नहीं है। सारा देश ऐसे बलिदानी वीरों के लिए तड़प रहा है। देश की मशाल को जलाए रखने के लिए ऐसे वीर ही अपने जीवन का चिराग बुझा कर कर्त्तव्य पूरा करते हैं।

धन्य है पिलखुवा की मिट्टी जिसने राजेंद्र सिंह को जन्म देकर नया इतिहास रचा। ओ पवित्र भूमि! तुझे कोटि-कोटि प्रणाम!

●

जिसकी गर्जना से पहाड़ दहलते थे

राजस्थानी सपूत कर्नल मेघसिंह

५ अगस्त से काश्मीर में घुसपैठ प्रारम्भ हुई। जिस मार्ग से घुसपैठिये भारत में प्रवेश करते आ रहे थे उस मार्ग में पुंछ सेक्टर की सीमा के ६ मील अन्दर घुसकर इन्हें पुल उड़ाने की आज्ञा हुई। इन्होंने ६० कायमखानी मुसलमान सिपाही चुन लिए। ऐसी टुकड़ी में अधिक सैनिक लेना उचित नहीं समझा। मार्ग में आई बाधाओं का सफाया करते गए। १ सितम्बर को पाकिस्तानियों ने युद्ध-विराम सीमा लांघ कर छम्ब क्षेत्र पर आक्रमण किया। उन्हें रोकना जरूरी था। उसी दिन दिन ढलने के बाद १७ जवानों की टुकड़ी के साथ वह छुपते-छिपते सात महत्वपूर्ण चौकियों को पार कर निर्दिष्ट पुल को उड़ाने में सफल हो गए। यह पुल पाकिस्तानी सीमा के अन्दर ७वीं चौकी से कोटली-बांदियावासपुर सड़क पर तीन मील आगे था और दुश्मन के लिए रसद लाने-ले जाने का प्रमुख मार्ग था। रात भर कर्नल मेघ ने अपनी टुकड़ी के साथ अपने को छिपाये रखा, और दुश्मन को विश्वास नहीं होने दिया कि इधर से कोई गुजर सकता है और ८ मील पैदल चलकर सूर्योदय से पूर्व अपने स्थान पर आ गए।
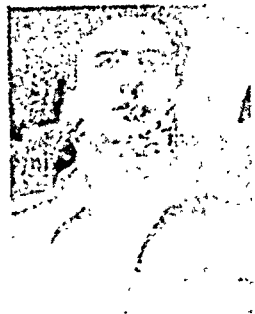
हिन्दुस्तान जिन्दाबाद

६ सितम्बर को इन्हें हुक्म हुआ कि युद्ध-विराम सीमा से पाक की सीमा में चार मील अन्दर स्थित दुश्मन की चौकी पर तुरन्त हमला करो। इस चौकी पर बंकर्स की व्यवस्था थी और ४० पाकिस्तानी मुस्तैदी से तैनात थे। प्रातः पांच बजे कायमखानी मुसलमान सैनिकों को लेकर इन्होंने इस चौकी पर कब्जा कर लिया। इसमें शत्रु के २० सिपाही कब्र जाने लायक हो गए, कुछ अल्लाह के प्यारे हो गए और दो जिन्दा पकड़ लिए गए।

शत्रु को धोखे में कैसे डालें यह उनका खास हुनर था। इसी चौकी के पास एक चौकी पर पाक सैनिकों का काफी जमाव था और उसके बचाव के लिए मेघसिंह को पर्याप्त सैनिकों (लगभग एक बटालियन) की आवश्यकता थी। वह १५ लोगों की टुकड़ी के साथ रेंगते हुए आगे बढ़े और 'हिन्दुस्तान जिन्दाबाद' के साथ धावा बोल दिया। अचानक आक्रमण से दुश्मन के पैर उखड़ गए। बेचारा अपना बहुत सा जंगी सामान लाचारी में हमको देता गया।

जंगी पुल पर भारतीय कब्जा

कर्नल मेघ ८ सितम्बर को उड़ी-पुंछ क्षेत्र में घुसे और अपने सैनिकों द्वारा वहाँ की ग्रामीण मुसलमान जनता को विश्वास दिलाया कि उनके साथ किसी भी प्रकार का दुर्व्यवहार नहीं किया जायेगा और तदुपरान्त उड़ी-पूंछ के 'बल्ज' के कुछ आगे हाजीपीर दर्रे के समीप स्थित दुश्मन का 'बेस' उड़ा दिया। कर्नल मेघसिंह ने अपने ब्रिगेडियर को सूचना भेजी कि यदि सैनिकों का एक जत्था और आ जाए तो उड़ी-पुंछ के 'बल्ज' को हाजीपीर दर्रे से मिलाया जा सकता है। ९ सितम्बर को वह ४५ सैनिकों के साथ अपनी सेना से मिलने के लिए बढ़े और लगभग २½ बजे "कहूँता" नामक पुल पार किया ही था कि दुश्मन ने आठ मशीनगनों से फायर करना शुरू कर दिया। साढ़े चार घंटे

तक घमासान युद्ध हुआ और लगभग १५० पाक सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया गया। पाक सैनिकों में भगदड़ मच गई और पुल पर हमारा आसानी से अधिकार हो गया। १० सितम्बर को ३२ सैनिकों को उस पुल की सुरक्षा के लिए छोड़ १५ सैनिकों को लेकर मेघसिंह वहां से चल दिये और उसी दिन उड़ी-पुंछ का संबंध हाजीपीर दर्रे से स्थापित कर दिया। इस संबंध से उड़ी से लगाकर लगभग हाजी-पीर दर्रे तक २०० मील पर भारतीय सेना का अधिकार हो गया।

करो या मरो

१६ सितम्बर को कर्नल अपनी टुकड़ी ले फारवर्ड पोजीशन से ६ मील पार कर दुश्मन के तोपखाने के बेस से १० गज की दूरी पर जा छिपे। दुश्मन ने चुनौती-भरे शब्दों में ललकारा किन्तु कर्नल मेघ की सूझ-बूझ के आगे कौन हौसलापस्त न हो जाता। इन्होंने अपने जवानों से फायर करने को मना कर दिया और फर्जी आज्ञाएँ देने लगे। "चाली कम्पनी ! तुम दाहिनी ओर के नाले से दुश्मन पर आक्रमण करो…" 'यस सर'…"डेल्टा कम्पनी ! तुम बाईं ओर से दुश्मन पर धावा बोलो…" 'यस सर…।' दो को आगे से और अन्य को पीछे से धावा बोलने को कहा। इस प्रकार दुश्मन को धोखा देकर अपना लक्ष्य साध लिया। घमा-सान युद्ध शुरू हुआ। सूर्योदय में केवल पांच मिनट शेष रह गए थे। तब कर्नल ने 'लड़ो या मरो' का आदेश दे दिया। हर स्थान पर दुश्मनों को मार दी और दुश्मन सैनिकों के कमांडर को भी गोली से उड़ा दिया। इसमें ५० पाक सैनिक मारे गए और लगभग ७० घायल हुए।

जांघ से खून का फव्वारा

२१ सितम्बर को इन्हें दुश्मन के तोपखाने को खत्म करने की योजना सौंपी गई। २२ सितम्बर को प्रातः ४ बजे इन्होंने इस बेस को जिसकी रक्षार्थ ३०० पाक सैनिक तैनात थे नष्ट कर दिया। इसी भीषण संघर्ष में मशीनगन का एक 'बर्स्ट' उनके कन्धे में लगा और जांघ में गोली पार

वाड़मेर क्षेत्र व्यूह-रचना, युद्ध और अनुपम कौशल

समर सिंह का अमर बलिदान

राजस्थान में पाकिस्तान की सीमा के समीप वाड़मेर क्षेत्र है। वाड़मेर और पाकिस्तान के बीच १८० मील का सीमा विस्तार है, किन्तु इस सीमा की स्थिति बड़ी विचित्र है। १९४७ के पूर्व जो अखंड भारत की स्थिति थी वही इसकी समझिए—कोई भी इसे लक्ष्मण-रेखा नहीं मानता। ऐसा लगता है कि यहाँ के निवासियों ने विभाजन स्वीकार नहीं किया है। एक किसान के ही शब्दों में—"सिन्ध सबकी माता है, रोटी देती है, पानी देती है और मरने के लिए श्मशान देती है। बादशाह (अयूब) क्या देता है? उल्टे घर-बार छीनता है।" माता स्वच्छन्द रूप से वहती हुई, क्या हिन्दू, क्या मुसलमान, सभी का प्लावन करती है। किन्तु सैनिक दृष्टि से इसका बहुत महत्व है, यह हमारे जनरलों से नजरन्दाज कैसे हो सकता था। वहाँ व्यूह रचना अवश्यम्भावी हो गया।

यहीं की मिट्टी में नीति के धुरन्धर महामान्य कौटिल्य का जन्म हुआ था। उनकी युद्ध-नीति के अनुसार "जो व्यूह-रचना अपने निजी बचाव या सुरक्षा की दृष्टि से की जाती है वह पोची और भ्रामक व्यूह-रचना है। सफल और विजयदात्री व्यूह-रचना वह है जो अपनी सुरक्षा के साथ-साथ शत्रु की छाती में शूल की तरह चुभने वाली सिद्ध हो।" इस लक्ष्य को साधते हुए विश्व के सुप्रसिद्ध जनरलों में गिने जाने वाले जनरल जे० एन० चौधरी ने इसका महत्व समझा और ऐसी व्यूह-रचना

कर डाली जो सुरक्षा की दृष्टि से पंजाब और कच्छ मोर्चे की कड़ी बन गई। एक ओर कच्छ की सुरक्षा पर दृष्टि गड़ाई और दूसरी ओर जैसलमेर होते समस्त पंजाब प्रान्त की सुरक्षा पर। साथ ही यह पाकिस्तान के हृदय में शूल सी चुभने वाली थी। बाड़मेर से गदरा सिटी की ओर हमारी सेनाओं ने बढ़कर मोर्चा मारा और यदि हम इस प्रगति को कायम रखते तो हैदराबाद होते हुए सीधे कराची पहुँच जाते और हैदराबाद और कराची दोनोंही रावलपिण्डी से विच्छिन्न हो जाते, पाकिस्तान के समुद्री बेड़े का सम्बन्ध टूट जाता और वह हमारी स्थल सैन्यशक्ति और अरब सागर में स्वच्छन्द विचरण करती समुद्री शक्ति के बीच मसल दिया जाता। इस मोर्चे से आतंकित होकर पाकिस्तान में त्राहि-त्राहि मच गई और यही आवाज आने लगी कि "भारतीय हूणों ने पाकिस्तान की पीठ में छुरा भोंक दिया है इत्यादि।" हम शान्ति के पुजारी अवश्य हैं किन्तु समय आने पर हुंकार भी सकते हैं, धनवे की भीषण टंकार भी पैदा करना जानते हैं, शत्रुओं का संहार भी बखूबी जानते हैं। इस प्रकार सामरिक दृष्टि से महामान्य कौटिल्य की युद्ध-नीति पर आधारित यह मोर्चा हमारे सेनाध्यक्षों की कुशाग्रता का ज्वलन्त उदाहरण है।

पाकिस्तान ने इस क्षेत्र में जो जवान तैनात किए थे वे अधिकतर गुन्डे और बदमाश थे। शरणार्थियों के झुन्ड में फंसे मास्टर सूरतराम ने बताया कि "उनके आसपास के दो-तीन गांवों के बदमाशों को सरेआम जलसों में फौजी तमगों से अलंकृत कर काफिरों का सफाया करने के लिए छोड़ दिया गया था। इन बदमाशों ने गांवों में बेहद ऊधम मचाया और वहां के सभी गैर-मुस्लिम बाशिंदों पर गजब के जुल्म ढाये।"

कापराऊ शरणार्थी कैम्प के भंवरसिंह सोढ़ा ने भी इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि "पिछले साल भर में सिन्ध में जगह-जगह कई मोर्चे खुले हैं जहां प्रतिक्षित मुजाहिदों को लेक्चरों द्वारा अपने कर्तव्य का बोध कराया जाता है।"

मास्टर जी ने बताया कि उन मुजाहिदों को कुरान की छपी आयतें बांटी जाती हैं और उन्हें कसम दिलाई जाती है जिसका प्रारूप सामान्यत: इस प्रकार है—"मैं इश्तियाक मुहम्मद वल्द शमशीर मुहम्मद साकिन लरकाना कुरान पर हाथ रखकर कसम खाता हूँ कि मैं अपनी जमाअत के लिए ताजिन्दगी वफादार रहूँगा और जो मकसद मुझे यहाँ बताया गया है उसे जान देकर भी पूरा करने की कोशिश करूंगा। अपने इमाम के लिए जो भी कुर्बानी करनी पड़ेगी मैं करूंगा। अल्लाहताला की जमीन को काफिरों के खून से सींचकर पाक बनाऊंगा और अल्लाह का हुक्म मानकर पाकिस्तान के खातिर उन सारे फर्जों को अदा करूंगा जिनसे काफिर नेस्तनाबूद किए जा सकें।" उनके ऊपर इसका प्रभाव कितना था उसे एक मुजाहिद के शब्दों में ही सुनिए—"आप हमें गोली मार दीजिए, मगर हम मरेंगे तो आपको गाली देकर मरेंगे।" जब इनसे पूछा गया कि काफिर क्या होता है तो उनका जवाब था "जो अयूब बादशाह को ताजीम नहीं देता, वह सबसे बड़ा काफिर है।"

किन्तु इन मुजाहिदों को खदेड़ने, हताहत करने और बन्दी बनाने में हमारे जवानों के साथ पुलिस के शौर्य, उनकी जवांमर्दी और साहस भी अपूर्व था और निश्चय ही वे स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य हैं। एक पुलिस अधिकारी ने उसका वर्णन करते हुए कहा—"कापराऊ से दस मील दूर एक टेकड़ी पर मुजाहिद तफरीह कर रहे थे। वे संख्या में २२ थे और हमारे सिपाही केवल सात। हमारे सिपाहियों ने उन्हें ललकारा किन्तु उन्होंने कोई परवाह नहीं की। हमारी गश्ती टुकड़ी और नजदीक पहुँची और फिर ललकारा। इस बार उन्होंने खफा होकर गोलियां दागनी शुरू कर दीं। हमारे जवानों ने भी मोर्चा ले लिया। पांच मिनट के दनादन फायरिंग के बाद हमारे जवान जान-बूझकर शान्त हो गए। बस क्या था मुजाहिद अपने-अपने हथियार फेंक टेकड़ी से नीचे उतरे और जिधर हमारे जवान थे उधर लपके और बेहद खुश थे। जैसे ही वे नजदीक आए हमारे जवानों ने उन्हें 'हैण्डस् अप' करा दिया और

वे कठपुतली की तरह पंक्ति बनाकर खड़े हो गए और बन्दी बना लिए गए।

इसी प्रकार १८ सितम्बर को हमारे पुलिस के तीन जवानों को ग्यारह गश्ती मुजाहिदों ने घेर लिया। तीस मिनट तक लगातार फायरिंग चलती रही। मुजाहिदों ने चट्टानों की आड़ में मोर्चा बना रखा था, इसलिए हमारे जवानों का दांव नहीं बैठ रहा था। वे रेंगते हुए काफी चक्कर काटकर उनको घेरने के लिए आगे बढ़े। आधी दूर ही पहुँच पाए थे कि मुजाहिदों ने उन्हें देख लिया। उधर से छः जवान रेंगकर बाहर निकले और हमारे जवानों की तरफ बढ़े। मोर्चे पर जो अकेला हमारा जवान खड़ा था उसे रेंज मिल गई और उसने दना-दन फायरिंग कर तीन को वहीं ढेर कर दिया। यह देखकर मुजा-हिदों के पांच जवान हमारे उस जवान पर लपके परन्तु उस ओर बढ़ रहे हमारे जवानों ने उन पांचों को जमीन सुंघा दी। अब तीन मुजाहिद शेष रह गए और तीनों ने आत्म-समर्पण कर दिया।

विभाजन के उपरान्त गदरा सिटी पाकिस्तान में चला गया था और गदरा रोड भारत का सीमान्त बना। इस पर पाक मुजाहिदों ने नृशंस अत्याचार और पाक हवाबाजों ने अपने बेशकीमती बम यहां के गंगाला और लंगेड़ा गांवों में गिराए और जघन्य से जघन्य हथियार इस क्षेत्र में प्रयोग किए। पर राजस्थानी मिट्टी के राजपूत जैसे इन सब बातों के अभ्यस्त हो गए थे। इसका श्रेय इंस्पेक्टर भोपालसिंह को भी देना होगा जिन्होंने सेनाध्यक्ष को संदेश भेजा कि "गदरा सिटी की तरफ आप कूच करें, इसके लिए गदरा रोड के निवासियों ने आपका मार्ग साफ कर दिया है। हमने पाक हमलावरों को खदेड़ा ही नहीं बल्कि एक भी मुजाहिद को नहीं छोड़ा। आप कुछ दिन में......गदरा रोड के निवासियों पर विश्वास कीजिए और इधर से होकर कराची में तिरंगा गाड़िए।" प्रत्युत्तर में सेनाध्यक्ष ने कहा—"इस मिट्टी को मैं धन्य मानता हूं। पाकिस्तान को सजा देने के लिए नागरिकों और सैनिकों ने

होड़ लगी हुई है।

स्त्रियों का साहस भी अपूर्व था। एक गाँव में स्त्रियों ने ही मुजाहिदों का काम तमाम कर दिया। वाकासर गाँव में मुजाहिदों ने दिन ढले प्रवेश किया। उस समय पुरुष खेतों में थे और खेत काफी दूर थे। मुजाहिदों को वीरता दिखाने का अवसर मिला और वह भी औरतों पर। वे एक चमार के झोंपड़े में घुस गए। उसमें एक बुढ़िया, एक जवान बहू और एक जवान लड़की थीं। पास के गाँव से मेहमानी में आयी तीन लड़कियाँ भी वहाँ थीं। मुजाहिदों ने बुढ़िया से वाहर निकलने को कहा। बुढ़िया ने मंजूर न कर जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। एक मुजाहिद ने बुढ़िया को पकड़कर वाहर घसीटा। बस क्या था, उन औरतों ने मुजाहिदों पर डंडे वरसाने शुरू कर दिए। उन लड़कियों ने डंडों की ऐसी मार दी कि राइफिलें कमर में कसी की कसी रह गई। पाँच लड़कियों ने पांच मुजाहिदों के होश ठिकाने ला दिए और बाहर खदेड़ दिया और एक ठकुरानी ने गरज कर कहा—"हथियार रख दो।" उसके हाथ में भरी पिस्तौल थी। पाँचों ने आत्म-समर्पण कर दिया। धन्य हैं वीर क्षत्राणियां भारत की सरताज। निश्चय ही ऐसा देश मार नहीं खा सकता।

'राणा का बेड़ा' और कंजरकोट यहाँ के दो सामरिक मुख्य स्थान हैं और सदैव ही पाकिस्तानियों की गिद्ध-दृष्टि इन पर लगी रही, किन्तु यहाँ के वीरों के आगे हमेशा मुंह की खानी पड़ी। एक बार जो आता उस पर ऐसी मार पड़ती कि कभी आने का साहस न करता। राणा का बेड़ा के संघर्षों में नायक समर सिंह अमर हो गया। उनकी गौरव गाथाएं, शौर्य और साहस, व्यूह-रचना और अदम्य उत्साह आज राजस्थान में लोक कंठ का रूप धारण कर चुकी हैं। उनको जिन्दा या मरा लाने पर पाकिस्तान सरकार ने २५,००० रुपये पुरस्कार की घोषणा की थी किन्तु निराश हुई और वह रण-प्रांगण में भारत माता को क्षत-विक्षत करने के इरादे से आए पाक सैनिकों को मूली-गाजर की तरह उड़ा फेंकते

और अन्त में टिथवाल क्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हुए। क्षत्राणी कुल की उनकी वीर पत्नी उनके साथ सती होने लगी किन्तु उनका पांच मास का पुत्र था। प्रत्युत्तर में उसने कहा कि देश की परम्परा के अनुसार मुझे पता था कि वह शहीद होंगे और मैं सती होऊंगी, इसलिए मैंने बच्चे को गाय का दूध पिलाने की आदत डाल दी है और उसके आगे का प्रबन्ध कर दिया है। वीर क्षत्राणी के इन उद्‌गारों से कौन रोमांचित नहीं हो उठेगा।

गदरा सिटी की मार को पाक सैनिक शायद ही कभी भुला पाएं। यहां की शौर्य गाथा के कारण लोगों की राय है कि इसका नाम 'शौर्य नगर' रखा जाए। इसे मेजर देशपाण्डे ने अपना सर्वोच्च शौर्य चढ़ाकर जीता। जब देशपाण्डे दनादन गोलियों की दुश्मन की छाती पर बौछार कर रहे थे तब ऐसा लगता था कि पच्चीसों देशपाण्डे दुश्मन का सफाया कर रहे हैं। यह कहना कठिन है कि कितनी गोलियां उनके लगीं, मगर वह काफी घायल हो गए थे। जब तीसरी गोली उनके दाएं हाथ में लगी तब मशीनगन बाएं हाथ से चलाने लगे और जख्मी शेर की तरह शत्रु पर झपटे और उनकी दहाड़ से दुश्मन कांप उठे। हुंकार भरते हुए मेजर देशपाण्डे शत्रु पर हावी रहे, धुंआधार गोलाबारी में उनकी जांघ में एक गोली लगी और वह बेहोश होकर गिर पड़े, किन्तु गदरा शहर ले लिया गया।

राजस्थान क्षेत्र में स्त्रियों, पुरुषों और पुलिस सभी ने कर्त्तव्य-निष्ठा से प्रेरित होकर अदम्य साहस के उदाहरण प्रस्तुत किए जिनके सामने प्रत्येक भारतीय श्रद्धा से नत है। सैनिकों की अपूर्व वीरता, सेनाध्यक्षों की व्यूह-रचना, उनकी कुशाग्रता सभी हमारे लिए आदर्श हैं और हमारा सिर हमेशा गर्व से उन्नत रहेगा। अनन्त काल तक उनकी शौर्य गाथाओं की कहानियां सुनाई जाती रहेंगी और इतिहास उनका साक्षी होगा। हम सभी को सादर नमन करते हैं।

•

खिलाड़ी और बहादुर अफसर

सेकिंड ले० गिरीशचन्द्र अग्रवाल

सैनिक सेवा से वंचित रह जाना उनके लिए असम्भव था। २० वर्ष की आयु में गिरीशचन्द्र फौजी नौकरी तलाशने दिल्ली गए थे लेकिन चुनाव न हो सका। १९६२ में उन्होंने एक मेजर से बात की किंतु आयु अधिक होने के कारण कमीशन में नहीं लिए गए। इन्होंने मेजर साहब से फिर कहा कि सिपाही की तरह भरती होने में तो आयु की कोई अड़चन नहीं है। अगर मुझे सिपाही के रूप में ही भरती कर लिया जाए तो क्या बात है। कितनी लगन थी देशसेवा की। बलि-वेदी पर निछावर होने और भारत माता का सुहाग अक्षय बनाये रखने की इतनी प्रबल इच्छा के कारण ही इन्होंने सेना में भरती पायी और इनकी सदा यही इच्छा रहती कि वह फील्ड एरिया में रहें।

जन्म-स्थान और शिक्षा

सदा युद्ध के मैदान में जागरूक रहने वाले गिरीशचन्द्र अग्रवाल का

जन्म बदायूँ में १६ जनवरी १६४० को हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करने के उपरान्त जून १६६३ में एस०ए० डिग्री कालिज, चन्दौसी से बी० ए० पास किया। शिक्षा के साथ अन्य गतिविधियों में भी आपका विशेष सम्मान था। फुटबाल, क्रिकेट, हाकी और टैनिस उनके प्रिय खेल थे किन्तु हाकी में पूर्णतया दक्षता हासिल की। १६६१-६२ में हाकी टीम के कैप्टेन बने और उसी वर्ष आगरा विश्वविद्यालय की हाकी टीम के भी खिलाड़ी चुने गए। १६६२-६३ में प्राक्टोरियल बोर्ड के सीनियर प्रीफेक्ट के पद पर रहे। कालिज के कई कलर्स इन्होंने प्राप्त किए। एन० सी० सी० की परीक्षाएँ भी पास कीं। १६६३ में बी० ए० की परीक्षा पास करने के उपरान्त छः माह के लिए आफीसर सैनिक कालिज, मद्रास में प्रशिक्षण लिया और २१ जनवरी १६६४ में इमरजेंसी कमीशन प्राप्त कर २२ फरवरी १६६४ को जोशीमठ के पहाड़ों पर १४ राजपूत पलटन में कार्य प्रारम्भ कर दिया।

दुश्मन के मोन पर

भारत-पाक युद्ध का बिगुल बजने पर इनका हृदय जोश से भर उठा और अपना रणकौशल दिखाने के अवसर की प्रतीक्षा में रहने लगे। अन्त में स्यालकोट सैक्टर में इन्हें भेजा गया। २० सितम्बर को दुश्मन से जूझते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए। कमांडिग आफिसर ने उनकी अपार प्रशंसा की और कहा—

पाकिस्तान युद्ध में केवल नौ जवानों के साथ जाकर अपने को सख्त जोखिम में डालकर एक भाई आफिसर का शव तलाश कर लाना उन्हीं का साहस था।"

सेना में भरती होने पर वह कहा करते थे कि "मेरे दोनों हाथों में लड्डू हैं—जिन्दा रहता हूँ तो ऊँचे से ऊँचा पद प्राप्त करूँगा और अगर लड़ाई में मारा गया तो मातृभूमि के लिए निछावर हो जाऊँगा।" 'करो या मरो' में उनका अटूट विश्वास था।

मातृभूमि पर न्योछावर हुए यशस्वी भारत के सच्चे सपूत! हम सभी आपको सादर प्रणाम करते हैं।

●

२२-वर्षीय बलिदानी

हवाबाज डी० सूरती

फ्लाइंग अफसर मर्जवान डी० सूरती ने सिर्फ इसलिए जान दी कि हम सब आजाद इन्सानों की हैसियत से जिन्दा रह सकें। इन्होंने देश को जिन्दा रखने के लिये स्वयं को समाप्त कर दिया।

२२-वर्षीय हवाबाज डी० सूरती अपने दोस्तों में 'मकी' नाम से पुकारे जाते थे। स्वभाव की सरलता और मिलनसारी उनमें भरी थी। हर कोई प्यार से इन्हें 'मकी' कहता और इनका मुस्कुराता चेहरा अनायास उसकी ओर घूम जाता।

सैनिक रूप में

३१ दिसम्बर १९६३ को मकी सेना में भरती हुए और शीघ्र ही अपने अदम्य साहस और वीरता एवं कर्त्तव्य-निष्ठा के कारण इन्होंने पदोन्नति पाई। सितम्बर में मकी को अपने युद्ध-कौशल दिखाने का मौका हाथ लगा। जितना मीठे, मिलनसार और खुशमिजाज यह अपने दोस्तों के लिए थे, उतने ही कड़वे और खूंख्वार वह दुश्मन के लिए थे। इनका हवाई जहाज जिधर मुड़ता कहर बरसा देता। इनकी झपट दुश्मनों के कलेजे को चीरती चली जाती। २७ सितम्बर को इनकी मृत्यु हो गई। भाग्य की विडम्बना कि वर्ष के अन्त में इनका अपनी प्रेयसी से विवाह होने वाला था।

मकी पूना के सैंट सेवास्चियन स्कूल और वाडिया कालिज के छात्र रह चुके थे। वह टेबिल टैनिस, बाक्सिग और तैराकी में चैम्पियन थे। अपने तीन भाई-बहनों में सबसे छोटे थे। वह अपने माँ-बाप के अलावा एक ३०-वर्षीय भाई और २६-वर्षीय बहन छोड़ गए हैं।

मकी के आत्म-बलिदान से देश का गौरव बढ़ा और देश का मस्तक ऊंचा हुआ तथा सोता देश जाग गया।

जवानों की जलती मशाल

कप्तान डा० यदुर

भारत माता के सुहाग की रक्षा करने वाले उसे क्षत-विक्षत हुआ कब देख सकते हैं। ऐसे वीर शत्रु से प्रतिकार लेना अपना धर्म समझते हैं। उसी धर्म को निभाते हुए कैप्टेन डा० यदुर भारत माता की गोद में मुस्कराते हुए सो गए।

जंगी मैदान में

सितम्बर में यह स्यालकोट क्षेत्र में भेजे गए जहां वह शत्रु से जूझ कर छक्के छुड़ा रहे थे। निर्भय हो वह सैनिकों को बहादुरी से लड़ने का मार्ग-दर्शन करते और स्वयं आगे बढ़ कर उनमें जान फूंक देते। अंत में उनके जीवन का वह सौभाग्य दिवस आ गया जब देश के प्रति अपना कर्तव्य निभाते हुए इन्होंने अपने प्राण उत्सर्ग कर दिए। १३ सितम्बर को रणक्षेत्र में धराशायी हो गए और उनके प्राण-पखेरू उड़ गए। भारत माता को अपने ऐसे वीर पुत्रों पर गर्व है और उसी से उसका मार्ग प्रशस्त है। इन वीरों में तेरी मिट्टी ही है जो कर्त्तव्य की याद दिलाए रहती है।

छोटी उम्र के शेर

इतनी छोटी आयु में ही भारत माता पर अपने प्राण निछावर करने वाले कैप्टेन डा० यदुर का देश आभारी है। डा० यदुर मध्य प्रदेश के कृषि विभाग के संयुक्त संचालक श्री रामाराव के सुपुत्र थे। १९४० (द्वितीय महायुद्ध के दौरान) इनका जन्म हुआ था। सर्वगुण-सम्पन्न प्रतिभा वाले तेजस्वी व्यक्ति थे। इनके आकर्षक व्यक्तित्व से हरेक प्रभावित हो जाता था। इन्दौर और भोपाल में मेडिकल कालिज में आपका विद्यार्थी जीवन बीता और वहां के शिक्षण उपरान्त १९६३ में भारतीय सेना में भरती हो गए। १३ सितम्बर को सदा के लिए भारत माता की गोद में विश्राम करने चले गए। उनके प्रति हमारी विनम्र श्रद्धांजलि है।

पिलबाक्स तोड़ने वाले वीर सेनानी

गुरनामसिंह और बालमराम

युद्ध-कला के इतिहास में एक प्रयोग था पिलबाक्स। इसके द्वारा दुश्मन मार भी करते हैं और अपनी सुरक्षा भी बनाए रखते हैं। इन्हें बिना तोड़े दुश्मन पर अधिकार जमाना कठिन है पर इनको तोड़ना कठिन ही नहीं अपितु असाध्य है। इसी विश्वास को मान्यता भी दी जाती है। हिटलर ने भी पिलबाक्सों को नहीं तोड़ा। पैराशूट उतार कर फ्रांस की सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया और पिलबाक्सों को अपनी कारगुजारी दिखाने का मौका नहीं दिया। किन्तु भारतीय जवानों ने 'असम्भव' कोई बात सीखी ही नहीं और पाकिस्तान द्वारा बनाए गए पिलबाक्सों को तोड़ने का बीड़ा उठाया।

लांसनायक गुरनामसिंह और बालमराम आगे आए और उन्होंने पिलबाक्सों को तोड़ने की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ली। रात के घुप अंधेरे में पिलबाक्सों से धुआंधार बरसती गोलियों से अपने आपको बचाते उनकी ओर बढ़ने लगे। साथ में दो टोलियां और भी चलीं। तीनों टोलियां सांप की तरह रेंग रही थीं और एक ही पिलबाक्स पर लक्ष्य था। तीनों टोलियां बिना आवाज किए आगे सरक-सरक कर बढ़ रही थीं। पिलबाक्सों से और उनके पीछे सधी तोपों और मशीनगनों से गोले-गोलियों की बौछार इतनी तेज हो रही थी कि आगे बढ़ सकना कठिन हो गया। दो टोलियों ने जवाब दे दिया और केवल गुरनामसिंह और बालमराम की टोली आगे बढ़ने की अपनी गति को कायम रख सकी। पिलबाक्स के कुछ निकट पहुंच कर फूंक जैसी आवाज हुई—"कहिए, यही तीस-पैंतीस गज' और सारी बात स्पष्ट हो गई उसमें। कितना केन्द्रित मस्तिष्क था उस समय।

वहाँ से बालमराम और गुरनामसिंह दो दिशाओं में बंट गए। बालमराम बायें होते हुए पिलबाक्स के पीछे की ओर बढ़ रहा था और गुरनामसिंह दायें होता सीधा आगे। योजना के अनुसार गुरनामसिंह पाकिस्तानी सैनिकों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करना चाहता था ताकि बालमराम पीछे से उसे तोड़ सके।

पाकिस्तानी सैनिकों ने गुरनामसिंह को अपनी ओर आते देख लिया और उस अकेले ज़वान पर गोलियों की बौछार कर सावन की झड़ी लगा दी। किन्तु गुरनामसिंह किसी प्रकार अपने को उनसे बचाता रहा और पिलबाक्स के इधर-उधर मंडराता रहा। इस दौरान पिल-बाक्स में छिपे हर पाकिस्तानी जवान का ध्यान उस पर केन्द्रित हो गया। इससे इधर-उधर का उन्हें ख्याल ही न रहा। पीछे से बालमराम अपना कार्य करने में संलग्न था। अंधेरा था, कुछ दिखाई नहीं पड़ रहा था। टटोलते-टटोलते उसे खिड़कीनुमा द्वार मालूम पड़ा। उसे दबाने पर वह खुलने लगा। उससे जरा भी चूक होती तो मामला साफ था और दोनों जवानों को जिन्दगी से हाथ धोना पड़ता, किन्तु भगवान उनके साथ था। तुरन्त कार्रवाई का सम्यक् विचार उनकी रक्षा कर रहा था। बालमराम ने तुरन्त हथगोला निकालकर पिलबाक्स पर दे मारा। उसी क्षण पिलबाक्स की छत ध्वस्त हो गई।

विस्फोट हुआ और उसकी गरज से पाकिस्तानी जवान सहम उठे। बालमराम और गुरनामसिंह हवा की गति से तेज अपने क्षेत्र की ओर भागे जहां उनकी टुकड़ी उनका इन्तजार कर रही थी। मेजर और उनके जवानों ने बालमराम और गुरनामसिंह को गले से लगा लिया। वे बड़े आतुर-भाव से उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे। हनुमान जब लंका जलाकर लौटे थे तब उनका जो स्वागत किया गया था वही स्वागत बालमराम और गुरनामसिंह का अयूब खां का गढ़ जलाकर लौटने के उपरान्त हुआ। मस्ती और गुलगपाड़े में छनते प्राची से सूर्य किरणें फैल गईं और उनकी लाली इस बात का संकेत दे रही थी कि दुश्मन की धरती को इसी प्रकार लाल कर दो। हमारे जवान पुनः अपने कर्त्तव्य में संलग्न हो गए।

●

वीर मां का सपूत

मेजर यशवन्त गोरे

अमर शहीद मेजर यशवन्त गोरे आज हमारे बीच नहीं हैं, पर उनकी वीरताभरी कार्रवाई हमारी आंखों के सामने चमक रही है। गोरे रायपुर साइंस कालिज में बी. एस सी. में सर्वप्रथम रहे। सागर युनिवर्सिटी से एम. एस सी. किया। अमर शहीद ३ सितंबर को रायपुर थे कि मां ने उन्हें अपनी सीमा रक्षा के लिए बुला लिया। ५ सितंबर की रोमाँचकारी घड़ी थी जब मेजर अपनी कमान सहित शत्रु को भुनगों की तरह भून रहे थे। जिधर शहीद यशवंत के प्रलयंकारी नेत्र घूम जाते शत्रु का दल धू-धू कर जल उठता, पर ऐसे वीरों को इस लोक में ज्यादा दिन ठहरना नहीं भाता और मेजर भी इसी परंपरा को निभाते हुए हमें छोड़ लोकगामी हो गए।

धरती सा धीरज

शहीद मेजर यशवंत जैसे भारत के लालों की वीरगति से सारा देश दुखी है, पर दुख के सागर में डूबे इस परिवार में मेजर के पिता का धरती जैसा धीरज हर भारतीय के लिए आदर्श बन गया है। तभी शकुन्तला ने आंखें पोंछ कर अपने ससुर को कभी न रोने का वचन दिया और उस दिन से शकुन्तला ने रोना बंद कर दिया। सबकी आंखों से आंसू झरते हैं, पर यह पत्नी दुख की साक्षात प्रतिमा बनी बैठी रहती है, आंखों से भावनाएं झरती हैं पर आंसू नहीं बहते।

शहीद मेजर के ६६-वर्षीय पिता श्री गोविंदराम गोरे से जब लोग मिलने आते हैं और संवेदना प्रकट करते हुए रो पड़ते हैं तो वीर पिता उन्हें समझाते हैं—"मृत्यु के परिणाम को वीरता से सहना चाहिए। अब वह मेरे अकेले का पुत्र नहीं रहा, राष्ट्र के वीरपुत्र ने वीरगति पाई है।"

तुम्हें अमरत्व दे गया

जब माता के पुत्र-शोक में आंसू नहीं थमते तो उन्हें भी धीरज देते हुए कहते हैं—"यशवंत की साधारण मृत्यु होती तो तुम्हें कौन पूछता, वह तो तुम्हें अमरत्व दे गया। सारा देश तुम्हारे यशवंत के लिए रो रहा है। हमारा दुख हजारों व्यक्तियों ने उठा लिया है।"

पुत्र-वियोग से दुखी होते हुए भी वह शहीद की पत्नी शकुन्तला को ढाडस देते नहीं थकते। शकुन्तला जब रात को चौंक कर सोते-सोते उठ बैठती है तब ससुर भी जरा सी आहट पाते ही उठ जाते हैं और उसे समझाते हैं—"बेटी! यशवंत ने तुम्हें बड़ी जिम्मेदारी सौंपी है, ऐसे शोक करोगी तो उसकी आने वाली संतान पर क्या असर होगा। यशवंत की आत्मा को इससे दुख पहुँचेगा, उसकी शांति भंग न करो।"

जहाँ भारतीय शौर्य के सामने मौत हारी

बर्की का मोर्चा

पाकिस्तान ने छम्ब प्रदेश में जो आक्रमण किया था उसे थोथा और विफल करने के लिए हमारी सेना को बाड़मेर से स्यालकोट तक के लम्बे क्षेत्र में चार-पांच मोर्चे खोलने पड़े। पाकिस्तान को स्वप्न में भी ख्याल न था कि भारत उसके आक्रमण का जवाब इतनी भयंकरता से देगा। कच्छ के मोर्चे पर अपने टैंकों और सैबरजेटों के सामने हमारी कर्त्तव्यमूढ़ता मार्शल अयूब पहिचान गये थे। इसीलिए पाकिस्तान ने अपनी मनपसन्द जगह से कच्छ क्षेत्र में हम पर हमला किया। अपनी इस व्यूह-रचना का बहादुरनामा राष्ट्रपति अयूब ने बढ़ा-चढ़ाकर लिखा और संसार के प्रत्येक बड़े देश में उसका प्रचार किया। पश्चिमी संसार अयूब को एशिया का उदीयमान नेता मानने लगा। परन्तु उनके ख्वाब भारत के इस बार के जवाबी हमलों ने चूर-चूर करके रख दिये। खालड़ा से जहाँ से पाकिस्तान का इलाका शुरू होता है बर्की तक पहुँचने में हमारी फौजों को जो देरी हुई उसका असली कारण पाकिस्तान की वह किलेबन्दी थी जिसे वह पिछले दस वर्ष से चुपके-चुपके इच्छोगिल नहर को आधार बना कर निर्माण कर रहा था। वहाँ खेतों में कंकरीट फौलाद के पिलबाक्स इस प्रकार बने हुए थे मानो वे अचल टैंक हों।

यह इतने मजबूत थे कि इन्हें एक हजार पौंड का बम भी नहीं तोड़ सकता था। इन पिलबाक्सों से कुछ घन्टों तक ऐसी आग बरसी कि हमारी सेना की प्रगति रुक गई, परन्तु धन्य हैं हमारे वीर

जिन्होंने अपनी जान की परवाह न कर अत्यन्त कठिन परिस्थितियों में इन पिलबाक्सों को तोड़ा और हमारी सेना के लिए आगे का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इसका श्रेय हमारे दो जवानों को है जो आग उगलते पिलबाक्सों को हथगोलों से तोड़ सके। लगातार दो पिलबाक्स तोड़ने के बाद जब ये जवान तीसरे पिलबाक्स की तरफ बढ़ रहे थे तब वहीं शहीद हो गये। इनकी वीरता से प्रभावित होकर उस सेना के कर्नल ने कहा—"हम विजय को भूल जायेंगे, इस युद्ध को भी भूल जायेंगे, पर इन शहीदों को कभी नहीं भूल सकेंगे जिन्होंने हम सबके भीतर श्रेष्ठ शौर्य की अग्नि प्रदीप्त की है।" इच्छोगिल नहर की किलेबन्दी ने हमारे कई जवानों की जानें लीं। ले० हरिदत्त सिंह इसी मोर्चे पर शहीद हुए। गठीला शरीर, अंग में फुर्ती, नेत्रों में दृढ़ निश्चय लिये हरिदत्त सिंह अपने जवानों के लिए वीरता के अवतार थे। पहले ही खेप में उनकी कमान ने नहर पार कर ली थी परन्तु फिर पीछे हटना पड़ा। इसी लड़ाई में एक गोले से उनकी दोनों टाँगें कट गईं और वह मृत्यु की गोद में सो गये। वीर जवान बालमराम ने इसी मोर्चे पर कई पिलबाक्सों को तोड़ कर अपार साहस का परिचय दिया।

खालड़ा चुंगी से आगे पाकिस्तान के इलाके में रेगिस्तान सा है। गाँव में बिजली तो है ही नहीं। जगह जगह "ज्यादा अनाज पैदा करो" के नारे उर्दू में लिखे टंगे हैं, पर फसलों के नाम पर पंजाब की अन्नपूर्णा-भूमि का जैसे मजाक हो। अयूब के तानाशाही शासन ने जनता के गले में अनाज की जगह युद्ध का नारा उंडेला और भूखी-नंगी जनता को भीख में मिले शस्त्रों से लैस करके युद्धस्थल में खड़ा कर दिया।

बर्की के युद्ध में भारतीय सेना ने जिस शौर्य का परिचय दिया वह भारत के बलिदानी सूरमाओं की याद कराता है। ले० सुखवीर सिंह के रणकौशल व वीरता को इच्छोगिल नहर कभी न भूलेगी। ले० सुखवीर सिंह ने जो पत्र अपने पिता को लिखा (इनका जीवन-

चरित्र इस पुस्तक में अन्यत्र विस्तार से पढ़ें) वह देश के प्रत्येक नवयुवक को प्रेरणा देगा। सुखवीर सिंह को वर्की मोर्चे पर एक चौकी पर कब्जा करने का काम सौंपा गया। सुखवीर आंधी की तरह बढ़ चला। उनके इस शौर्य को देख कर उनकी टुकड़ी दूने उत्साह से आगे बढ़ी। चौकी पर तिरंगा फहर गया परन्तु सुखवीर सिंह का वलिदान हो गया।

वर्की पर दुश्मन ने बड़ी पक्की और मजबूत मोर्चाबन्दी की थी। जगह-जगह पिलवाक्स थे। गांव के पीछे नहर की तटवर्ती दीवारों पर मशीन-गनें अड़ा रखी थीं। भारतीय फौजों ने १० सितम्बर को वर्की पर हमला किया और उस पर फतेह पाने के लिये भारतीय सेना के कई जवानों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। 'महावीर चक्र'-विजेता (मरणोत्तर) सूबेदार अजीतसिंह के वलिदान का क्षेत्र भी यही है। मशीन-गन की गोली खाकर भी उन्होंने हथगोले से दुश्मन की चौकी उड़ा दी। हवलदार अजमेरसिंह रेंगते-रेंगते दुश्मन के बंकर तक जा पहुँचे। घायल होते हुए भी आगे बढ़ते रहे। लांसनायक प्रीतमसिंह फुर्ती से छलांग मार कर दुश्मन की चौकी पर झपटे। एक तोपची को स्टेनगन से मारा, दो को गोली और संगीन से मारा। बुरी तरह घायल होते हुए भी उन्होंने आगे बढ़कर दूसरे बंकर पर हमला बोल दिया। उनकी इस वीरता पर उन्हें 'वीर चक्र' से सम्मानित किया गया।

जब हमारी फौजें वर्की से लगभग ३०० गज दूर थीं तब एक मेजर की जो एक कम्पनी का नेतृत्व कर रहे थे जांघ में गोली लगी, परन्तु अपनी चोट की बात छिपाकर वह एक पिलवाक्स से दूसरे पर हमला करते रहे जब तक उन्होंने जीत प्राप्त न कर ली। अगले दिन उन्हें इलाज के लिये भेजा गया। वर्की कस्बे पर कब्जा करने के बाद हमारी फौजें वर्की पुल की ओर बढ़ीं। यहां भी हमारे जवानों ने वह वीरता दिखाई कि दुश्मन टिक न सका। परन्तु इससे पहले कि हमारी सेना पुल पार करती दुश्मन उसे तोड़ चुका था।

भारत के वीरों ने इस युद्ध में जिस वीरता और शौर्य का परिच दिया वह भारत के लिये तो नया नहीं है पर संसार के लिये आश्चर्य की वस्तु जरूर है। इस युद्ध से सबसे अधिक आश्चर्य इंगलैण्ड को हुआ जो स्वप्न में भी यह विश्वास न करता था कि भारत ऐसी दृढ़ता दिखाएगा। उसके जिस राज्य में सूरज कभी न डूबता था उसी राज्य का सूरज सर्वप्रथम भारत ने ही डुबोया था। भारत की लूट पर अपने साम्राज्य का नक्शा बनाने वाला इंगलैंड अब समझ गया है कि भारत शक्तिशाली राष्ट्र होकर रहेगा।
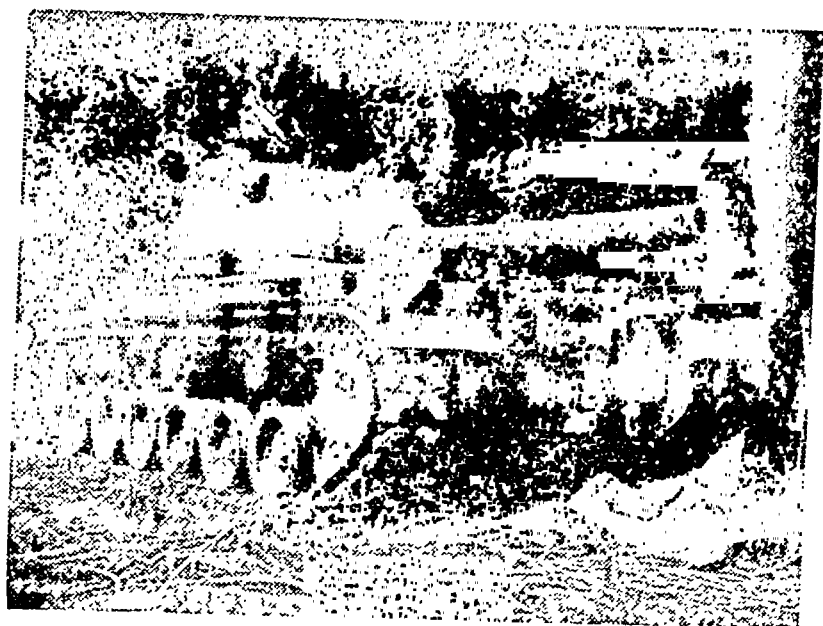
पैटन टैंक

●

अंसैनिक वीर भारत मां के जंगबाज सिपाही निकल

जंग कभी लड़ी नहीं, जंग जीत कर लौटे

लड़ाई का बिगुल बज उठा। विभिन्न मत-मतान्तर, भाषावाद, भौगोलिक मतभेदों की अनेकता वाला समग्र राष्ट्र एकता के सूत्र में बंध गया और नर, नारी, बूढ़े, बाल सभी ने अपना यथोचित कर्त्तव्य बखूबी निभाया। लव-कुश, गोरा-बादल और आल्हा-ऊदल जैसे उदाहरण प्रस्तुत करने वाले नन्हें वीर यशपाल (१४ वर्ष) और सुभाष (११) देश के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में अपना नाम अमर कर गए। घटना इस प्रकार है—१ सितम्बर को पाकिस्तान ने अंतर्राष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन किया और घुसपैठियों को भेजकर अराजकता की स्थिति उत्पन्न करनी चाही। यहीं एक स्थान मनावर है। यहां सेना की तैयारी न होने के कारण भगदड़ मच गई। उसी में ये दोनों प्यारे बच्चे अपने मां-बाप से बिछुड़ गए। झाड़ियों की आड़ लेते-दुबकते, छिपते, धैर्य रखते हुए किसी प्रकार वे दोनों पुलिस चौकी पर पहुँच गए। सेना के अभाव में पुलिस के सिपाही अपने कर्त्तव्य का पालन करने को उद्यत थे और तत्काल प्रस्थान करने को ही थे कि बालक पहुँच गए। उनको उनके माता-पिता के पास पहुँचाने का आश्वासन दे और अपने साथ ले पुलिस ने मोर्चा खोल दिया। घमासान युद्ध हुआ। हमारे सिपाहियों का प्यास के मारे बुरा हाल था। हलक सूख रहे थे। ओठों पर खुश्की थी, मुंह से बोल नहीं निकल रहा था, किन्तु संख्या के अभाव के कारण वे वहां से हट भी नहीं सकते थे। फिर कुआ भी वहां से दो फर्लांग दूर था। बड़ी समस्या थी। इन बालकों ने उनकी समस्या का

अध्ययन उनके भावों से किया। कितनी कुशाग्रता होती है भारतीय बालकों में किन्तु उनका विकास अनेकानेक अभावों के कारण रुक जाता है। वे तुरन्त पानी लाने को तैयार हो गए। यशपाल और सुभाष रेंगते-रेंगते कुए तक पहुँचते और पानी लेकर उसी स्थिति में वापिस आते। गोलियों की बौछार होती रहती। पानी लाकर सिपाहियों को पिलाते और उनमें जान फूंक देते। दुगने उत्साह के साथ सिपाही फिर सन्नद्ध हो जाते। पानी समाप्त होते ही फिर जाते, फिर आते। इस प्रकार छः बार उस कुए तक रेंगते-रेंगते चौकसी के साथ गए और पुनः वापिस आकर सिपाहियों को पानी पिलाया। क्या यह कुशाग्रता नहीं है, साहस नहीं है, कर्त्तव्य-पालन का उच्च उदाहरण नहीं है? प्रातः होते ही उन्हें उनके मां-बाप के पास सुरक्षित पहुँचा दिया गया। धन्य है वे माँ-बाप जिन्होंने ऐसे बालकों को जन्म दिया। निःसंदेह यशपाल यश का भागी बनेगा और सुभाष अपनी सुगंध से विश्व को सुवासित करता रहेगा। इन दोनों बालकों के उज्ज्वल भविष्य की हम हृदय से कामना करते हैं।

ट्रक ड्राइवरों का साहस

ट्रक ड्राइवरों को हम हेय दृष्टि से देखते हैं और कहते हैं कि शराब के नशे में धुत में ये तेजी से गाड़ी चलाने के अलावा जानते ही क्या हैं। 'एक्सिडेंट' की इनको परवाह नहीं। किसी की जान जाए इन्हें समवेदना नहीं होती, बड़े निकृष्ट होते हैं ये, पर बात ऐसी नहीं है। भारत-पाक युद्ध के दौरान ट्रक ड्राइवरों ने जो योगदान दिया वह अविस्मरणीय है और हमारी विचार तन्द्रा को एकदम बदल देता है।

लड़ाई के दौरान असैनिक लोग सुरक्षा की दृष्टि से दूसरी पंक्ति में ही कार्य करते हैं। किन्तु अग्रिम मोर्चो पर माल पहुँचाना था, असैनिक ट्रक-ड्राइवर मांगे गए। उन्होंने अपने को धन्य समझा और सहर्ष अपनी सेवाएँ अर्पित कीं। कौन जल्दी माल पहुँचाता है, उनमें होड़-सी लग गई। वे तेज-से-तेज ट्रक चलाते क्योंकि उस समय की आवश्यकता ही कुछ ऐसी

थी। घना अंधकार था, एक दूसरे की शक्ल दिखाई पड़ना भी मुश्किल था। वृक्ष तथा अन्य बाधाओं को पार कर अग्रिम मोर्चे पर पहुँचते और यथासमय हथियार इत्यादि अपेक्षित वस्तुएं सैनिकों के पास पहुँचाने में अपने कर्त्तव्य की इतिश्री मानते थे। हवाई-हमले के समय थोड़ी देर को उनको आराम मिल पाता, किन्तु कुछ इतने तत्पर थे कि आज्ञा मिलते ही उस स्थिति में भी आगे की ओर प्रस्थान करते। क्या नींद, क्या खाना, क्या पीना, क्या आराम, सब कुछ हराम था। वास्तव में स्वर्गीय नेहरू जी के शब्द "आराम हराम है" इन लोगों ने चरितार्थ कर दिए। युद्ध के अग्रिम मोर्चों पर खाने-पीने की चीजें, बारूद तथा अन्य सामान पहुँचाया। दुश्मनों ने इन पर हमले किए, कितने ही घायल हुए और कितने ही वीरगति को प्राप्त हुए। पर देशभक्ति से प्रेरित इनमें उत्साह की भावना बनी रही। इन्हें कई बार आगे जाने को मना भी किया गया, किन्तु वे कहते—"मैं जानता हूँ कि आगे खतरा है और मुझे गोली लग सकती है, लेकिन गोली हर किसी को लग सकती है जो आगे रसद पहुँचाने जाएगा। यदि मेरा समय पूरा हो गया है तो मुझे कोई बचा नहीं सकता। अगर ईश्वर को मुझे बचाना ही है तो मुझे विश्वास है वह गोली अभी तक नहीं बनी जो मुझे मारेगी।" कितना आत्म-विश्वास था असैनिक वीरों में, कितनी निष्ठा थी उनकी परम-परमेश्वर में। जिसका निमित्त सर्व-व्यापी अलौकिक सत्तावाला भगवान हो गया, वह निडर, साहसी, कर्त्तव्यनिष्ठ और धर्मपरायण हो गया।

जालन्धर के एक ट्रक ड्राइवर सरदार चरणसिंह का लड़का उनके साथ ट्रक क्लीनर की हैसियत से काम करता था। बाप-बेटों ने खालड़ा और बर्की के बीच जान हथेली पर रख कर कार्य किया। जालन्धर के २०-वर्षीय सेवासिंह और अमृतसर के उनके ही एक मित्र संतोखसिंह ने स्यालकोट में हथियार सुरक्षित रूप से पहुँचाए। युद्ध मोर्चे से घायल व्यक्तियों और पाकिस्तान युद्धबन्दियों को लाने का काम सादगाराम तथा उनके ड्राइवरों ने बखूबी किया। ट्रक मालिक भगवानदास और

उनके ड्राइवर खैराती ने फाजिल्का में सात दिन तक लगातार ट्रक चलाया। गोला-बारूद को दुश्मन की बमवारी से बचाया। वह अंधेरे में विना बत्ती सारा कार्य सुचारु रूप से करते। इसी प्रकार लगभग १० हजार ड्राइवरों तथा उनके सहयोगियों ने संकट के समय महत्वपूर्ण योगदान दिया। पत्रकार सम्मेलन में सेनाध्यक्ष जनरल चौधरी ने स्वयं कहा—"मैं असैनिक ट्रक ड्राइवरों के कार्य की हृदय से प्रशंसा करता हूँ।" अग्रिम मोर्चे पर सेना के एक जनरल ने कहा—"भारतीय सेना असैनिक ट्रक ड्राइवरों के साहसपूर्ण कामों को कभी नहीं भुला सकती।" धन्य हैं वे ट्रक ड्राइवर जिन्होंने देश की सेवा इतनी तत्परता से की।

इसके अतिरिक्त सीमा के निकट ग्रामीण जनता का भी सहयोग पूरी तरह मिला। वहाँ के सरपंचों ने बड़े धैर्य और साहसपूर्ण तरीकों से गाँव का सुव्यवस्थित संचालन किया। भारी गोलीवारी और बमवर्षा के दौरान भा वहीं रहने का निश्चय किया ताकि समय आने पर अपने जवानों की हर सम्भव सहायता कर सकें। वान, डल, दातिरी, माडीकमोड, माडीउठोक, माडीमेघन और वीसियों अन्य गांवों के सरपंचों को भली प्रकार पता था कि उनकी जरा-सी भी लापरवाही से गांववालों के हौसले टूट सकते हैं किन्तु उनकी कुशाग्र बुद्धि इस वात का परिचायक है कि उन्होंने धैर्य और साहस वनाए रखने में कोई कसर उठा नहीं रखी। इसके अतिरिक्त वे जवानों के लिए रास्ता वनाते और दुश्मन की टोह लेने के लिए उसके स्थानों पर जाते, जवानों के लिए भेजे माल को सिर पर लादकर पहुँचाने में उन्हें गर्व का अनुभव होता। गोलावारी उनके वढ़ते कदमों को नहीं रोक पाती थी और प्रत्येक ग्रामीण अपनी वारी की प्रतीक्षा का इन्तजार वड़ी चाह से करता था।

सैनिकों के साथ असैनिक व्यक्तियों के जिन्दादिल कारनामों को भी भुलाया नहां जा सकता। निस्संदेह उन सभी का कार्य सराहनीय था। हम सव अपना आदर भाव उन्हें समर्पित करते हैं और कर्त्तव्य में रत रहकर जो वीरगति प्राप्त कर गए उन्हें अपनी श्रद्धांजलि सादर समर्पित करते हैं।

●

मेरठ की पावन भूमि का अमर सपूत

से० ले० लक्ष्मणसिंह मोदी

धन्य है मेरठ—तेरा भी कोई जवाब नहीं। जब अंग्रेजों के अत्याचारी शासन से जनता प्रताड़ित थी तब १८५७ में आग की ज्वाल यहीं से भड़की थी और वह ज्वाला समर्थ साक्षात देव बन सारे भारत पर छा गई थी जिसका मुकाबिला अंग्रेजों के लिए दुरूह हो गया था। जब पाकिस्तान हाथ-पैर फैलाकर अपने नापाक इरादों से भारत के सुरम्य, रमणीक स्थान काश्मीर को हड़पने की कोशिश में लगा तब पाक के इन नापाक इरादों को खत्म करने के लिए भारत ने अपनी मिट्टी में पले असंख्य जवानों को सीमांत पर भेज दिया। मेरठ के कितने ही वीर शहीद हो चुके हैं—आशाराम त्यागी, रणवीरसिंह, सुखवीरसिंह की अपूर्व वीरता ने दुश्मन के हौसले पस्त कर दिये। लेफ्टिनेंट लक्ष्मणसिंह मोदी ने भी अपना नाम उसी टोली में जोड़ दिया है।

शहीद की समाधि

लक्ष्मणसिंह मोदी छम्ब क्षेत्र में दुश्मन से लोहा लेते हुए शहीद हो गए। वह मेरठ से १२ मील दूर रोहता ग्राम के रहने वाले थे। उनकी माँ आदर्श भारतीय नारी हैं और घर का काम-काज संभालते हुए अपने शेष चार बेटों को शिक्षा दे रही हैं। उनकी बड़ी इच्छा है कि उनके बाकी बेटे भी फौज में भरती हों।

रोहता ग्राम के १५० जवान सेना में भरती हैं। २१ जवान और भी भरती हो रहे हैं। इस गांव के श्री ताराचन्द ने कहा—'देश की

स्वतन्त्रता और प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए हर आदमी को सैनिक तथा हर घर को दुर्ग बन जाना है।" श्री रघुवीर सिंह हरिजन की धर्म-पत्नी का विचार है कि "देश की सेवा सबसे बड़ी सेवा है।" उनके तीन बेटे फौज में हैं और दो जल्दी ही भरती हो जाना चाहते हैं, फिर भी उन्हें असन्तोष है और अपने पड़ौसी धारा सिंह से बड़ी ईर्ष्या है। ईर्ष्या का कारण : धारा सिंह के नौ बेटे और भतीजे फौज में हैं ! धन्य है मां, वास्तव में तू देश की मां है, इसलिए मोर्चे पर लड़ रहा हर जवान तेरा बेटा है। रघुवीरसिंह वृद्ध हो चुके हैं किन्तु उनकी प्रबल इच्छा है कि वह स्वयं भी मोर्चे पर जाएं।

अन्त में यही कहना पड़ेगा धन्य है मेरठ—तेरी मिट्टी और तेरे जवान। आज लक्षमणसिंह मोदी न रहे किन्तु उनकी देश-भावना गाँव में व्याप्त है और हरेक उनको अपना आदर्श मान रहा है।

भारत का भाल अब भी विश्व में गर्व से चमक रहा है। उसकी मिट्टी में पला प्रत्येक वीर अडिग है और साहसिकता में एक से एक बढ़ कर है। वे ऐसे वृक्ष हैं जो भयंकर तूफान और आंधी में चरचरा कर टूट तो सकते हैं किन्तु झुक नहीं सकते। भंयकर स्थिति में मनोबल बनाए रखना उनका ऊंचा आदर्श है और अन्तिम साँस तक भी शत्रु पर प्रहार करने से नहीं चूकते। ऐसे अडिग, साहसी, सजग वीरों को कौन नमन नहीं करेगा। वे सीमान्त के सजग प्रहरी हैं और सिंह के समान उसकी रक्षार्थ जुटे हैं।

भारत के वीर पुत्र सजग खड़े हुए
सीमा के प्रहरी बन सिंह से अड़े हुए

दुश्मन की मौत

ऐसे ही सीमान्त के प्रहरी के रूप में कैप्टेन विनोद शर्मा को नियुक्त किया गया और अखनूर-छम्ब क्षेत्र में शत्रु के अग्रिम इलाकों की

टोह लेने का आदेश दिया गया था। ११० सैनिकों के दल के साथ वह आगे बढ़ रहे थे। शत्रु पर भंयकर मार करते, क्षत-विक्षत करते, आगे बढ़ते हुए खैरात में मिले अमरीकी पैटन टैंकों के समक्ष उन्होंने अपनी वीरता का अपूर्व प्रदर्शन किया। शत्रु की एक चौकी के संतरी की नजर कैप्टेन की टोपी पर पड़ गई। ऊँची आवाज में बोला—"तुम कौन हो?" किंचित मात्र भी विचलित न होते हुए उन्होंने प्रश्न पूछा—"तुम कौन हो?" उत्तर मिला—"हम पाकिस्तानी मुसलमान हैं।" तब स्वयं गर्जन करते हुए बोले, "हम हिन्दुस्तानी हैं और तुम्हारी मौत हैं।" बस क्या था बमबारी प्रारम्भ हो गई, ऑटोमेटिक मशीनगन ने आग उगलनी शुरु कर दी। उन्होंने मोर्चाबन्दी कर दुश्मन से टक्कर लेने के लिए अपने साथियों को ललकारा। कैप्टेन अपनी टोली में जोश की ज्वाला जला आगे बढ़ रहे थे और निस्संदेह मौत बन कर शत्रु पर छा गए। टोली के हरेक जवान ने दुश्मन के पैर उखाड़ दिए और उनकी गति जो काल भी रोकने में समर्थ नहीं था बढ़ती जा रही थी कि अचानक कैप्टेन विनोद के गोली लगी। लहू की धारा प्रवाहित हो चली किन्तु उन्होंने ऐसी स्थिति में कुशल संचालन ही अपना धर्म समझा और जवानों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते रहे। इसी दौरान एक गोला उनके पास गिर कर फटा जिसके कारण वह अत्यधिक घायल हो गए, फिर भी कर्त्तव्य से च्युत नहीं हुए और टुकड़ी का संचालन करते रहे।

किसी से कम नहीं

रक्त अधिक बह जाने के कारण उन्हें तुरन्त अस्पताल ले जाया गया जहाँ उनके बटालियन कमान्डर ने उनसे भेंट की और उनसे कैप्टेन विनोद ने कहा—"हमने पाकिस्तानियों को करारी मार दी है और उन्हें अच्छी प्रकार बता दिया है कि भारतीय वीर संसार में किसी से कम नहीं हैं।" कैप्टेन विनोद चण्डीगढ़ चिकित्सालय में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं और इस प्रतीक्षा में हैं कि स्वास्थ्य लाभ करने के उपरान्त फिर दुश्मन की छाती पर वार कर सकें।

जीवन परिचय

कैप्टेन विनोद शर्मा की आयु २४ वर्ष की। उनका जन्म उत्तर प्रदेश में जिला वदायूं की विसौली तहसील में हुआ था। मदनलाल इन्टर कॉलिज से शिक्षा समाप्त कर वरेली कॉलिज से बी० एस सी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। फिर पढ़ाई जारी रखने के लिए अलीगढ़ विश्व-विद्यालय में प्रवेश लिया। १९६२ में जव चीनियों ने नृशंस आक्रमण किया तव पढ़ाई छोड़ देश की रक्षा का भार संभाला और कमीशन प्राप्त किया। प्रक्षिक्षण के उपरान्त कुमायूं रेजीमेंट की तीसरी वटा-लियन में नियुक्त किए गए जहाँ अपनी कुशाग्रता और प्रतिभा से पदोन्नति कर कैप्टेन वन गए। वह फुटवाल के प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं। इनके पिता श्री वांकेलाल शर्मा स्थानीय श्री नानक चन्द्र आदर्श हायर सेकेण्डरी स्कूल के प्रिंसिपल हैं।

खेमकरण मोर्चे का अजेय योद्धा

बहादुर कप्तान सुरेन्द्र कुमार

सुरेन्द्र कुमार का जन्म ५ नवम्बर १९३८ को एक साधारण जाट परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम मास्टर तेजराम है और वह मेरठ (उत्तर प्रदेश) जिले के वामनौली ग्राम के सिलकल्याणी जाट हैं। २० वर्ष की आयु में स्वामी केशवानन्द के सहयोग से इन्होंने अबोहर में साहित्य सदन की स्थापना की और तब से इनका कार्यक्षेत्र ही उनका धाम बन गया है। वह परिवार सहित अबोहर में ही रहने लगे। बहादुर सुरेन्द्र कुमार ने साहित्य सदन के सूरजमल विद्यालय में प्रारंभिक विद्या पाई और नगरपालिका हाई स्कूल से दसवीं कक्षा में प्रथम स्थान पाया। वह प्रारंभ से ही विद्या के साथ अन्य गतिविधियों में भी विशेष

अभिरुचि लिया करते थे। परिणामस्वरूप डी. ए. वी. कालिज, जालंधर से १९५९ में एन. सी. सी. का 'सी' प्रमाणपत्र प्राप्त किया और साथ ही बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। अन्तर्राष्ट्रीय खेलकूद प्रतियोगिताओं में

भी कई स्थानों पर प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस प्रकार मानसिक और शारीरिक दोनों का ही सम विकास हुआ और ओजस्वी व्यक्ति के रूप में इन्होंने सेना को अपनी सेवाएं समर्पित करने का संकल्प लिया।

कठिनाई नहीं डरा सकी

स्थायी कमीशन लेकर वह लेफ्टिनेंट बने और अपनी कार्य-कुशलता के फलस्वरूप एक साल में ही इनकी कप्तान के पद पर पदोन्नति हो गई। १९६२ में 'हिन्दी-चीनी भाई-भाई' का नारा लगाने वाले चीन ने जब भारत पर आक्रमण किया तब वह उपूसी भेजे गए। १९ नवंबर १९६२ को डांगजोंग के स्थान पर चीनी सेना के घेरे में आ गए, पर इन्होंने हिम्मत नहीं हारी और दुश्मन के चंगुल से किसी प्रकार मुक्त होकर भूटान के जंगलों और दुर्गम पहाड़ी मार्गों में चलकर १५ दिन के भूखे-प्यासे बोमदिला पहुँचे। तब हर भारतीय का माथा श्रद्धा से झुक गया था इस वीर के लिए।

अदम्य साहस

इसके बाद इन्हें हिमालय डिवीजन में सम्मिलित किया गया जहाँ वह बर्फीले पहाड़ व कंपा देने वाली ठंड में दो वर्ष तक कठिनाइयों का सतत अभ्यास करते रहे। उस चमक से भारत सरकार के उच्च अधिकारी प्रभावित हो उठे और १९६३ में उच्चस्तरीय मिशन के साथ लद्दाख क्षेत्र में ३५० मील पैदल यात्रा करते हुए २२½ हजार फुट ऊंची चीनी सीमा तक ऐसे निर्जन प्रान्त में जा पहुँचे जहाँ की ठंड असह्य होती है। उस प्रान्त में सतत हिमपात और शरीर हिला देने वाली प्रचण्ड वायु चलती है। वहां से लौटने के तुरन्त बाद इन्हें उसी सेना का एडजूटेन्ट बना दिया गया और इस पद पर वह अन्तिम क्षण तक कार्य करते रहे। १९६४ में शिमला से ७० मील ऊपर बर्फीली चोटियों में रहने का अभ्यास करने के लिए उन्हें बटालियन के साथ कैंप में रखा गया।

सगाई न निभा सके

१५ जुलाई को इनकी अबोहर में सगाई हुई थी। विवाह सम्पन्न भी नहीं हुआ था कि भारत-पाक आक्रमण के समय रात को कूच करने का आदेश मिला। भारत मां के वीरों का यही तो आदर्श है कि मधुर कल्पनाओं में विचरण करता हुआ व्यक्ति आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त कमर कसकर तैयार हो जाता है।

मौत का वरण

३ सितम्बर को कप्तान सुरेन्द्र कुमार ने अपनी बटालियन के साथ फीरोजपुर से अमृतसर को प्रस्थान किया और ६ सितंबर को पाकिस्तानी सेना पर टूट पड़े। भारत के अग्रिम सैन्य दस्तों के साथ पाकिस्तानियों के दांत खट्टे करते हुए १३ मील पाकिस्तानी सीमा में प्रवेश कर बर्की से भी आगे निकल गए। पर इसी समय उनको हुक्म हुआ कि अपनी सेना को बर्की से हटाकर खेमकरण की तरफ मोड़ दें। यहां पाकिस्तानी सेनाएं भारतीय सीमा में छः मील अन्दर घुस आई थीं। १९ सितम्बर की रात्रि को कप्तान अपनी टुकड़ी के साथ खालड़ा सेक्टर में 'राजोके' नामक भारतीय ग्राम में पहुँच गए। यह गांव पाक सीमा से डेढ़ मील भारतीय सीमा में है जिसके दूसरी ओर पाक सेनाएँ जमी खड़ी थीं।

मां की गोद में

२० सितम्बर को प्रातः ६ बजकर १० मिनट पर पाक सेना पर कैप्टेन सुरेन्द्र कुमार की बटालियन ने धावा बोल दिया। घमासान युद्ध हुआ। छः घन्टे की भीषण लड़ाई में हमारे जवानों ने पाकिस्तानी सैन्य दल को छः मील पीछे खेमकरण की ओर धकेल दिया। २१ सितम्बर को पुनः मुठभेड़ हुई और पाकिस्तानी सेना को मार देता हुए कैप्टेन सुरेन्द्र कुमार अपनी बटालियन के साथ आगे बढ़ रहे थे कि अचानक उनकी छाती पर मशीनगन की पांच गोलियां लगीं। लहू की धारा बह चली और वह धरती मां की गोद में गिर गये। ऐसी हालत में भी देश के लड़ैते लाल ने अपनी सेना

को आगे बढ़ने के लिए ललकारा। तत्क्षण पाकिस्तानियों के पैर उखड़ गए और वे वहां से पीछे भाग गए।

रण-प्रांगण से लहू-लुहान कप्तान को मरहम पट्टी के लिए अस्पताल पहुँचाया गया और उस दिन की रात्रि अस्पताल गुजरी। २२ तारीख की रात्रि को फीरोजपुर अस्पताल पहुँचाया गया और २३ तारीख को प्रातः ९ बजे श्री तेजराम का बांका लाल कभी न टूटने वाली नींद में सो गया और आगे बढ़ने के लिए देश के वीरों का आह्वान कर गया। यह वीर भारत मां के ऋण से मुक्त हो गया। दाह के लिए उसका शव अबोहर लाया गया और लगभग ५० हजार की आबादी वाले शहर की जनता अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने उमड़ पड़ी। धन्य है वह देश, वह शहर, जो आहुति देकर अपनी मर्यादा-प्रतिष्ठा बनाए रखते हैं। ऐसा था वह वीर सेना का कप्तान सुरेन्द्र कुमार।

लाहौर की रणभूमि में जूझते हुए शेर ने अपने पूज्य पिता श्री तेजराम को पत्र में लिखा था—"इस समय हमने दुश्मन की कमर तोड़ दी है। हमारी शक्ल देखते ही पाकिस्तानी सैनिक दौड़ पड़ते हैं। इस समय हम लाहौर के काफी पास हैं। अगले हुक्म का इन्तजार है।" काश! इन्तजार के पल समाप्त हो जाते और यह शेर एक बार तो लाहौर में प्रवेश कर जाता किन्तु वह घड़ी नहीं आई और महाप्रयाण की घड़ी आ गई।

आज कप्तान सुरेन्द्र कुमार हम लोगों के बीच नहीं हैं किन्तु उनका संकेत हमें लक्ष्य साधन की प्रेरणा देता रहेगा। सारे भारत ने अपनी श्रद्धांजलि उस वीर को समर्पित की। अबोहर नगरपालिका ने सार्वजनिक चौराहे पर कप्तान सुरेन्द्र कुमार का स्मारक बनाने का निश्चय किया है। यह शहीद का पुण्य स्थान होगा जो हमेशा, हमेशा त्याग की गरिमा बताता रहेगा। कौन कहता है यह उनके जीवन का विराम है, यह तो सारे देश के लिए प्रेरणा का स्वरूप है। धन्य है अबोहर शहर जहां की मिट्टी में वह बढ़ा, धन्य है श्री तेजराम जिन्होंने ऐसे लाल को जन्म दिया और धन्य है भारत माता का वह लाल जो कर्त्तव्य-साधन हेतु निछावर हो गया देश की बलिवेदी पर।

मां की पुकार पर दौड़ने वाला

आर्टिलरी लान्सनायक देवलाल

पिता की मृत्यु के बाद शहीद का मन खेती के काम से ऐसा उचाट हुआ कि एक दिन हल को खेत में ही छोड़कर भाग खड़ा हुआ और फौज में भर्ती हो गया। अपनी कर्त्तव्य-निष्ठा एवं अनुशासन-प्रियता के कारण कुछ ही समय बाद वह अपनी फौजी टुकड़ी में लान्सनायक बना दिया गया। शहीद केवल पांचवी कक्षा तक पढ़ा था किन्तु फौज में रह कर उसने अपनी शिक्षा योग्यता बढ़ा ली। उसका एक बड़ा भाई है जो घर पर रहकर खेती करता है। दोनों भाइयों के पास कुल मिलाकर ७ बीघा भूमि है। शहीद के तीन पुत्र हैं। सबसे बड़ा रनबीरसिंह (६ वर्ष), दूसरा सुघरसिंह (४ वर्ष) और तीसरा मुख्तारसिंह (२ वर्ष) हैं।

बलिदान होने की उतावली

शहीद देवलाल गत जून माह में दो माह की छुट्टी पर घर आए थे किन्तु २७ दिनों के बाद ही उन्हें वापिस आने का आदेश मिला। भतीजे ने चाचा से कहा कि बीमारी का प्रमाण-पत्र भेजकर छुट्टी बढ़ा लीजिये। शहीद का मुंह क्रोध से तमतमा उठा— "पढ़-लिखकर तूने क्या यही नैतिकता सीखी है? प्रमाण-पत्र भेज-कर अपने देश को धोखा दूं? ऐसा कभी नहीं करूंगा और तुझे भी नसी-हत देता हूं कि अपने थोड़े से सुख के लिये कभी झूठ मत बोलना।" आदेश सुबह प्राप्त हुआ था और शहीद शाम ही को घर से चल दिया।

भतीजा महेवा तक छोड़ने आया। बस के अड्डे पर टिकट लेने के लिये वह लाइन में खड़ा हो गगा किन्तु टिकट न मिल सका। शहीद को एक-एक क्षण बोझिल हो रहा था। वह लपक कर बुकिंग आफिस में घुस गया। "मैं अपने देश की रक्षा के लिये मोर्चे पर जा रहा हूँ, मुझे इटावा का टिकट दे दीजिये।" बुकिंग क्लर्क ने 'स्टेंडिंग' टिकट दे दिया। बस में एक सज्जन ने अपनी सीट शहीद को देने तथा स्वयं खड़े होकर यात्रा करने का प्रस्ताव रखा जिसे शहीद देवलाल ने धन्यवाद के साथ अस्वीकार कर दिया और खड़े होकर ही इटावा तक यात्रा की। उसने कहा—"मैं सैनिक हूँ, मेरा कर्त्तव्य स्वयं कष्ट सह कर अपने देश की इज्जत को बढ़ाना तथा जनता को आराम देना है।"

देवों का लाल

शहीद देवलाल ७ अगस्त १९५३ को फौज में भर्ती हुए थे तथा ६ अगस्त १९६५ को दुश्मनों से देश की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। फौजी अधिकारियों द्वारा देवलाल के परिवार को लिखे गये एक पत्र के अनुसार शहीद ने रणक्षेत्र में अभूतपूर्व वीरता एवं साहस का परिचय दिया। अपनी जान की परवाह न कर वह हमेशा आगे बढ़कर दुश्मन पर हमला करते थे। उन्होंने दुश्मन के कई सैनिकों को मौत के घाट उतारा और अन्त में दुश्मन की एक तोप का गोला लगने से वीरगति को प्राप्त हुए। शहीद देवलाल वास्तव में देवताओं का लाल था, इसलिये अमरत्व को प्राप्त हुआ।

भारत मां का वफादार बेटा

ए. एस. सी. (ए. टी.) ड्राइवर रामदास

शहीद रामदास की रुचि शुरू से खेल-कूद में रहती थी। यही कारण था कि पढ़ाई में उसका मन न लग सका। बड़े भाई ने उसे लखना के प्राइमरी स्कूल में भर्ती करा दिया। बड़ा भाई चाहता था कि रामदास मिडिल पास कर ले किन्तु ऐसा न हो सका। बड़े भाई ने जब देखा कि उसका मन पढ़ने-लिखने में नहीं लगता तो उसने उसे स्कूल से उठा कर चकबन्दी कार्यालय, भर्थना में चपरासी के पद पर नियुक्त करा दिया। वहाँ भी रामदास का मन नहीं लगा, क्योंकि वह उसकी रुचि का काम नहीं था। फिर भी वह चकबन्दी कार्यालय में जब तक रहा कर्त्तव्य-पालन पूर्ण निष्ठा से करता रहा। अक्तूबर १९६२ में जब चीन ने देश पर अकारण आक्रमण किया तब रामदास को घर में रहना भला न मालूम हुआ। वह अपने साथियों से कहता—"यह समय घर बैठने का नहीं, मोर्चे पर जाने का है।" जब एक दिन उसे पता लगा कि डाक बंगले पर फौजी भर्ती हो रही है तो वह तुरन्त वहां जाकर भर्ती होने वालों की लाइन में खड़ा हो गया। फौजी भर्ती अधिकारी ने रामदास के स्वास्थ्य व शरीर की परीक्षा की तो वह बेदाग, नीरोग एवं स्वस्थ नौजवान साबित हुआ। वह फौज में भर्ती कर लिया गया।

रामदास बदल चुका था

फौज में भर्ती होने के एक वर्ष बाद जब वह अपने गांव लौटा तब मिडिल फेल वाला रामदास मिडिल पास वाला रामदास बन चुका था।

वह पहले से अधिक तन्दुरुस्त तथा खुश नजर आता था। अपने वृद्धा माँ, भाई, भावज, भतीजों और अपनी पत्नी तथा बच्चों के लिये बहुत सी चीजें लाया था। रामदास को कबड्डी का बड़ा शौक था। अतः छुट्टियों में वह गांव के लड़कों को एकत्रित कर कबड्डी खेला करता। चूंकि वह अधिक तन्दुरुस्त हो गया था अतः गांव के किसी लड़के की हिम्मत नहीं होती थी कि उसे पकड़ सके। वह जिस दल में शामिल हो जाता उसकी जीत निश्चित हो जाती थी।

भाई द्वारा लालन-पालन

शहीद रामदास के पिता शिवलाल की मृत्यु बचपन में ही हो गई थी। घर में वृद्धा माता तथा तीन भाई है। बड़ा भाई श्री घनीराम लखना के प्राइमरी स्कूल में अध्यापक है। उन्होंने रामदास का पालन-पोषण किया तथा शिक्षा-दीक्षा दी। रामदास का दूसरा भाई श्री रामसेवक जिला हरदोई में गन्ना सुपरवाइज़र हैं तथा तीसरा श्री रामअधीन झाँसी में फौजी दफ्तर में क्लर्क हैं। शहीद का मकान छोटा तथा कच्चा है। पिता के पास केवल चार बीघा भूमि थी। अतः प्रत्येक भाई को पिता की सम्पत्ति के रूप में एक-एक बीघा जमीन मिली है। रामदास अपने पीछे विधवा पत्नी तथा तीन बच्चों को छोड़ गया है। बच्चों की उम्र क्रमशः ६, ४, और २ वर्ष है। सबसे छोटा बच्चा अत्यन्त दुर्बल है। ऐसा प्रतीत होता है कि वह सूखा रोग से पीड़ित है।

शहीद की इच्छा पूरी की

शहीद की पत्नी से बातचीत करने पर मालूम हुआ कि पिछली बार श्रावण में जब वह छुट्टियाँ बिता कर वापिस जा रहा था तब अपनी पत्नी से यह कह कर गया था कि अब की बार जब वह लौट कर आएगा तब पत्नी तथा बच्चों के लिए एक भैंस खरीद देगा। शहीद वापिस न लौट सका और देश के काम आ गया किन्तु

उसके दिये वचन को पूरा कर दिया गया है। शहीद की पत्नी को ५०० रु० नकद भी दिए जा चुके हैं। उसके लिये अलग मकान बनाने तथा कुछ भूमि देने का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। श्री महालक्ष्मी राइस मिल के मालिक ने शहीद की विधवा पत्नी को एक भैंस देने की घोषणा की है। जिलाधीश द्वारा उसे गांव में भूमि दिलाने का प्रबन्ध किया जा रहा है। उसके सबसे छोटे लड़के का इलाज करने के लिए लखना डिस्पेन्सरी के डाक्टर को आदेश दिये जा चुके हैं। डाक्टर स्वयं शहीद के घर जाकर बच्चे को देखेंगे तथा उसका उपचार करेंगे।

शहीद रामदास ड्राइवर (ए० टी०) था, उसकी मृत्यु छम्ब के रणक्षेत्र में दुश्मन का एक गोला लगने से हुई। सैनिक अधिकारियों ने शहीद के परिवार को लिखे एक पत्र में उसके साहस एवं शौर्य की सराहना की है।

इकनौर का सपूत

४ राजपूत रेजीमेंट हवलदार हाकिम सिंह

शहीद हाकिम सिंह का लालन-पालन उसके बड़े भाई श्री सोखीलाल तथा भावज ने किया था। श्री सोखीलाल भी फौज में थे जिनकी टी. बी. से मृत्यु हो चुकी है। श्री सोखीलाल का एक पुत्र तथा पुत्री हैं। पुत्री का विवाह हाल में हुआ तथा पुत्र जो कि लगभग २५ वर्ष का है टी. बी. रोग से पीड़ित है। हाकिम सिंह अविवाहित थे और अपनी भावज को मां के रूप में देखते तथा सेवा करते थे।

मां पर संकट, तब छुट्टी कैसी

हाकिम सिंह मिलनसार एवं धार्मिक प्रवृत्ति के नौजवान थे उन्हें भजन-कीर्तन में बड़ी रूचि थी। गांव के आसपास कहीं भी कीर्तन आदि होता तो वह उसमें श्रद्धापूर्वक भाग लेते थे। साधु-महात्माओं की संगत में उन्हें अधिक आनन्द प्राप्त होता था। अपनी भतीजी की शादी में जब वह घर आए और पाकिस्तानी हमले के समय जब उन्हें वापस बुला लिया गया तो गांव के बहुत से लोगों ने उन्हें छुट्टी बढ़ाने की सलाह दी। शहीद ने गांववालों के प्रस्ताव को यह कह कर ठुकरा दिया कि जब भारत माता संकट में है तो मैं घर में पड़ा छुट्टियां कैसे मना सकता हूँ, यह तो नमकहरामी होगी। वह गांव में रुके नहीं और आज्ञा पाते ही गन्तव्य स्थान को चल दिए। पिछले नौ साल से वह फौज में थे।

जिलाधीश की तत्परता

शहीद की भावज से यदि कोई मिलने जाता है तो वह अपनी दो

मांगें सरकार तक पहुँचाने की बात अवश्य कहती है। पहली मांग यह है कि उसे फौज में भेजा जाए जिससे वह अपने पुत्रवत देवर की मौत का बदला ले सके और दूसरी मांग यह कि टी. बी. रोग से पीड़ित उसके पुत्र का इलाज कराया जाय जिससे शहीद की देहली आबाद बनी रहे। जिलाधीश ने शहीद की भावज की दूसरी मांग स्वीकार करते हुये उसके पुत्र का विधिवत इलाज कराने का प्रबन्ध कर दिया है। इटावा टी. बी. अस्पताल में शहीद के भतीजे को भर्ती कर लिया गया है तथा जिलाधीश के आदेशानुसार उसका ठीक प्रकार इलाज हो रहा है।

शहीद हाकिम सिंह (हवलदार) की मृत्यु २०-६-६५ को हुई। फौजी अधिकारियों ने शहीद की भावज को लिखे पत्र में शहीद की लगन, साहस एवं कर्त्तव्यनिष्ठा की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

जवानों को मेरी शाबासी

ले० कर्नल एन० एन० खन्ना

भारत के जवांमर्द शेर, सिख रेजीमेंट के बहादुर अफसर इस संसार-सागर से चले अवश्य गए किंतु उनकी जिंदादिली और प्राण फूंकने वाले वाक्य अब भी हमारे कानों में गूंज रहे हैं। उनकी जोशीली आवाज अभी भी उन सैनिकों को सुनाई देती है जो उनके साथ कन्धे से कन्धा भिड़ाकर जान हथेली पर रखकर लड़े थे। उन्होंने उनके साहस का वह चमत्कार देखा जिस पर सहसा विश्वास न होता था। त्याग और बलिदान का अपूर्व मिश्रण उनमें साकार हो गया था।
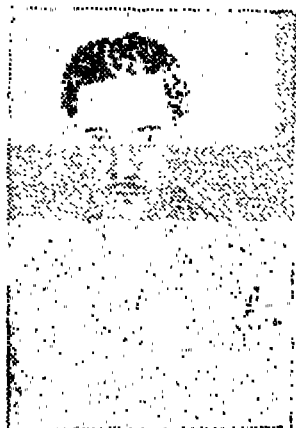
राजा चौकी पर पाकिस्तान का अधिकार था। पाक-अधिकृत काश्मीर की दो प्लाटूनों और पठान सैनिकों ने बड़ी मजबूती से मोर्चा जमा रखा था। चौकी की रक्षा करने के लिए मॉर्टर, मझोली और भारी मशीनगनें तैनात कर रखी थीं और चारों ओर पूरे इलाके में बारूदी सुरंगें बिछा रखी थीं। २ सितम्बर को हमारा पहला हमला असफल हो गया था।

५ सितम्बर को फिर योजना बनाई गई कि उस स्थान पर अधिकार किया जाए। वहाँ के खतरों से सब बखूबी परिचित थे, किन्तु खतरा की परवाह न करते हुए हमारे जवान ले० कर्नल एन० एन० खन्ना के नेतृत्व में आगे बढ़े। कुशल संचालन विजय का स्वरूप धारण करता है। यदि ऐसे समय में अफसर हिम्मत हार जाए तो सैनिक भी पस्त हो जाते हैं, किन्तु खन्ना भारत की मिट्टी में पले थे। उन्होंने आगे

बढ़ कर एक स्थान पर मोर्चा जमा लिया। वहाँ से आगे जाना जोखिम था पर जान की परवाह न करते हुए ले० कर्नल खन्ना ने कुशल संचालन किया और ८ सितम्बर को जब सूरज की लाल किरणें फूट भी न पाई थीं कि उन्होंने धावा बोल दिया और धरती को रक्त-रंजित कर लाली बिखेर दी। हमारे जवान आगे बढ़ रहे थे, दुश्मन की मशीनगनें और मॉर्टर तोपें आग उगल रही थीं किन्तु उसके बावजूद आगे बढ़ने का क्रम चलता रहा।

हमारे सैनिक काफी संख्या में हताहत हो चुके थे और एक समय आया कि बढ़ना अवरुद्ध सा हो गया, किन्तु साहसी खन्ना स्वयं आगे बढ़े और उनके पीछे जवान हथगोले लेकर बढ़े और झपट कर दुश्मन की चौकी के पास लगभग २० गज तक पहुँच गए। अपने अफसर खन्ना की यह वीरता देख जवानों को और जोश आ गया और उन्होंने फिर हमला किया। खन्ना के बाएं हाथ में गोली और दाहिने कंधे में हथगोले के टुकड़े लगे। घाव काफी हो गए थे, लहू की धार बह चली किन्तु घाव की परवाह न करते हुए वह अपने जवानों का हौसला बढ़ाते रहे। एक बार फिर मशीन-गन की गोली उन्हें लगी। उसके उपरान्त उन्हें मैदान से हटा दिया गया। उनके द्वारा जोश से भरे जवान कब रुकने वाले थे, उनका क्रम जारी रहा।

ले० कर्नल खन्ना इतने घायल होने के बावजूद भी चौकी पर हमले के बारे में बार-बार पूछते रहे। जब उन्हें बताया गया कि चौकी पर हमारा अधिकार हो गया है तो उन्होंने कहा—"फतेह के लिए जवानों को मेरी शाबाशी देना।" शायद जीत की खबर सुनने और शाबाशी देने के लिए ही उनके प्राण रुके थे और वह सदा के लिए भारत माँ की गोद में सो गए। आज ले० कर्नल हमारे बीच नहीं हैं किन्तु उनकी शेरदिली वीरता उनके साथ अमर हो गई। भारत सरकार ने मरणोपरान्त उन्हें 'महावीर चक्र' प्रदान किया।

•

वीर सेनानी नायक चान्दसिंह

जाने वाले कभी नहीं आते
जाने वाले की याद आती है

देश की वलिवेदी पर सहर्ष न्योछावर होने वाले हमेशा, हमेशा के लिए अमर हो गए। उनका लौटना अव असम्भव है किन्तु उनकी याद प्रेरक स्रोत वन गई है और अव भी भारतीय जवानों में जान फूंकती है। भारत की पावन भूमि पर नापाक इरादों से आए पाकिस्तानी सैनिकों के लहू से ही शायद उन जवानों की प्यास बुझ पायेगी। यही प्रेरणा नायक चान्दसिंह में विद्यमान थी।

नायक चान्दसिंह सिख रेजीमेंट में थे और प्रमुख सेक्शन कमांडर थे। आदेश देते हुए जब उनकी आवाज गूंजती तब दुश्मन के दिल पर सांप लोटने लगते थे और वे भयातुर हो छिप जाना चाहते थे। किन्तु उन्हें मजबूरी में लड़ना पड़ता, इसलिए मुकाविले में सदैव मात खाते रहते। जम्मू-काश्मीर के पूंछ सेक्टर में राजा पिकेट पर धावा बोलना था। पाकिस्तानियों ने पिकेट की किलेबन्दी कर रखी थी और मार्ग मिलना मुश्किल वना दिया था। किन्तु नायक चान्दसिंह कब चूकने वाले थे। उन्होंने ६ सितम्बर को धावा बोल दिया। जब हमारे सैनिक पिकेट से केवल ५० गज की दूरी पर रह गए कि दुश्मन ने ऑटोमेटिक गनों और अन्य बन्दूकों से धड़ाधड़ गोलीबारी शुरू कर दी। ऐसी स्थिति में आगे जाने का मतलव था सीधे मौत के मुंह में जाना। किन्तु लक्ष्य का साधन तो अनिवार्य था, लक्ष्य-साधन में अपना सर्वस्व समर्पण कर देना भारतीय जवानों का उच्चादर्श है। दुश्मन की गोलियों की परवाह न करते हुए नायक

चान्दसिंह दुश्मन पर चढ़ गए और उसे हक्का-बक्का कर दिया और उसकी मशीनगन पोस्ट पर अधिकार जमा लिया। उसी के ग्रेनेडों को बंकरों में फेंक दिया और दुश्मनों की काफी संख्या ठिकाने लगा दी। इस प्रकार उनकी भयंकर बमबारी समाप्त कर दी। बहादुरी से भरे उनके इस कारनामे से उनकी टुकड़ी में जान आ गई और उसने तुरन्त पिकेट पर आक्रमण कर राजा पिकेट पर अधिकार कर लिया।

दृढ़ निश्चय और बहादुरी के साथ नायक चान्दसिंह आगे बढ़े थे, इस वीरता और साहसिकता के लिए भारत सरकार ने उन्हें 'वीर चक्र' प्रदान किया। भारत वीरों के शिरोमणि नायक चान्दसिंह तुम धन्य हो !

•

शेर-दिल बहादुर फ्लाइंग अफसर

डी० पी० चिनाय

सितम्बर १९६५ का वह रोमांचकारी दिन। शेर-दिल बहादुर फ्लाइंग-अफसर डी. पी. चिनाय अपने दो साथियों के साथ विमानों को ले उड़े दिन में दुश्मन पर बमवर्षा करने। जब वे अपने निर्धारित लक्ष्य पर पहुँचे तब विमानों को लगभग ५० फुट नीचे लाकर जांच करने के लिए चक्कर लगाने लगे कि दुश्मन की विमान-भेदी तोपें गरज उठीं। फ्लाइंग-अफसर चिनाय ने धप्प जैसी आवाज सुनी और महसूस किया की दुश्मन की गोली निशाना पकड़ गई है। थोड़ा शक था वह भी तब दूर हो गया जब विमान धुएँ से भर गया और आग लगने की सूचना देने वाला संकेत-यंत्र चमक उठा। वह अपने विमान को एक दम ऊँचाई पर ले गए और उन्होंने अपने नायक को रेडियो से विमान में आग लगने की सूचना दी। सूचना देने के साथ ही उन्होंने विमान उत्तर दिशा की ओर मोड़ दिया। पर नायक ने पूर्व की ओर जाने का आदेश दिया और उस क्षेत्र से फौरन बाहर निकल आने को कहा।

विमान का पावर जेनरेटर बन्द हो गया था, रेडियो टेलीफोन ने काम बंद कर दिया था और बाहरी दुनिया से चिनाय का सम्बन्ध बिलकुल टूट गया।

विमान से कूदने का फैसला

गहरे धुएं के बादलों के कारण कुछ दिखाई नहीं पड़ता था। उनकी

आंखें जलने लगीं और सांस लेने में कठिनाई होने लगी। उन्होंने विमान की खिड़की खोल दी। भारत के इस सपूत ने ऊंचाई नापने के यन्त्र में देखा कि उनका विमान ३,००० फुट की ऊंचाई पर था और विमान की गति बन्द हो चुकी थी। एक ओर विमान के साथ लगाव और दूसरी ओर भारत मां की भूमि की याद। अन्त में यही फैसला किया कि विमान तो २-४ सैकिंड में मलबे की शक्ल में बदल ही जाएगा, कम से कम अपने को तो बचा लिया जाए जिससे दुश्मन से जूझने का फिर मौका मिले।

उन्होंने अपना पैराशूट खोला और विमान से कूद पड़े। जैसे-जैसे वह नीचे उतरते जाते थे भारी तोपों की गरज और छोटे हथियारों की आवाज साफ सुनाई दे रही थी। उन्हें निशाना साध कर गोलियां छोड़ी गईं, पर भारत मां का आशीर्वाद काम कर रहा था, कोई गोली उन्हें लगी नहीं।

जमीन पर

जमीन पर उतरते ही उन्होंने अपनी छतरी फेंकी और पास की बड़ी घास में छिप कर रेंगकर आगे चलने लगे। जहां घास न होती वहां दौड़ते। डूबता सूरज ही इनका रहनुमा था। अब तोपों की आवाज मंद पड़ने लगी थी। खतरे से बाहर समझ कर उन्होंने थोड़ी देर आराम किया और सिगरेट-लाइटर से अपने सारे गुप्त कागजात जला डाले। सिर्फ नक्शा पास रखा जिससे उसकी मदद से शत्रु क्षेत्र से बाहर निकल सकें। जब वह कागजात जला रहे थे तब पास ही बंदूक दगने की आवाज आई और वह आगे भाग खड़े हुए। शायद लाइटर की छोटी सी आग की चमक दुश्मन ने देख ली थी। वह कभी दौड़ते तो कभी रेंगते। वह एक गांव में पहुंचे जहां चारों ओर रेत के बोरे लगे थे। यह समझते इन्हें देर नहीं लगी कि वहां गोला-बारूद होगा, इसलिए वहां जाना इन्होंने खतरे से खाली न समझा और बच कर आगे निकल गए।

मौत और जिंदगी का चौराहा

एक घंटा दौड़ने और चलते रहने पर अचानक इन्होंने एक पाक सिपाही को देखा जो इनके बिल्कुल करीब आ गया था। उसे इतने पास देख इनके होश गुम हो गए, क्योंकि अगर वह इन्हें देख लेता तो सिवाय गिरफ्तारी या दुश्मन की गोली के निशाने के और चारा न था। इन्होंने अपने को पूरी तरह से घास में छिपा लिया और दिन में आगे बढ़ने का खतरा मोल न लेकर सूरज छिपने की इंतजार करने लगे।

आशा की मंजिल

सूरज छिप चुका था। रात जमीन पर फैलने लगी। अपने मुंह और हाथ-पैरों पर इन्होंने कीचड़ लपेट ली और चांद निकलने पर आगे बढ़ने लगे। अब चांद उनका मार्गदर्शक था। लगभग पांच घंटे दौड़ने के बाद इन्हें सामने पक्की सड़क दिखाई दी। इन्होंने अंदाज लगाया कि शायद वह अमृतसर जाने वाली मुख्य सड़क पर आ गए हैं। इनका प्यास से बुरा हाल था। सामने एक कुआ दिखाई दिया। वहाँ इन्होंने करीब एक बाल्टी पानी पीया और सुस्ताने लेट गए। पर पास ही कोलाहल सुनाई दिया। पहले तो वह डरे, पर फिर सोचा कि हो सकता है यह भारतीय सैनिकों का शोरगुल हो। वह सावधानी से सेना की ओर बढ़े और अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर अपना नाम बताया। लगभग दो घंटे की पूछताछ के बाद हमारी सेना के अफसरों ने इनके भारतीय सैनिक होने का यकीन किया, खाना-पीना दिया और जीप में बिठाकर अस्पताल भेज दिया। श्री चिनाय अब दुबारा दुश्मन से लोहा लेने की इंतजार में हैं।

●

लाखों मां-बहनों के सुहाग का प्रहरी

मेजर राघव

विवाह हुए सिर्फ तीन महीने ही हुए थे जब मेजर राघव ने अपनी जीवन-संगिनी बी० ए० पास कुमारी सुधा की मांग में सिंदूर संजोया था। मांग की लाली पूरी तरह चमकी भी नहीं थी कि भारत मां ने अपने बहादुर सपूत को अपनी रक्षा के लिए पुकारा। सुधा का मन उदास हो उठा, वह भविष्य के अनिष्ट की आशंका से कांप उठी, पर भारत के लाड़ले को प्रेम का बंधन न रोक सका, क्योंकि मोर्चे पर उसे सुधा की तरह लाखों भारतीय मां-बहनों के सुहाग के सिंदूर की रक्षा करनी थी। पति-वियोग असह्य होते हुए भी सुधा ने अपने सुहाग मेजर राघव के माथे पर विजयश्री का टीका लगाया और आरती उतार कर मोर्चे पर जाने को विदाई दी। पति के कदमों की धूल माथे पर सिंदूर की जगह संजोई और भगवान से अपने सुहाग के रक्षा की प्रार्थना की। उस समय उसकी आंखों में खुशी और गम के आंसू छलछला रहे थे।

माता-पिता से विदाई

बूढ़े माता-पिता के चरणों में माथा टेक और उनसे खुशी-खुशी मोर्चे पर जाने की विदा ले मेजर राघव ने विश्वास दिलाया—"मैं पीठ पर गोली नहीं खाऊंगा। यदि रणक्षेत्र में मरा तो छाती पर गोली खाकर आपकी अमानत इस देह को आपके गौरव पर न्योछावर कर दूंगा, इसलिए आप मुझे आशीर्वाद दें कि मोर्चे से जीतकर ही वापिस आऊं।"

माता-पिता की आंखें भीग रही थीं, पर उनका बहादुर लाल मातृ-

भूमि की रक्षा का सौभाग्य पाने पर फूला नहीं समा रहा था। रुंधे गले और डबडबाई आंखों से अपने लाड़ले की पीठ थपथपाते हुए उन्होंने उसे भारत मां की रक्षा के लिए विदा किया।

जंगी मैदान का हीरो

स्यालकोट मोर्चे पर घमासान युद्ध की ज्वाला दोनों पक्षों के जवानों को भस्म कर रही थी। लड़ाई का नक्शा ऐसा था कि निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता था कि कौनसा पक्ष मैदान जीतेगा। पाकिस्तान के पास पैटन टैंक और आधुनिक हथियारों का सहारा था तो हमारे जवानों में आत्मबल और अपने वतन पर मर-मिटने की भावना हिलोरें मार रही थी। दुश्मन ने खुफिया तौर से अंदाज़ लगाया कि जिस मोर्चे पर मेजर राघव अपनी यूनिट के साथ तैनात हैं वह मोर्चाबंदी के लिहाज़ से कमजोर है, इसलिए यदि वहां एकदम ज़ोर-शोर से पैटन टैंकों और भारी हथियारों से हमला बोल दिया जाए तो हिंदुस्तानी फौज के पैर उखड़ जाएंगे, क्योंकि वहां भारतीय सिपाही तादाद में कम हैं और लड़ाई का सामान भी उनके पास टक्कर लेने को काफी नहीं है।

हाहाकार मचा दिया

मेजर राघव इस सबसे बेखबर नहीं थे। अपने जवानों को देश की आबरू की रक्षा के लिए ललकारते हुए वह सबसे आगे थे। कभी इस ओर लपके, कभी उस ओर झपटे। वह इस दिलेरी और बहादुरी से बढ़ रहे थे कि दुश्मन भी उनकी बहादुरी का कायल हो गया। मातृभूमि के पवित्र आंगन में दुश्मन के कदम न पड़ें यही उनकी लालसा थी। अपना क्या था उनके लिए, सभी तो भारत मां का था। जिंदगी और मौत के बीच की राहों में अपने को संभालते हुए उन्होंने शत्रु के छः टैंक तोड़ डाले और दो टैंकों को सही-सलामत अपने कब्जे में ले लिया। शत्रु जान बचा कर पीछे भागने लगा और चारों ओर हाहाकार मच गया। दुश्मन की गोलाबारी के बीच मेजर पेट के बल आगे बढ़ते और जब टैंक के पास

पहुँचते तो पहले टैंक ड्राइवर का सफाया करते और टैंक को उनके बहादुर जवान आग की लपटों में स्वाहा कर देते। पर हमले की टक्करों का मुकाबिला करते हुए अब उनके गहरे जख्म शरीर को कमजोर कर चले थे और शरीर जवाब दे रहा था।

अंतिम संदेश

मेजर राघव अशक्त होकर गिर पड़े और बेहोश हो गए। उन्हें तुरंत चिकित्सा के लिए कैंप ले जाया गया। जो इलाज जंगी मैदान में हो सकता था किया गया ताकि मां का नौनिहाल अपने साथियों को फिर बहादुरी की प्रेरणा दे सके। लेकिन अंतिम समय आ चुका था और वह लाखों बहनों के सुहाग की रक्षा की आन निभाते हुए अपनी जीवन-संगिनी सुधा के माथे का सिंदूर पोंछ गये। उसकी कलाई की खनकती चूड़ियां इसलिए टूटीं कि अन्य सुहागिनों की चूड़ियां खनकती रहें। आखिरी समय मेजर राघव ने लालसा प्रकट की कि सुधा और माता-पिता से कहना कि "राघव ने शत्रु की गोली पीठ पर नहीं, सीने पर खाई थी।"

गंगानगर सीमा का पहरेदार

हवलदार अमर सिंह

११ सितंबर की भयानक काली रात। चारों ओर सन्नाटा। बाड़मेर मोर्चे पर दोनों ओर से जंगी तोपें आग उगल रहीं थीं, संगीनें लहू की बूंदों से अपनी प्यास बुझा रहीं थीं। हिंदूमलकोट चौकी से गंगानगर में घुसने का रास्ता खुला था। शत्रु मौका पाकर कभी भी इधर मुंह कर सकता था, इसलिए इस चौकी की सुरक्षा की जिम्मेदारी अधिक बढ़ गई थी, क्योंकि खुफिया तौर से पता चल चुका था कि दुश्मन इधर ही बढ़ने की घात लगाए है।

हवलदार अमर सिंह नौ साथियों के साथ चौकी पर मुस्तैदी से पहरा दे रहे थे। सुनसान अंधेरे में रात को एक बजे सिपाही मोहन सिंह ने सूचना दी कि सीमा के पार के खेतों में दुश्मन की हलचल लगती है। बहादुर हवलदार ने साथियों को सावधान कर दिया और खेतों की ओर ध्यान से देखा···अंधेरे में कुछ दिखाई नहीं दिया। तब सिगनलिंग फायर की रोशनी कर जानना चाहा कि उधर क्या है। खेतों में इंसानी शक्लें हिलती-डुलती दिखाई दीं। दुश्मन दाएं-बाएं और सामने से चौकी की ओर बढ़ रहा था। वे संख्या में १०० से कम न होंगे। हवलदार अमर सिंह ने वायरलैस से सूचना तुरंत केंद्र को भेज दी। वहां से उन्हें आर्डर मिला कि किसी भी तरह दुश्मन को दो घंटे तक रोके रखें ताकि सहायता पहुंचाई जा सके।

आमने-सामने टक्कर

आर्डर पाकर हवलदार ने साथियों को खंदकों में जाने का आदेश

दिया और खुद खेतों की ओर जिधर से दुश्मन बढ़ रहा था राइफिल ताने और निगाह जमाए अकेला खड़ा रहा। ३०० गज के फासले पर हवलदार ने देखा कि शत्रु रेंगता हुआ आगे बढ़ा आ रहा है। बस··· अब देर नहीं करनी थी। उसने साथियों को फायरिंग करने का हुक्म दिया। जवाब में शत्रु ने भी गोलाबारी शुरू कर दी। मॉर्टर तोपें गोले उगलने लगीं। हवलदार खंदक में मोर्चा बना कर बैठ गया। दुश्मन तादाद में दस गुना और वह भी मॉर्टर तोपों से लैस, लेकिन वहां जान की पर्वाह किसे थी, शत्रु को दो घंटे तक रोकना लक्ष्य था।

मौत की गोद में

धीरे-धीरे हवलदार रेंगता हुआ वायरलैस सैट के पास गया और अपने केंद्र को शत्रु की हलचल बता कर मुड़ा ही था कि मॉर्टर तोप का एक गोला वायरलैस सैट के पास आकर गिरा। हवलदार ने उसे तुरंत नष्ट कर दिया और बाल-बाल बच गया। उसने खंदक में कूदकर दुश्मन पर फिर गोलियां बरसाना शुरू कर दिया। राइफिल की हर गोली दुश्मन की कपाड़ी को बींधती जाती थी। हर गोली के बाद चीख उठती और दूसरी गोली की आवाज में दब जाती। आधे घंटे तक बराबर इसी तरह आग की वर्षा होती रही। हवलदार के दो साथी घायल हो गए। दुश्मन आगे बढ़ने की बार-बार कोशिश करता, पर क्या मजाल कि हवलदार की मोर्चाबंदी के सामने एक इंच भी बढ़ सकता।

अचानक हवलदार अमरसिंह को लगा कि बायीं ओर की गोलाबारी कम हो रही है। उसके दिमाग में शत्रु की योजना कौंध गई कि वह दायें ओर सामने उलझा कर बायीं ओर पीछे से काटता हुआ उस सड़क के किनारे आ जाना चाहता है जिससे पीछे से आने वाली फौजी सहायता को घेर कर भारी नुकसान पहुँचाया जा सके। सामने और दाएं से गोलाबारी बढ़ गई। वायुमंडल धुंए से भर गया। केंद्र से चौकी का वायरलैस संबंध टूट चुका था। अब एक ही रास्ता बाकी था कि डेढ़ घंटे तक शत्रु को रोका जाए, चाहे सब साथी शहीद हो जाएं। सामने और बायीं ओर से हमारे जवान दुश्मन को जवाब दे रहे थे। शत्रु दायीं

श्रोर पीछे हट कर छिपे-छिपे सड़क की ओर रेंगता चला आ रहा था। लेकिन हवलदार को यह कैसे बर्दाश्त होता। वह खंदक से बाहर कूद पड़ा और रेंगता हुआ दुश्मन की बगल में पहुँच गया। अब निशाना अभेद्य था। उसने राइफिल से धुआंधार गोली बरसानी शुरू कर दिया। शत्रु एकदम इस हमले से घबड़ा उठा और उसका आगे बढ़ना रुक गया। पर अमर सिंह अकेला...शत्रु बड़ी तादाद में...उसकी दाहिनी बांह में गोली लग चुकी थी, लेकिन बंदूक की नाल बराबर आग उगल रही थी।

हवलदार का शरीर अशक्त हो चला। हाथों ने जवाब दे दिया और वह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। उसकी मजबूरी का फायदा उठा-कर शत्रु सड़क के किनारे आ गया।

बेहोशी की हालत में

हवलदार को जब होश आया तब उसने कलाई की घड़ी की ओर देखा। सहायता आने में सिर्फ १५ मिनट बाकी थे। सड़क की ओर निगाह उठाई। शरीर और दिल में नई स्फूर्ति जाग गई। वह राइफिल की नाल को सड़क की ओर घुमा कर गोलियों की बौछार से फिर दुश्मन को मौत की गोद में सुलाने लगा। तभी उसके दाहिने कंधे पर दो गोलियां और आ बैठीं, पर उसके हाथ घोड़े से हटे नहीं...शत्रु पीछे भागने लगा। वह अकेला...बिल्कुल अकेला। साथी शत्रु का पीछा कर रहे थे। उसकी निगाह सड़क की ओर लगी थी...कभी-कभी बीच-बीच में एकाध गोली दाग देता। पर अभी उसकी वतन-परस्ती का इम्तहान बाकी था। पीछे से एक छाया उभरी...उधर से एक गोली आई और हवलदार की कनपटी पर लगी। अमर सिंह ने राइफिल घुमाई और काली छाया वहीं धप्प से ढेर हो गई।

शरीर ठंडा पड़ता जा रहा था...सांस घुटने लगी थी...बहादुर अमर सिंह ने सोचा कि जीवन की आखिरी घड़ी आ चुकी है। आंखें बैठने लगी थीं, पास की चीजें धुंधली पड़ गई थीं, तभी ट्रकों की घर्र-घर्र की आवाज उसके कानों में पड़ी और उसके चेहरे पर चमक लौट आई। लेकिन अब जीवन बाकी नहीं था। शरीर भारत-भूमि पर लुढ़क पड़ा, पर हाथ बंदूक के घोड़े पर ही जमे थे। ●

इच्छोगिल नहर का कालदूत

लेफ्टिनेंट हरिदत्त सिंह

चलति महाधुनि गर्जेसि भारी गर्भस्रवहिं सुनि निसिचर नारी

भर हुंकार हरिदत्त जो धाए शत्रु ने छिप कर प्राण बचाए

कैसी फुर्ती थी हमारे लेफ्टिनेंट साहब में। जैसे हनुमान लंका जीतते जाते समय गर्जना कर आगे बढ़ते थे वैसे ही ले० हरिदत्त सिंह इच्छोगिल नहर का मोर्चा जीतने की साध मन में लिए सदा सबसे आगे रहे। उन्होंने अपनी टुकड़ी के जवानों को बेटों से ज्यादा स्नेह दिया। "साक्षात पवन-पुत्र थे वह," यह कहते लेफ्टिनेंट हरिदत्त सिंह की टुकड़ी के एक बहादुर जवान की आँखें भर आईं।

रणनीति के चिराग

आंसू पोंछ कर वह फिर बोला—"पहली खेप में ही हमने राक्षस नगरी लाहौर तक पहुँचने के लिए इच्छोगिल नहर अपने बहादुर अफसर की सफल कमान में पार कर ली थी, पर तभी पीछे से वापिस लौटने का हुक्म मिला। हुक्म मान कर हम वापिस लौट आए। शत्रु इस बीच नई कुमुक ले आया और नहर के पश्चिमी किनारे पर उसने जबर्दस्त मोर्चा साध लिया। हमारी वापिसी पर वह हमारी छोड़ी जगहों पर आ गया। हम और पीछे हटे क्योंकि शत्रु को हमें रणनीति से नहर के इस पार लाना था। हम हटते गए और दुश्मन हमारी हार जान इधर आता गया।

"अब हमारे वार की वारी थी। लेफ्टिनेंट साहब ने ललकारा—"मारो! एक भी बचकर न जाने पाए।" सबसे आगे वह हनुमान की गर्जन के साथ दुश्मन का सिर अपनी गोलियों से तोड़ते जा रहे थे, पीछे से हम उनके कदमों के साथ चल कर शत्रु के दल को ठिकाने लगा रहे थे। चारों ओर से घेर कर दुश्मन को खत्म करने की योजना थी।

नहर के पार

"लगातार पांच घंटे दोनों ओर से आग बरसती रही, पर खैराती माल के बूते पर जंगखोर और नापाक इरादे रखनेवाला नापाक शत्रु कब तक ठहर सकता था। लेफ्टिनेंट साहब की गोलाबारी के सामने उसका सिर झुक गया और वह जान बचाकर भाग लिया। लेफ्टिनेंट साहब मौका हाथ से कैसे जाने देते। उन्होंने और जोर से हल्ला बोल दिया, पर चोट खाया साँप अधिक खतरनाक होता है। शत्रु ने लेफ्टिनेंट साहब पर भागते-भागते निशाना साधा। एक हथगोला ठीक उनके सामने फटा। दोनों टाँग वे इस विस्फोट में दे बैठे। वह बेबस हो गए और गिर पड़े। हम उन्हें उठाने दौड़े, लेकिन उन्होंने शंकर के प्रलयंकर स्वर में हमें ललकारा—'हट जाओ, पहले हमें नहर के पार पहुँचना है, आगे बढ़ो···आगे···अपना काम संभालो···'

लाहौर जीतने की तमन्ना

"जख्मी हालत में ही वह हमें आगे बढ़ने का आर्डर देते रहे। वह जख्मी जरूर थे, पर उनका हौसला जख्मी नहीं हुआ था। सरक और घिसट कर वह आगे बढ़ते रहे। पाकिस्तानी सिपाही पवन-पुत्र की ललकार के आगे न ठहर सके और नहर के उस पार भाग गये, पर लेफ्टिनेंट साहब को चैन कहाँ था। हम आगे बढ़ते गए। पीछे से हमें बाप जैसे अफसर की शह मिलती रही। हम और तेजी से आगे बढ़े। किन्तु ले० हरिदत्त सिंह फिर भी आश्वस्त नहीं हुए। दहाड़ कर कह रहे थे—'शाबास मेरे बेटो! नहर पार करो, लाहौर चलो।' परन्तु अपनी बाजी पिटती देख दुश्मन ने नहर का पुल उड़ा दिया।

"ले० हरिदत्त सिंह की आशा निराशा में बदल गई। बोले—'काश मेरे पांव होते तो मैं नहर को तैर कर दुश्मन की पीठ सेंकता और लाहौर में जा घुसता। खैर…शायद यही होना था…खैर जवानो! अब मुझे विदाई दो, पर याद रखना तुम्हें लाहौर से इधर नहीं रुकना है। अच्छा…' और हमारे लेफ्टिनेंट साहब हमें रोते-बिलखते छोड़ माँ की रक्षा में शहीद हो गए।"

आज हर जवान की निगाह में इच्छोगिल कांटे की तरह खटकती है। यह नहर नहीं भारत के वीरों की रणचंडी है जिसने हमारे जवानों के खून से खप्पर भरने की शायद बनते समय शपथ ली होगी।

भारत का एक सैनिक सूरमा
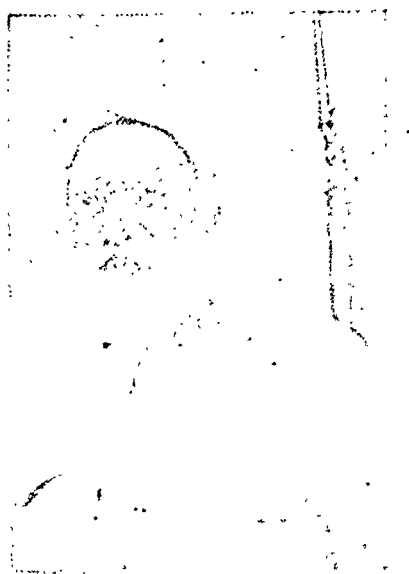
मुट्ठी भर सैनिक लिए डटे रहे

मेजर भास्कर राय

मंडियाला क्रासिंग पर जब पाकिस्तानियों ने टैंक सहित अपनी सारी शक्ति लगाकर आक्रमण किया तब मेजर भास्कर राय ने अपने छोटे से दस्ते की इस प्रकार व्यूह-रचना की कि दुश्मन दाँतों तले उँगली दबा गया और इतना निस्तेज हुआ जैसे उसे लकवा मार गया हो। उसी दिन मेजर भास्कर राय के युद्ध-कौशल और अदम्य साहस ने दुश्मन की कमर तोड़कर रख दी, १३ खैराती टैंक स्वाहा कर दिए और काफी बेकार कर दिए।

भारतीय सेनापति जनरल चौधरी ने बताया कि पाकिस्तान की योजना थी कि छम्ब के रास्ते अखनूर तक पहुँचकर जम्मू ले लिया जाए, किन्तु हमारे साहसी वीरों ने उसकी योजना को मिट्टी में मिला दिया। केवल अधिक हथियार ही युद्ध नहीं जीतते और न अचानक हमला आखिरी जीत दिला सकता है। बन्दूक महत्वपूर्ण नहीं होती, उसे चलाने वाला अधिक महत्वपूर्ण होता है। मेजर भास्कर राय इसके प्रतीक कहे जा सकते हैं। वह अत्याधिक दक्ष संचालक हैं और तुरन्त फैसला लेना जानते हैं। यही कारण था कि मुट्ठी भर सैनिकों से ही उन्होंने पाक मुजाहिदों का मुँह फेर दिया और सुरक्षा पर आँच नहीं आने दी।

राष्ट्रपति ने मेजर भास्कर राय को बहादुरी के कारनामों और देश की आन-बान निभाने की खातिर 'महावीर चक्र' प्रदान कर भारतीय जनता की ओर से राष्ट्रीय सम्मान दिया।

उच्च कोटि के सैनिक

से० ले० एन० एन० बैजल

अपनी जिम्मेदारी निभाना हर भारतीय सैनिक का धर्म है और देश की रक्षा में अपने जीवन की आहुति देना उसका प्रधान कर्त्तव्य है। इन्हीं गुणों के कारण भारतीय सेना का लोहा संसार मानता है। अपने इन्हीं गुणों के कारण भारतीय सेना ने संसार के रणक्षेत्रों में जहां भी वह गई अपने शौर्य की ऐसी धाक जमा दी कि संसार आश्चर्यचकित रह गया। बड़े से बड़े सेनापति ने भारत के वीर सैनिकों की वीरता की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उनकी कर्त्तव्य-परायणता को सराहा।

सैकिंड लैफ्टिनेंट बैजल इन्हीं गुणों की साकार प्रतिमा थे। वह आगरा के एक सभ्रांत परिवार के सपूत थे। उनके पिता डाक्टर ए० एन० बैजल आगरा के प्रसिद्ध डाक्टर हैं। श्री बैजल अप्रैल १९६३ में कमीशन लेकर सेना में भर्ती हुए। उनकी आयु उस समय केवल २३-२४ वर्ष थी।

सेना में भर्ती

देश की वेदी पर चढ़ने वाले ऐसे श्रद्धा-सुमनों की सुगन्धि कुछ और ही होती है। उनके क्रिया-कलाप अनोखे होते हैं, उनकी भावनाएं निराली होती हैं। शुरू से वह अपने रेजीमेंट में आकर्षण का केन्द्र बन गए थे। वह प्रत्येक त्याग करने को सदैव तत्पर रहते। रेजीमेंट का सुयश सदा फैलता रहे इसकी वह सदा कोशिश करते।

रण के आंगन में

१६ सितम्बर १९६५ की अर्ध-रात्रि। एक भारतीय चौकी पर दुश्मन भीषण गोलाबारी कर रहा था। [illegible] मद में चूर शत्रु समझता था कि चौकी आनन-फानन उसके हाथों में आ जाएगी, पर मदान्ध दुश्मन को पता न था कि चौकी की रक्षा प्राण से [illegible]

बाड़ाक रेजीमेंट को सौंपी जा चुकी है और इस रेजीमेंट के एक-एक सिपाही में अनुपम उत्साह फूंकने वाले से० ले० वैजल मौजूद हैं। जीवन-मृत्यु की लड़ाई लड़ने वाले सैनिक उनका शांत गंभीर चेहरा देखते, उनकी ओजस्वी वाणी सुनते, और महसूस करते कि उनका प्यारा दिलेर, जांवाज अफसर कंधे से कंधा भिड़ा कर मर-मिटने को तैयार है। वैजल एक मोर्चे से दूसरे मोर्चे पर जाते। कहीं कोई मोर्चा कमजोर न हो जाए, कहीं किसी मोर्चे पर दुश्मन न घुस आए।

आगे बढ़ने का हुक्म

गोलियों की वर्षा हो रही थी, पर उन्हें अपने प्राणों की पर्वाह न थी। चिन्ता थी तो बस यह कि चौकी की रक्षा हो। तभी एक गोला उनके निकट फटा। उसके टुकड़ों ने उनके शरीर को छेद डाला। वह खड़े न रह सके और गिर गए। प्राण-पखेरू निकलने तक वह आदेश देते रहे और जवानों का नाम ले-लेकर बढ़ावा देते रहे—"शाबाश! डटे रहो, देखो दुश्मन आने न पाए। खबरदार उसे भून दो! भून दो!!"

सैनिकों ने अपने प्यारे अफसर को गिरते देखा। उनकी प्यारी आवाज़ में उत्साह बरसते देखा। वैजल अब यहां नहीं ठहर सकते थे क्योंकि वीरों का स्वर्ग उनकी इंतजार में था। वह चले गए परन्तु उनके जवानों ने चौकी को हाथ से जाने न दिया। जाने कैसे देते, क्योंकि उनके कानों में उनके प्यारे लेफ्टिनेंट की आवाज अभी भी गूंज रही थी। उनका स्वर बोल रहा था।

बहादुर वैजल की मृत्यु पर रक्षा मंत्री श्री चह्वाण ने कहा—"वास्तव में यह एक सच्चे सैनिक का बलिदान है।" वैजल के कमांडेंट ने उनके पिता को लिखा—"से० ले० वैजल उच्च कोटि के सैनिक थे।" जनरल चौधरी ने संवेदना-पत्र में लिखा—"से० ले० वैजल ने मातृभूमि के लिये अपना जीवन दिया। सैनिक की यही मृत्यु महान होती है।"

हे वैजल कुल के दीपक! तुम अपने अमर बलिदान से देश-दीपक बन गए। तुमने देश की मशाल जलाए रखने के लिए अपने जीवन का चिराग बुझा दिया।

●

भारत-पाक युद्ध में हुए अमर शहीदों व उनके संबंधियों की आंशिक सूची

उत्तर प्रदेश

जिला देहरादून

शहीद का नाम	सम्बन्धियों के नाम	पता
कप्तान कृपालसिंह थापा		ग्राम : पण्डितवारी
कप्तान एच. सी. गुजराल		राजपुर रोड, देहरादून
ले. कर्नल एन. एन. खन्ना		२८, राजपुर रोड, देहरादून
मेजर प्रेमदास		मोहल्ला ईदगाह, देहरादून
ले. कर्नल एम. एल. चड्ढा		४३, नेशनल रोड, देहरादून
कप्तान टेक बहादुर गुरुंग		द्वारा मेजर एम. बी गुरुंग, ३६, जी. टी. सी. ।
स्क्वाड्रन लीडर अजीत कुमार रावले		८, हरिद्वार रोड, देहरादून
सूबेदार कुलबहादुर	श्रीमती रुद्रदेवी (पत्नी) पुत्र : १० वर्ष, ७ वर्ष, ३ वर्ष, १ माह	ग्राम : [illegible]
सूर्यप्रकाश मल	श्री तुलसीराम (पिता) २ बहनें	ग्राम : [illegible]
चन्द्र बहादुर छत्तारी	श्रीमती मानकुमारी देवी	ग्राम : [illegible]
ईश्वरसिंह अधिकारी	,, हरिकला देवी पुत्र : ७ वर्ष, २ वर्ष पुत्री : १ माह	ग्राम : [illegible]

शहीद का नाम	सम्बन्धियों के नाम	पता
सूल बहादुर थापा	श्रीमती सावित्रीदेवी (पत्नी) पुत्री : १ वर्ष, मां	ग्राम: नवादा नपवर पो. मोकमपुर
भीम बहादुर शाही	श्रीमती धानकुमारी, पुत्रियां : १३, १०, ४ वर्ष पुत्र : ११, ६ वर्ष	३६, जी. टी. सी.
जगत बहादुर गुरंग	सूबेदार कालूसिंह (पिता) मां, ३ भाई, १ बहन, २ भाई	ग्राम : जाननवाला
जगत बहादुर मल	श्रीमती मधुमाया (पत्नी)	३६, जी. टी. सी.
कटक बहादुर खांडके	,, तिलकुमारी (पत्नी) पुत्री : १½ वर्ष	३६, जी. टी. सी.
शिव सरन राना	,, सुमित्रा देवी (पत्नी)	ग्राम : डाकरा
जीत बहादुर थापा	,, मिने कुमारी (पत्नी)	३६, जी. टी. सी.
भाद्रा बहादुर छेतरी	श्रीमती रेवतीकुमारी (पत्नी) पुत्रियां : २ वर्ष, १ माह	३६, जी. टी. सी.
फतेह बहादुर अधिकारी	श्रीमती कृष्णाकुमारी (पत्नी) पुत्र : १३, १०, ६ वर्ष पुत्रियां : ५, १ वर्ष	३६, जी. टी. सी.
ईश्वर सिंह थापा	श्रीमती द्रोपदी देवी पुत्र : १ वर्ष	ग्राम : रायपुर
हरक बहादुर रन		३६, जी. टी. सी.
श्री बहादुर थापा	श्रीमती गंगा देवी पुत्र : ४ वर्ष, पुत्री : ६ वर्ष	ग्राम : अनारवाला
ईश्वर सिंह थापा	श्रीमती जयकला : १८ वर्ष वृद्धा मां, एक भाई	ग्राम : रायपुर

मुजफ्फरनगर

पूरनसिंह	श्री कश्मीर सिंह (पिता)	रोनी हाजीपुर

शहीद का नाम	सम्बन्धियों के नाम	पता
नरसिंह	श्रीमती गया देवी (पत्नी)	गढ़ी रामकौर डा० कांधला
राम भज	,, अंगूरी देवी (पत्नी)	गढ़ी रामकौर डा० कांधला
नवाब सिंह	,, सरोजबाला (पत्नी)	ग्राम, डा० लिसौन
प्रकाशचन्द्र	,, राजकौर (पत्नी)	ग्राम व डा० लिसौन
जयपाल सिंह	श्री हरिसिंह (पिता)	नया गांव डा० तपराना
हरफूल सिंह	श्रीमती प्रेमवती (पत्नी)	ग्राम : कसेरवा कलां, पो० : कसेरवा कलां
धर्मवीर	श्रीमती भगवती (पत्नी)	ग्राम व डा० : मलहुन्दी
नैपाल सिंह	श्रीमती मुन्नी देवी (पत्नी)	ग्राम व डा० पटैन
जयपाल सिंह	श्री उमराव सिंह (पिता)	ग्राम व डा० पानली

प्रतापगढ़

शहीद का नाम	सम्बन्धियों के नाम	पता
जगदीश प्रसाद तिवारी	श्री भगवतीप्रसाद तिवारी पिता श्रीमती राजमती (मां) पुत्र : विजयकुमार १० वर्ष, पुत्री : राजकुमारी ६ वर्ष	ग्राम : नीलापुर पो० : साहबगंज
मुरलीधर मौर्य	श्री भगवतप्रसाद मौर्य (पिता) श्रीमती दिलराजी देवी (मां) भाई : बंशी १७ वर्ष, रामनरेश १० वर्ष श्रीमती केसरा देवी १८ वर्ष (पत्नी)	ग्राम : शिवपुर [illegible] पो० : [illegible]

कानपुर

शहीद का नाम	सम्बन्धियों के नाम	पता
के.आई.के.गुप्ता	के. आई. सी. गुप्ता (पिता)	[illegible] गेट, ११८-बी. कानपुर

शहीद का नाम	सम्बन्धियों के नाम	पता
कैप्टेन मोहन	श्री नारायणसिंह	ग्राम : छौककी
शिव वहादुर सिंह	श्रीमती शांति देवी (पत्नी) पुत्र : ४ वर्ष, पुत्री १ वर्ष	ग्राम : तौधाकपुर
हेमराज सिंह	श्रीमती चम्पादेवी (पत्नी)	ग्राम : मंगता अकबरपुर
जगतपाल सिंह	„ वित्तनदेवी (पत्नी) पुत्र : ३ सप्ताह	ग्राम : विक्रमपुर अकबरपुर
राम भजन	श्री राजाराम (पिता)	ग्राम : हाथे पुवा
सुरेन्द्र प्रताप सिंह	श्रीमती धर्मवती (मां) युवा पत्नी	ग्राम : जैतपुर

वलिया

सर्वदेव उपाध्याय	श्रीमती राजेश्वरी देवी (पत्नी)	ग्राम : वारासरी, पो० : वंसदेई
रामेश्वरसिंह	श्रीमती रामपती देवी (माता)	ग्राम व पो० : कासीन्दर
चन्द्रदेवसिंह	श्रीमती कौशल्या देवी (पत्नी)	ग्राम व पो० मुरयारी
दयासागर तिवारी	श्रीमती कालवती देवी (पत्नी)	ग्राम : प्रसाद छपरा, डा० दूवे छपरा
रामवहादुर सिंह	श्रीमती सिंकलावती देवी (पत्नी)	ग्राम : टिकारी, पो० : रजौली
विमल पाँडे	श्रीमती रामावती देवी (पत्नी)	ग्राम व पो० : परसवार
रामअवध सिंह	श्रीमती दयावन्ती देवी (पत्नी)	निव्वू पो० : रसड़ा

वाराणसी

शिवचन्द्र पाण्डेय	श्री कल्पनाथ पाण्डेय	सरसौल, डा० छितौनी
शंकर सिंह	श्रीमती शान्ती देवी	गांव : पुआरी खुर्द, पो : पुआरी कलाँ

शहीद का नाम	सम्बन्धियों के नाम	पता
बुलंदशहर		
गजराजसिंह	श्री मंगलसिंह राजपूत (पिता)	बरौदा, डा० : धैर
सुखवीरसिंह	,, रघुवारसिंह (पिता)	ग्राम व पो० : सैदपुर
से०ले० जबरसिंह	श्री उमरावसिंह (पिता)	ग्राम : लखौई, डा० : सालनी
जयपालसिंह	श्रीमती चन्दर देवी (पत्नी)	डूगराजाट, पो० सालनी
भूपालसिंह	श्रीमती ज्ञानवती देवी (पत्नी)	ग्राम व पो० : मैनापुर
लटूरसिंह	श्रीमती श्यामकौर (पत्नी)	जाटों की मढ़िया पो० : दराल
रतीराम	श्री लखमीचन्द (पिता)	शेरपुर, पो० गुलावटी
समयसिंह	श्रीमती जगवीरी (पत्नी)	ग्राम व पोस्ट : भटौना
किशनसिंह	श्रीमती लहरकौर (माता)	दानकौर, पो० : मंगहर
शिवराम	श्री सुखवीरसिंह (भाई)	ग्राम व पो० : नारंगपुर
विजेन्द्रसिंह	श्रीमती अमरो (माता)	वीरपुरा, पो० : चोला
गजराजसिंह	श्रीमती राजवीरी देवी (पत्नी)	रौदा, पो० : धैर
मेघराजसिंह	श्रीमती प्रेमवती (पत्नी)	ग्राम व पो० : नरेनगपुर
शीशराम	श्रीमती करन्ती (पत्नी)	ग्राम व पो० : नरेनपुर
हरपालसिंह	श्रीमती कलावती (माता)	ग्राम पो०, शिवनगर
हरस्वरूप	श्रीमती धनवन्ती देवी (पत्नी)	देवटा, पो० : गुरुकुल सिकन्दराबाद
पनूसिंह	श्री तारीफसिंह (पिता)	जनेदपुर, पो० : दिनामपुर
दूरगल	श्रीमती जगवती	ग्राम व पो० : नरेनपुर [illegible]
चोखे सिंह	श्रीमती परमेश्वरीदेवी (पत्नी)	नन्दार, पो० : करौरा
जगदीशसिंह	श्रीमती गेंदादेवी (माता)	दिटाल, पो० : रईमपुर
तिलोकसिंह	श्रीमती सुमित्रा देवी (पत्नी)	[illegible], पो० : [illegible]

शहीद का नाम	सम्बन्धियों के नाम	पता
सर्जवीरसिंह	श्रीमती सावित्री देवी (पत्नी)	उखांड, पो० : डिबाई
सुखवीरसिंह	,, मूर्तिदेवी (पत्नी)	रशीदपुर, पो० : विशनपुर
श्योराजसिंह	श्री हीरासिंह (भाई)	मुरादगढ़, पो० : वालका
प्रह्लादसिंह	श्रीमती चन्दरकली (पत्नी)	मामऊ, पो० : शिकारपुर
फूलसिंह	,, महेन्दरी (पत्नी)	ओलेढा, पो० : गुलावठी
रामकरन	,, रामवती (पत्नी)	पाली, पो० : दादरी
वलवीरसिंह	,, कलावती (माता)	

मैनपुरी

महेश सिंह	श्रीमती राजवती (पत्नी)	ग्राम : छितरपुर
	पुत्र : महेन्द्रपाल ८ वर्ष, देवेन्द्रपाल	पो० : अंगोठा
	५ वर्ष पुत्री : हेमलता ३ वर्ष	
हीरा सिंह	श्रीमती शीलादेवी २५ वर्ष (पत्नी)	ग्राम : दौलतपुर
	श्री जगरामसिंह ६५ वर्ष (पिता)	पो० : कंकन
	श्रीमती दुलारी कुंवर ६२ वर्ष (माँ)	
औतार सिंह	,, धनदेवी (पत्नी)	महादेवा, पो० : नानामऊ
दयाराम	,, रामलखी (पत्नी)	रूपपुर पो० : मैनपुरी
	श्रीमती फूलवती (माँ) ५५ वर्ष	
	भाई : कृपालसिंह १९ वर्ष	
	,, जयपालसिंह १६ वर्ष	
	वहन : चन्दावती १२ वर्ष	
महावीर सिंह	श्रीमती अनक (पत्नी)	जोधपुर पो० : उदेसर
	श्री उवलसिंह (पिता) ५५ वर्ष	
	श्रीमती जलदेवी (माँ) ५० वर्ष	
	अजय वीर सिंह (भाई) १४ वर्ष	

शहीद का नाम	सम्बन्धियों के नाम	पता
राम सरन सिंह	श्रीमती सत्यवती (पत्नी) २२ वर्ष	ग्राम : लौंडपुर,
	श्री जदुनाथ सिंह (पिता) ६२ वर्ष	पो० : जोतदेवर
	श्रीमती राजरानी ५८ वर्ष (मां)	
	प्रह्लाद सिंह १५½ वर्ष (भाई)	
	प्रेमसिंह १६ वर्ष (भाई)	
	मुन्नी ११ वर्ष (बहन)	
गेंदा लाल	श्रीमती सूरजमुखी २० वर्ष (पत्नी)	ग्राम : नूरनपुर,
	,, ललिता देवी ६० वर्ष (दादी)	पो० : हुमायूंपुर
	बदनसिंह ३० वर्ष (भाई)	
	छोटासिंह १२ वर्ष (भाई)	
	श्रीमती विद्यावती २४ वर्ष (भाभी)	
	महारानी १८ वर्ष (बहन)	
	राजकुमारी १६ वर्ष (बहन)	
राजेन्द्रसिंह	श्रीमती मुन्नी देवी (पत्नी)	ग्राम : नसीरपुर
	श्री अजयपाल सिंह ४८ (पिता)	पो० : पचावर
	श्रीमती चांदवती ६४ वर्ष (दादी)	
	श्रीमती राजरानी ३८ वर्ष (मां)	
	देवेन्द्र सिंह ६ माह (भाई)	
[illegible]सिंह	श्रीमती जलदेवी २३ वर्ष (पत्नी)	ग्राम : [illegible],
	दुरबिन सिंह ८ वर्ष (भाई)	पो० : [illegible]
	रामवती ६ माह (पुत्री)	
रघुनाथसिंह	श्रीमती मुन्नी देवी २१ वर्ष (पत्नी)	ग्राम : [illegible],
	,, [illegible] कुंवर ४५ वर्ष (मां)	पो० : [illegible]

शहीद का नाम	सम्बन्धियों के नाम	पता
नाथु	श्रीमती द्रोपा २२ वर्ष (पत्नी)	ग्राम : बलरामपुर,
	श्री बच्चनसिंह ८५ वर्ष (पिता)	पो० : कुरावली
	श्रीमती जानकी देवी ७० वर्ष (मां)	
	प्रतिपालसिंह २ वर्ष (पुत्र)	
मुलायमसिंह	श्रीमती मौलश्री २२ वर्ष (पत्नी)	ग्राम : बलरामपुर,
	,, भुली ६० वर्ष (मां)	पो० : कुरावली
	सतीश १½ वर्ष (पुत्र)	